।। श्री चतुर्विंशति जिनाय नमः।।

# {deX AmaVr, Mmbrgm à{VHk$_U g§Jkh

**रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज**



कृति – **{deX AmaVr, Mmbrgm, à{VHk$_U g§Jkh**

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
**आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण – **प्रथम – 2010**

प्रतियाँ – 1000

संकलन – **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोग – **क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज**

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, आस्थादीदी 9660996425, सपना दीदी9829127533**

संयोजन – **ब्र. सोनू , किरण, आरती दीदी**

प्राप्ति स्थल –
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
नेहरु बाजार, जयपुर (राज.) मो.: 9414812008
फोन : 0141-2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.) फोन : 07581-274244
3. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

पुनः प्रकाशन हेतु – 31/– रु.

**-: अर्थ सौजन्य :-**

**श्रीमती निर्मला देवी, लल्ली देवी, रेखा देवी जैन**
**ई-, वल्लभ नगर, कोटा (राज.)**

**श्री पदमचन्द सौभाग्यमल जैन (अजमेरी वाले)**
**मालपुरा, जिला-टोंक (राज.)**

**स्व. श्री सन्तकुमार जैन की पुण्य स्मृति में गोपाललाल, चन्द्रप्रकाश, महेन्द्रकुमार, जयकुमार, जितेन्द्रकुमार, नीरजकुमार एवं नैनवाँ वाला परिवार**
**2-एफ-2, [illegible] विहार योजना, कोटा-324005**

_wDH$ : amOy J«m{\$H$ AmQ>© (g§Xrn em h), जयपुर • फोन: 2313339, मो: 9829050791

कृति – **{deX AmaVr, Mmbrgm, à{VHk«$_U g§Jk«h**

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
**आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण – **प्रथम – 2010**

प्रतियाँ – **1000**

संकलन – **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोग – **क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज**
**ब्र. लालजी भैया, सुखनन्दन भैया**

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी**

संयोजन – **ब्र. सोनू (9829127533), किरण, आरती दीदी**

प्राप्ति स्थल –
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
नेहरु बाजार, जयपुर (राज.) मो.: 9414812008
फोन : 0141-2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.) फोन : 07581-274244
3. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

पुनः प्रकाशन हेतु – 31/- रु.

---

**-: अर्थ सौजन्य :-**

1. **माणकचन्द सौगानी, बूँदी**
2. **नेमि महिला मण्डल, बूँदी**
3. **माणकचंदजी बाकलीवाल, बूँदी**
4. **श्रीमती कमलाबाई कासलीवाल, बूँदी**
5. **सोहनलालजी रांवका, बूँदी**
6. **महेन्द्रकुमारजी कासलीवाल, बूँदी**
7. **विरदीचंदजी छाबड़ा (रानीपुरा वाले), बूँदी**
8. **कपूरचंदजी सेठिया, बूँदी**
9. **धनकुमारजी वकील साहब, बूँदी**
10. **महेन्द्रजी जैन (नैनवां वाले), बूँदी**
11. **आशा कासलीवाल (बांसी वाले), बूँदी**

---

_wDH$ : **amOy Jk«m{\$H$ AmQ>© (g§Xrn emh),** जयपुर ● फोन : 2313339, मो: 9829050791

# {df` gyMr


| | |
|---|---|
| णमोकार मंत्र की आरती | 4 |
| पंच परमेष्ठी की आरती | 5 |
| नवदेवताओं की आरती | 6 |
| सहस्रनाम की आरती | 6 |
| समवशरण की आरती | 7 |
| चौबीस जिन की आरती | 8 |
| श्री 1008 आदिनाथ भगवान की आरती | 9 |
| श्री 1008 अजितनाथ भगवान की आरती | 10 |
| श्री 1008 संभवनाथ भगवान की आरती | 10 |
| श्री 1008 अभिनंदन भगवान की आरती | 11 |
| श्री 1008 सुमतिनाथ भगवान की आरती | 12 |
| श्री 1008 पद्मप्रभ भगवान की आरती | 13 |
| श्री 1008 सुपार्श्वनाथ भगवान की आरती | 14 |
| श्री 1008 चन्द्रप्रभु भगवान की आरती | 15 |
| श्री 1008 पुष्पदंत भगवान की आरती | 15 |
| श्री 1008 शीतलनाथ भगवान की आरती | 16 |
| श्री 1008 श्रेयांसनाथ भगवान की आरती | 17 |
| श्री 1008 वासुपूज्य जिन की आरती | 18 |
| श्री 1008 विमलनाथ भगवान की आरती | 19 |
| श्री 1008 अनन्तनाथ भगवान की आरती | 19 |
| श्री 1008 धर्मनाथ भगवान की आरती | 20 |
| श्री 1008 शांतिनाथ भगवान की आरती | 21 |
| श्री 1008 कुन्थुनाथ भगवान की आरती | 22 |
| श्री 1008 अरहनाथ भगवान की आरती | 22 |
| श्री 1008 मल्लिनाथ भगवान की आरती | 23 |
| श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान की आरती | 24 |
| श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ की आरती | 24 |
| श्री 1008 नमिनाथ भगवान की आरती | 25 |
| श्री 1008 नेमिनाथ भगवान की आरती | 26 |
| श्री 1008 नेमिनाथ भगवान की आरती | 27 |
| श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान की आरती | 27 |
| श्री 1008 महावीर भगवान की आरती | 28 |
| बाहुबली स्वामी की आरती | 29 |
| जिनवर की आरती | 29 |
| निर्वाण क्षेत्र की आरती | 30 |
| पञ्चमेरु की आरती | 31 |
| नन्दीश्वर की आरती | 32 |
| आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती | 33 |
| णमोकार चालीसा | 34 |
| आदिनाथ चालीसा | 36 |
| सम्भवनाथ चालीसा | 38 |
| सुमतिनाथ चालीसा | 40 |
| पदमप्रभु चालीसा | 42 |
| चन्द्रप्रभु चालीसा | 44 |
| पुष्पदन्त चालीसा | 46 |
| शीतलनाथ चालीसा | 48 |
| वासुपूज्य चालीसा | 50 |
| शांतिनाथ चालीसा | 52 |
| मल्लिनाथ चालीसा | 54 |
| मुनिसुव्रतनाथ चालीसा | 56 |
| नेमीनाथ चालीसा | 58 |
| पार्श्वनाथ चालीसा | 60 |
| महावीर चालीसा | 63 |
| सहस्रनाम-चालीसा | 65 |
| महामृत्युञ्जय चालीसा | 67 |
| श्रावक प्रतिक्रमण | 69 |
| सामायिक करने की प्रारम्भिक विधि | 75 |
| सामायिक पाठ | 76 |
| आचार्य वन्दना- लघु सिद्ध भक्ति | 81 |
| लघु श्रुत भक्ति | 82 |
| लघु आचार्य भक्ति | 83 |
| गुरु भक्ति | 84 |
| क्षमा वंदना | 85 |
| दोषों की आलोचना | 86 |
| दर्शन पाठ | 86 |
| चौबीस तीर्थंकर स्तुति | 87 |
| गुरुवर की आरती | 88 |




# णमोकार मंत्र की आरती

*(तर्ज : आज मंगलवार है...)*

**महामंत्र नवकार है, मुक्ति का यह द्वार है।**
**ध्यान जाप आरति कर प्राणी, होता भव से पार है।।**
**होता भव से पार है।**

**महामंत्र के पञ्च पदों में, परमेष्ठी को ध्याया है।**
**अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु गुण गाया है।।**
**महामंत्र नवकार.....।।1।।**

**मूलमंत्र अपराजित आदि, मंत्रराज कई नाम रहे।**
**श्रेष्ठ अनादिऽनिधन मंत्र से, और अनेकों नाम कहे।।**
**महामंत्र नवकार.....।।2।।**

**महामंत्र को जपने वाले, अतिशय पुण्य कमाते हैं।**
**सुख शांति आनन्द प्राप्त कर, निज सौभाग्य जगाते हैं।।**
**महामंत्र नवकार.....।।3।।**

**काल अनादि से जीवों ने, सत् श्रद्धान जगाया है।**
**महामंत्र का ध्यान जापकर, स्वर्ग मोक्ष पद पाया है।।**
**महामंत्र नवकार.....।।4।।**

**सुनकर नाग नागिनी जिसको, पद्मावति धरणेन्द्र भये।**
**अन्जन हुए निरन्जन पढ़कर, अन्त समय में मोक्ष गये।।**
**महामंत्र नवकार.....।।5।।**

**प्रबल पुण्य के उदय से हमने, महामंत्र को पाया है।**
**अतिशय पुण्य कमाने का शुभ, हमने भाग्य जगाया है।।**
**महामंत्र नवकार.....।।6।।**

**महामंत्र का ध्यान जाप कर, आरति करने आए हैं।**
**'विशद' भाव का दीप जलाकर, आज यहाँ पर लाए हैं।**
**महामंत्र नवकार.....।।7।।**

# पंच परमेष्ठी की आरती

*(तर्ज–पत्थर के पारस प्यारे...)*

परमेष्ठी हैं पंच हमारे, सारे जग से न्यारे।
सबकी उतारे हम आरती, ओ भैया !
हम सब उतारें मंगल आरती....
कर्म घातिया नाश किये हैं, केवल ज्ञान जगाए।
दोष अठारह रहे न कोई, प्रभु अर्हत् कहलाए।।
प्रभु के द्वारे हम आये, भक्ति से शीश झुकाए।।
हम सब उतारें मंगल आरती....
अष्ट कर्म का नाश किया है, अष्ट गुणों को पाए।
अजर–अमर अक्षय पद धारी, सिद्ध प्रभु कहलाए।।
शिवपुर को जाने वाले, मुक्ति को पाने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....
पंचाचार का पालन करते, शिष्यों से करवाते।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य कहलाते।।
भक्ति हम उनकी करते, चरणों में मस्तक धरते।।
हम सब उतारें मंगल आरती....
रत्नत्रय के धारी मुनिवर, पढ़ते और पढ़ाते।
मोक्ष मार्ग पर उपाध्यायजी, नित प्रति कदम बढ़ाते।।
मूल गुण पाने वाले, ज्ञान बरसाने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....
विषय वासना हीन रहे जो, ज्ञान ध्यान तप करते।
'विशद' साधना करने वाले, कर्म कालिमा हरते।।
कर्मों को हरने वाले, मुक्ति को वरने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....



# नवदेवताओं की आरती

*(तर्ज–इह विधि मंगल....)*

नव कोटि से आरती कीजे, नव देवों की शरण गहीजे।
प्रथम आरती अर्हत्धारी, कर्म घातिया नाशनकारी। नवकोटि....
द्वितीय आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवें भगवंता। नवकोटि....
तृतीय आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की। नवकोटि....
चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की। नवकोटि....
पाँचवीं आरती मुनिसंघ की, बाह्याभ्यंतर रहित संग की। नवकोटि....
छठवीं आरती जैन धरम की, 'विशद' अहिंसा मई परम की। नवकोटि....
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की। नवकोटि....
आठवीं आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों की मंगलकारी। नवकोटि....
नौवी आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की। नवकोटि....
आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशीष लीजे। नवकोटि....

# सहस्रनाम की आरती

आज करें हम सहस्रनाम की, आरती मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए घृत के, जिनवर के दरबार.. हो जिनवर ...
हम सब उतारे मंगल आरती..
सहस्रनाम के धारी जिनवर, सहस्र गुणों को पाते।
एक हजार आठ गुणधारी, तीर्थंकर कहलाते।। हो जिनवर... ।।1 ।।
श्री जिनेन्द्र के तन में नौ सौ, व्यंजन विस्मयकारी।
सुगुण एक सौ आठ जिनेश्वर, पाते अतिशयकारी।। हो जिनवर... ।।2 ।।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिन इसके अधिकारी।
अनन्त चतुष्टय के धारी जिन, होते मंगलकारी।। हो जिनवर... ।।3 ।।

सार्थक नाम प्राप्त करते हैं, तीर्थंकर अविकारी।
अनुक्रम से बन जाते हैं जो, शिवपद के अधिकारी।। हो जिनवर... ।।4।।
सहस्रनाम की पूजा अर्चा, करने को हम आए।
'विशद' जगे सौभाग्य हमारे, चरण-शरण को पाए।। हो जिनवर... ।।5।।

## समवशरण की आरती

आज करें हम समवशरण की, आरति मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, प्रभुवर के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, केवलज्ञान जगाया।
अनन्त चतुष्टय पाए तुमने, सुख अनन्त को पाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।
इन्द्र की आज्ञा पाकर भाई, धन कुबेर यहाँ आया।
स्वर्ण और रत्नों से सज्जित, समवशरण बनवाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।
स्वर्ग से आकर इन्द्रों ने शुभ, प्रातिहार्य प्रगटाए।
प्रभु की भक्ति अर्चा करके, सादर शीश झुकाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।
जिनबिम्बों से सज्जित अनुपम, अष्ट भूमियाँ जानो।
श्रेष्ठ सभाएँ सुर नर मुनि की, विस्मयकारी मानो।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।
ॐकारमय दिव्य देशना, अतिशय प्रभु सुनाए।
'विशद' पुण्य का योग मिला यह, प्रभु के दर्शन पाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।



## चौबीस जिन की आरती

*(तर्ज - मांई रि मांई ...)*

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।
ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए।
विशद आरती ...
पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।
विशद आरती ...
श्रेय नाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु कहलाए, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए।
विशद आरती ...
शांति कन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन-तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोहे मल्ल को, क्षण में मार भगाए।
विशद आरती ...
मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए।
विशद आरती ...

# श्री 1008 आदिनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज : आज करें हम .....)*

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।

जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।1।।

षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर-नारी सब नाचे गाये, जय-जयकार लगाए।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।2।।

रत्नत्रय पाकर हे स्वामी, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।3।।

यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवे जब तक, शरण आपकी आवें।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।4।।

अतिशय पुण्यवान प्राणी ही, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।5।।

* * * *



# श्री 1008 अजितनाथ भगवान की आरती

ॐ जय अजितनाथ स्वामी, प्रभु अजितनाथ स्वामी।
आरति करके हम भी, बने मोक्षगामी।। ॐ जय...

माघ सुदी दशमी को, तुमने जन्म लिया। प्रभु तुमने जन्म लिया।
मात विजयसेना जितशत्रु-2, को भी धन्य किया, ॐ जय...

नगर अयोध्या जन्मे, गज लक्षणधारी, स्वामी- गज लक्षणधारी।
आयु लाख बहत्तर पूरब-2, पाये मनहारी। ॐ जय...

साढ़े चार सौ धनुष प्रभु का, तन ऊँचा गाया- स्वामी- ऊँचा तन गाया
माघ सुदी दशमी को प्रभु ने-2, उत्तम तप पाया। ॐ जय...

पौष सुदी दशमी को, विशद ज्ञान पाए, प्रभु-विशद ज्ञान पाए
इन्द्र सभी आकर के-2, चरणों सिर नाए- ॐ जय...

चैत सुदी पाँचें को, शिव पदवी पाए-प्रभु शिव पदवी पाए।
गिरि सम्मेद शिखर को-2, यह जग सिर नाए- ॐ जय...

# श्री 1008 संभवनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज : आज मंगलवार है...)*

संभवनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं।
तीन लोक में मेरे स्वामी, अतिशय हुए महान् हैं।।

1. श्रावस्ती में जन्म लिए प्रभु, अतिशय मंगल छाया है-2
   पिता जितारी मात सुसेना, ने सौभाग्य जगाया है-2 संभवनाथ....
2. साठ लाख पूरब की आयु, श्री जिनेन्द्र ने पाई जी-2
   धनुष चार सौ मेरे प्रभु की, रही श्रेष्ठ ऊँचाई जी-2 संभवनाथ...

3. तप्त स्वर्ण सम रंग प्रभु का, छियालीस गुण के धारी हैं-2
गंधकुटी में दिव्य कमल पर, जिन रहते अविकारी हैं-2 संभवनाथ...

4. पञ्चकल्याणक पाने वाले, मुक्ति पथ के नेता हैं-2
अनन्त चतुष्टय के धारी प्रभु, अनुपम कर्म विजेता हैं-2 संभवनाथ...

5. आरती करने हेतु भगवन्, दीप जलाकर लाए हैं-
सुख-शांति सौभाग्य 'विशद' हो, तव चरणों में आए हैं-2 संभवनाथ...

## श्री 1008 अभिनंदन भगवान की आरती

प्रभु अभिनंदन की करते हम, आरति मंगलकार।
विशद भाव से आरति लेकर, आये प्रभु के द्वार।।
हो प्रभु जी हम सब उतारे, मंगल आरती...

1. नगर अयोध्या जन्म लिए तब, हर्षे सब नर-नारी।
पन्द्रह माह पूर्व इन्द्रों ने, रत्न वृष्टि की भारी।। हो प्रभु....

2. माँ सिद्धार्था संवर के गृह, हुए आप अवतारी।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराए, इन्द्र सभी शुभकारी।। हो प्रभु....

3. साढ़े तीन सौ धनुष प्रभु के, तन की है ऊँचाई।
लाख पचास पूर्व की आयु, श्री जिनवर ने पाई।। हो प्रभु....

4. माघ सुदी बारस को प्रभु जी, उत्तम तप अपनाए।
पौष सुदी चौदस को अनुपम, केवलज्ञान जगाए।। हो प्रभु....

5. छठी शुक्ल वैशाख मोक्ष पद, गिरि सम्मेद से पाए।
'विशद' गुणों को पाने प्रभु के, आरति करने आए।। हो प्रभु....

* * *



## श्री 1008 सुमतिनाथ भगवान की आरती

सुमतिनाथ की करते हैं हम, आरती मंगलकार।
भक्ति भाव से वन्दन करते-2, चरणों बारम्बार।।
कि आरती करते बारम्बार-2

1. मात मंगला के उर आये, मेघ प्रभु के लाल कहाए।
जन्म अयोध्या नगरी पाए, पद में चकवा चिह्न बताए।।
चार लाख पूरब की आयु, पाये अतिशयकार
कि आरती करते बारम्बार-2

2. अष्ट कर्म को प्रभु नशाए, क्षण में केवलज्ञान जगाए।
अनन्त चतुष्टय प्रभु ने पाए, छियालिस मूल गुणों को पाए।।
शत इन्द्रों ने आकर बोला, प्रभु का जय-जयकार।
कि आरती करते बारम्बार-2

3. दिव्य देशना प्रभु सुनाये, भव्य जीव सद्दर्शन पाए।
सम्यक् चरित्र प्राणी पाये, सम्यक् तप में चित्त लगाए।।
तीन लोकवर्ती जीवों का, किया बड़ा उपकार।
कि आरती करते बारम्बार-2

4. प्रभु की भक्ति करने आये, घृत कपूर के दीप जलाये।
'विशद' भाव से प्रभु गुण गाये, तीन योग से शीश झुकाये।।
चरण शरण में हम भी आये, कर दो प्रभु उद्धार।
कि आरती करते बारम्बार-2

* * *

# श्री 1008 पद्मप्रभ भगवान की आरती

*(तर्ज- धन्य-धन्य आज घड़ी...)*

धन्य-धन्य आज घड़ी कैसी मंगलकार है।
पद्मप्रभ की आरती करके, होती जय-जयकार है।। टेक।।

भक्ति से भक्त सभी, नृत्यगान कर रहे।
दौलत से पुण्य की झोलियाँ जो भर रहे।
जय-जय की चारों ओर गूँजती झंकार है।
जिन चरणों की आरती...।।1।।

गीत वाद्य की ध्वनि से गूँजे आकाश है।
चरणों में आए जो बन जाता दास है।
जागे सौभाग्य परम, होता उद्धार है।
जिन चरणों की आरती...।।2।।

जिनवर के चरणों में करते जो आरती।
करती कृपा उन पर पूजनीय भारती।
महिमा का जिनवर की, दिखता न पार है।
जिन चरणों की आरती...।।3।।

जिनवर की वाणी में जीवन का सार है।
महिमा जिनेन्द्र की जग में अपार है।
जिनवर की भक्ति से, आती बहार है।
जिन चरणों की आरती...।।4।।

अनुपम खुशी आज मंदिर में छाई है।
करके 'विशद' भक्ति जनता हर्षाई है।
भक्ति का चारों ओर, दिखता संचार है।
जिन चरणों की आरती...।।5।।



# श्री 1008 सुपार्श्वनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज- आज करें हम.....)*

जिन सुपार्श्व की करते हैं शुभ, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए हैं हम, जिनवर के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।1।।

स्वर्ग लोक से इन्द्र अनेकों, नगर बनारस आए।
रत्न वृष्टि करके हर्षित हो, नगरी खूब सजाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।2।।

पृथ्वीमति माता की कुक्षि, को प्रभु धन्य बनाए।
पिता प्रतिष्ठित सुनकर के तब, मन ही मन हरषाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।3।।

षष्ठी शुक्ला भादो को प्रभु, स्वर्ग से चयकर आये।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को प्रभु का, जन्म कल्याण मनाये।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।4।।

दो सौ धनुष की रही ऊँचाई, लक्षण स्वस्तिक जानो।
बीस लाख पूरब की आयु, जिन सुपार्श्व की मानो।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।5।।

ज्येष्ठ सुदी बारस को प्रभु ने, उत्तम तप को पाया।
षष्ठी कृष्ण माह फाल्गुन को, केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।6।।

करें आरती 'विशद' भाव से, वह सौभाग्य जगाएँ।
सुख-शान्ति आनन्द प्राप्त कर, अन्तिम शिवपद पाएँ।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।7।।

# श्री 1008 चन्द्रप्रभु भगवान की आरती

ॐ (जय) चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथगामी।। ॐ जय.....
महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।। ॐ जय.....
आतमज्ञान जगाए, सद् दृष्टि धारी।
मोह महामदनाशी, स्व-पर उपकारी।। ॐ जय.....
पंच महाव्रत प्रभुजी, तुमने जो धारे।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।। ॐ जय.....
इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया।
केवलज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया।। ॐ जय.....
तुमको ध्याने वाला, सुख-शांति पावे।
'विशद' आरती करके मन में हर्षावे।। ॐ जय.....
प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।। ॐ जय.....
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो।
भक्त खड़े चरणों में, सारे कष्ट हरो।। ॐ जय.....

# श्री 1008 पुष्पदंत भगवान की आरती

*(तर्ज : नर तन रतन अमोल इसे....)*

रत्न जड़ित मंगलमय पावन, दीप जलाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन की, आरती गाओ जी।। रत्न जड़ित....

1. जन्म लिया काकन्दी नगरी, आनन्द मंगल छाया जी।
इन्द्र ने पाण्डुक शिला के ऊपर, मंगल नह्वन कराया जी।
जिनवर की आरति करने, ओ SSS थाल सजाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन....



2. उल्कापात देखकर प्रभु के, मन वैराग्य समाया जी।
पञ्चमुष्ठि से केशलुंच कर, महाव्रतों को पाया जी।
आतम की सिद्धि करने, ओ SSS ध्यान लगाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन....
3. कार्तिक शुक्ला दोज तिथि को, केवलज्ञान जगाया जी।
पुष्पक वन में शत् इन्द्रों ने, समवशरण बनवाया जी।
पुष्पदंत की दिव्य ध्वनि को, ओ SSS सब मिल पाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन....
4. भादो शुक्ल अष्टमी को प्रभु, सारे कर्म नशाए जी।
सिद्ध शिला पर जाने वाले, मोक्ष लक्ष्मी पाए जी।
पुष्पदंत के पद में मिलकर, ओ SSS शीश झुकाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन....
5. जिस पदवी को प्रभु ने पाया, हमको भी अब पाना है।
ज्ञान ध्यान तप के द्वारा अब,केवलज्ञान जगाना है।
सर्व कर्म के नाश हेतु तुम, ओ SSS जिन गुण गाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन....

# श्री 1008 शीतलनाथ भगवान की आरती

ॐ जय शीतल नाथ प्रभो ! स्वामी शीतल नाथ प्रभो !
तुम शिवपुर के वासी, परमानन्द विभो...ॐ...।
माहिलपुर में जन्में, दृढ़रथ के प्यारे-स्वामी-2
मात सुनन्दा की कुक्षी से, जिनवर अवतारे।।...ॐ...।।1।।
पाण्डुक शिला के ऊपर, इन्द्रों ने भारी-स्वामी-2
क्षीर नीर से न्हवन कराया, अति विस्मयकारी।।...ॐ...।।2।।
कल्पवृक्ष तव पद में लक्षण, इन्द्रों ने देखा-स्वामी-2
शीतलनाथ नाम देकर के, जय जयकार किया ।।...ॐ...।।3।।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, संयम को धारा-स्वामी-2
अम्बर तजकर हुए दिगम्बर, आतम ध्यान किया ।।...ॐ...।।4।।

कर्म घातिया नाशे तुमने, 'विशद' ज्ञान पाया-स्वामी-2
ॐकार मय दिव्य देशना, दे उपकार किया ।।...ॐ...।।5।।
दिव्य ध्यान के द्वारा तुमने, सर्व कर्म नाशे-स्वामी-2
मुक्ति वधु को पाकर, शिवपुर वास किया ।।...ॐ...।।6।।
दर्श आपका करके, सम्यक् दर्श जगे-स्वामी-2
सुख शांति सौभाग्य पुण्य से, प्राणी प्राप्त करें ।।...ॐ...।।7।।

# श्री 1008 श्रेयांसनाथ भगवान की आरती

ॐ जय श्रेयांस प्रभो, स्वामी जय श्रेयांस प्रभो।
भक्त आरती करने, आए यहाँ विभो।। ॐ जय.....
विमलसेन के सुत हो, विमला के प्यारे।
सिंहपुरी में जन्मे, गेण्डा चिह्न धारे।। ॐ जय.....।।1।।
लख चौरासी पूरब, आयु प्रभु पाए।
अस्सी धनुष ऊँचाई, तन की कहलाए।। ॐ जय.....।।2।।
गृह में रहकर प्रभु ने, राज्य सुपद पाया।
हृदय जगा वैराग्य प्रभु को, वह भी न भाया।। ॐ जय.....।।3।।
राज्य पाठ सब त्यागा, परिजन को छोड़ा।
विषय भोग से प्रभु ने, भी नाता तोड़ा।। ॐ जय.....।।4।।
केश लोंचकर प्रभु ने, शुभ दीक्षा धारी।
पञ्च महाव्रत धारे, होके अविकारी।। ॐ जय.....।।5।।
तीन योग से प्रभु ने, आतम को ध्याया।
कर्म घातिया नाशे, 'विशद' ज्ञान पाया।। ॐ जय.....।।6।।
हम सेवक तुम स्वामी, कृपा करो दाता।
हो समृद्धि प्रभु जी, पाएँ सुख साता।। ॐ जय.....।।7।।



# श्री 1008 वासुपूज्य जिन की आरती

*(तर्ज:- दूल्हे का सेहरा.....)*

वसुपूज्य सुत वासुपूज्य को, करूँ नमन्-करूँ नमन्।
वासुपूज्य जिन के चरणों, शत् शत् वन्दन।।टेक।।
हे प्रभो ! तव चरणों में, हम भाव से आये।
मंगलमय शुभ दीप जलाकर, आरति को लाये।
तुमने कर्म घातिया जिनवर, नाश किए।
अपने निज अन्तर में, ज्ञान प्रकाश किए।
शीष झुकाकर चरणों में हम, करें नमन्-करें नमन।
वासुपूज्य जिन के चरणों, शत् शत् वन्दन।।1।।
हे प्रभो ! तुम सारे जग का, करते हो कल्याण।
अत: आपके चरणों का हम, करते हैं गुणगान।।
शत् इन्द्रों ने पूजा की, तव चरणों में आकर ।
नृत्यगान कर भक्ति की, जिन गुण गा कर।
तव पद पाने को हम करते हैं अर्चन-हैं अर्चन ।
वासुपूज्य जिन के चरणों, शत् शत् वन्दन।।2।।
हे प्रभो ! जनम जनम का, तुमसे है नाता।
सब जीवों के तुमही, जग में हो त्राता।।
हृदय कमल में तुमको प्रभु सजाते हैं।
'विशद' भाव से चरणों ध्यान लगाते हैं।।
मोक्षमार्ग पर हम भी तो कर सकें गमन-सकें गमन।
वासुपूज्य जिन के चरणों, शत् शत् वन्दन।।टेक।।

# श्री 1008 विमलनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज- ॐ जय जगदीश हरे...)*

ॐ जय विमलनाथ स्वामी, प्रभु विमलनाथ स्वामी।
विशद आरती करके, बने मोक्ष गामी।। ॐ जय.....
नगर कम्पिला जन्मे, सुअर चिह्न धारी- स्वामी...
साठ लाख पूरब की आयु, पाए त्रिपुरारी।। ॐ जय.....।।1।।
सुव्रत वर्मा के सुत हो तुम, माँ श्यामा थारी- स्वामी...
साठ धनुष ऊँचा तन प्रभु का, मनहर था भारी।। ॐ जय.....।।2।।
ज्येष्ठ वदी दशमी को, गर्भ में प्रभु आए- स्वामी...
पन्द्रह माह पूर्व से धनपति, रत्न भी बरसाए।। ॐ जय.....।।3।।
माघ शुक्ल की चौथ को, प्रभु ने जन्म लिया- स्वामी...
इन्द्रों ने मेरु पर जाके, शुभ अभिषेक किया।। ॐ जय.....।।4।।
माघ शुक्ल की चौथ प्रभु ने, तप धारण कीन्हा। - स्वामी...
पञ्च महाव्रत धारे, केशलुंच कीन्हा।। ॐ जय.....।।5।।
माघ सुदी षष्ठी को, 'विशद' ज्ञान पाया- स्वामी...
समवशरण देवों ने, आकर बनवाया।। ॐ जय.....।।6।।
षष्ठी कृष्ण आषाढ़ माह की, गिरि सम्मेद गये- स्वामी...
'विशद' ध्यान के द्वारा प्रभु जी, सारे कर्म क्षये।। ॐ जय.....।।7।।

# श्री 1008 अनन्तनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज- हे राजाराम थारी आरती उतारूँ)*

श्री अनन्तनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारे थारी, मूरत निहारें।। टेक
प्रभु कर दो विशद उद्धार, आज थारी आरती उतारे....



सुरजा माता के सुत प्यारे, हरीषेण के राजदुलारे।
जन्मे अयोध्या धाम, आज थारी आरती उतारें...।।1।।

पचास लाख पूरब की जानो, श्री जिनेन्द्र की आयु मानो।
सेही चिह्न पहिचान, आज थारी आरती उतारें...।।2।।

पचास धनुष ऊँचाई पाए, स्वर्ण रंग तन का प्रभु पाए।
'विशद' ज्ञान के ताज, आज थारी आरती उतारें...।।3।।

कार्तिक वदी एकम को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।
ज्येष्ठ वदी द्वादशी जन्म, आज थारी आरती उतारें...।।4।।

जेठ वदी द्वादशी दीक्षा पाए, चैत अमावस ज्ञान जगाए।
चैत अमावस मोक्ष, आज थारी आरती उतारें...।।5।।

# श्री 1008 धर्मनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज- जीवन है पानी की बूँद)*

धर्मनाथ के दर पे शुभ, दीप जलाए रे।
जिनवर हो- जिनवर, सब आरती गाए रे।। टेक
मात सुव्रता के जाये, पिता भानु नृप कहलाए।
रत्नपुरी में जन्म लिया, उस धरती को धन्य किया।।
वज्र चिह्न जिनवर की- हो - हो- पहिचान बताए रे।
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे।।1।।
बैशाख सुदी आठे जानो, गर्भ में प्रभु आये मानो।
माघ सुदी तेरस आई, जन्म लिया प्रभु ने भाई।
दस लाख पूर्व की आयु, हो-हो जिनवर जी पाए रे।
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे।।2।।
धनुष पैतालिस ऊँचाई, जिनवर के तन की गाई।
माघ सुदी तेरस भाई, प्रभु जी ने दीक्षा पाई।

समवशरण आकर के, हो-हो शुभ देव बनाए रे
जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए रे।।3।।
पौष पूर्णिमा दिन आया, विशद ज्ञान प्रभु ने पाया।
अनन्त चतुष्टय प्रकटाए, देव इन्द्र सब सिर नाए।
सम्मेद शिखर पे जाके, हो-हो प्रभु ध्यान लगाए रे।
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे।।4।।
ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ अहा, मंगलमय दिन श्रेष्ठ कहा।
जिनवर ने शिवपद पाया, मुक्ति वधू को अपनाया।
जिन भक्ति से हमको, हो-हो शिव पद मिल जाए रे।
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाए रे।।5।।

## श्री 1008 शांतिनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज - मारी मां जिनवाणी ...)*

म्हारे शांति जिनवर, थारी तो जय जयकार।
हो ... थारे हम द्वारे आए, करने को आरती लाए ।।
दीपक ले मंगलकार .... थारी तो .... ।।1।।
मन वच तन तुमको ध्याऊँ, भावों से प्रभु गुण गाऊँ ।
कर दो मेरा उद्धार ... थारी ... ।।2।।
सुर नर गुण थारे गाते, भक्ति से शीश झुकाते ।
अर्चा करें मनहार ... थारी तो ... ।।3।।
शांति के तुम हो दाता, जग के हो भाग्य विधाता।
महिमा है अपरम्पार ... थारी तो ... ।।4।।
महिमा जिन की जो गाते, अक्षय कारी हो जाते।
होते 'विशद' भव पार ... थारी तो ... ।।5।।



## श्री 1008 कुन्थुनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज- शांति अपरम्पार है....)*

कुन्थुनाथ भगवान हैं, जग में हुए महान् हैं।
विशद योग से आरति करके, करते हम यशगान हैं।। टेक
राजा शूरप्रभ श्री मति के, प्रभु जी लाल कहाए जी।
नगर हस्तिनापुर में जन्मे, अतिशय मंगल छाए जी।।1।।
पैंतिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण सा तन प्रभु पाए जी।
बकरा चिह्न दाहिने पग में, इन्द्र श्रेष्ठ बतलाए जी।।2।।
श्रावण कृष्ण दशे को स्वामी, गर्भकल्याणक पाए थे।
छह महिने पहले से धनपति, रत्न श्रेष्ठ बरसाए थे।।3।।
जन्म शुक्ल वैशाख सु एकम्, को जिनवर ने पाया था।
इसी तिथि को कुन्थुनाथ ने, मुक्ति पथ अपनाया था।।4।।
चैत्र सुदी तृतीया को स्वामी, केवलज्ञान जगाए थे।
वैशाख सुदी एकम् सम्मेद गिरि, से प्रभु मुक्ति पाए थे।।5।।

## श्री 1008 अरहनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज- शांति अपरम्पार है....)*

अरहनाथ भगवान हैं, गुण अनंत की खान हैं।
तीन लोक में मेरे स्वामी, अतिशय हुए महान् हैं।। टेक
हस्तिनापुर में जन्म लिया है, अतिशय मंगल छाया जी।
पिता सुदर्शन मित्रा माता, को प्रभु धन्य बनाया जी।। अरहनाथ ....
अस्सी हजार वर्ष की आयु, श्री जिनवर ने पाई जी।
तीन धनुष शुभ मेरे प्रभु की, रही श्रेष्ठ ऊँचाई जी।। अरहनाथ ....

जन्मोत्सव पर अरहनाथ के, तीन लोक हर्षाया जी।
पाण्डुक शिला पे इन्द्रों ने शुभ, प्रभु का न्हवन कराया जी।। अरहनाथ ....

मछली चिह्न प्रभु का जानो, छियालिस गुण प्रगटाए जी।
गिरि सम्मेद शिखर से प्रभु जी, मुक्ति वधू को पाए जी।। अरहनाथ ....

'विशद' मोक्ष न पाया जब तक, प्रभु के गुण हम गाएँ जी।
भव-भव में हम शरण प्रभु की, जैनधर्म शुभ पाएँ जी।। अरहनाथ ....

## श्री 1008 मल्लिनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज- मैं तो आरती उतारूँ रे..)*

हम तो आरती उतारे जी, मल्लिनाथ जिनवर की- हो ऽ ऽ
जय-जय श्री मल्लिनाथ, जय-जय हो - हम.....।। टेक

माँ प्रज्ञावती के लाल, कुंभ नृप के प्यारे।
प्रभु छोड़ के जग जंजाल, संयम को धारे।
लिए मिथिला नगर अवतार, स्वर्ग से चय कीन्हे।
आओ मंदिर में दौड़-दौड़, हाथो को जोड़-जोड़। हो...ऽऽ ।।1।।

प्रभु वीतराग जिनराज करुणा के धारी।
हम करें आरती आज, प्रभु की मनहारी।
मिले हमको सौख्य अपार, प्रभु की भक्ति से।
आओ भक्ति में डोल-डोल, हृदय के पट खोल-खोल। हो...ऽऽ ।।2।।

नई जीवन में आये बहार, जिन गुण गाने से।
मिले मुक्ति की शुभ राह, दर्शन पाने से।
'विशद' मिलता है आनन्द अपार, चरणों आने से।
आओ दर्शन को देख-देख, माथा को टेक-टेक। हो...ऽऽ ।।3।।



## श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज : मेरे मन मंदिर में आन पधारो...)*

श्री मुनिसुव्रत भगवान, आज हम द्वारे आये हैं।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। टेक

मुनिव्रतों को तुमने पाया, वीतरागमय भेष बनाया।
कीन्हा आतम ध्यान, आपके द्वारा आए हैं।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। श्री मुनिसुव्रत.....

तुमने कर्म घातिया नाशे, निज में केवलज्ञान प्रकाशे।
प्रभु किया जगत् कल्याण, आपके दर्शन पाए हैं।।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। श्री मुनिसुव्रत.....

मुक्ति वधु के तुम भरतारी, सर्व जगत में मंगलकारी।
तुम हो कृपा सिन्धु भगवान, चरण हम शीश झुकाए हैं।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। श्री मुनिसुव्रत.....

तव चरणों में जो भी आया, उसने ही वैराग्य जगाया।
जग में केवल आप महान्, दर्श कर हम हर्षाए हैं।।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। श्री मुनिसुव्रत.....

हम भी शरण तुम्हारी आए, भक्ति भाव से प्रभु गुण गाए।
हो 'विशद' सर्व कल्याण, चरण में हम सिर नाए हैं।।
आरती करने को हे नाथ !, जलाकर दीपक लाए हैं।। श्री मुनिसुव्रत.....

## श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ की आरती

*(तर्ज- इह विधि मंगल आरती कीजे..)*

मुनिसुव्रत की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे। इह.....
नृप सुमित्र के राजदुलारे, माँ श्यामा की आँख के तारे। इह.....

राजगृही के नृप कहलाए, कछुआ लक्षण पग में पाए। इह.....
तीस हजार वर्ष की भाई, श्री जिनवर ने आयु पाई। इह.....
श्रावण वदी दोज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी। इह.....
दशें वदी वैशाख को स्वामी, जन्म लिए त्रिभुवनपति नामी। इह.....
वैशाख वदी दसमी दिन आया, जिन प्रभु ने संयम को पाया। इह.....
वैशाख वदी नौमी दिन गाया, प्रभु ने केवलज्ञान उपाया। इह.....
फाल्गुण वदी बारस को भाई, कर्म नाशकर मुक्ति पाई। इह.....
गिरि सम्मेद शिखर शुभ गाया, 'विशद' मोक्षपद प्रभु ने पाया। इह.....

## श्री 1008 नमिनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज- प्रभु रथ में हुए सवार...)*

प्रभु की आरती में आज, नगाड़े बाज रहे। टेक

सब ठुमुक-ठुमुक कर नाच रहे, कई वाद्य ध्वनि से बाज रहे।
श्री नमिनाथ जिनराज, नगाड़े बाज रहे।।1।।

कई भक्त आरती गाते हैं, ताली कई लोग बजाते हैं।
आते आरती के काज, नगाड़े बाज रहे।।2।।

शुभ घी की ज्योति जलाई है, आरति करने को आई है।
मिलकर के सकल समाज, नगाड़े बाज रहे।।3।।

प्रभु के यह भक्त निराले हैं, प्रभु भक्ति के मतवाले हैं।
प्रभु तारण तरण जहाज, नगाड़े बाज रहे।।4।।

क्या वीतराग छवि प्यारी है, नाशा दृष्टि मनहारी है।
हैं विशद धर्म के ताज, नगाड़े बाज रहे।।5।।



## श्री 1008 नेमिनाथ भगवान की आरती

*(तर्ज-शांति अपरम्पार है....)*

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।। टेक

सौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर-घर मंगल छाया जी।
इन्द्र सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।1।।

नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।2।।

मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।3।।

पञ्च मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।4।।

केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर का पार करूँ यह, 'विशद' भावना भाई जी।।
नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।5।।

## श्री 1008 नेमिनाथ भगवान की आरती

म्हारे नेमिनाथजी की सुन्दर प्रतिमा, मंगलकारी जी।
मंगलकारीजी जगमें, संकट हारी जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।1 ।।

गिरि गिरनार शिखर के ऊपर, प्रभु सम्यक् तप धारे जी।
होकर के निर्ग्रन्थ दिगम्बर, अपने वस्त्र उतारे जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।2 ।।

समुद्र विजय गृह सौरीपुर में, आप लिये अवतारे जी।
शिवा देवी को धन्य किया है, जागे भाग्य हमारे जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।3 ।।

पशुओं का आक्रन्दन सुनकर, जागा शुभ वैराग्य जी।
प्रभु दर्शन का अवसर पाया, जागा मम् सौभाग्य जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।4 ।।

होकर के निर्विक्त जहाँ से, आतम ध्यान लगाया जी।
कर्म घातिया नाश किये प्रभु, केवलज्ञान जगाया जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।5 ।।

दिव्य देशना आप सुनाए, किया जगत् कल्याण जी।
सर्व कर्म का नाश किए तव, पाये पद निर्वाण जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।6 ।।

मोक्ष महल में जाने का शुभ, हमने भाव बनाया जी।
'विशद' मुक्ति को पाने हेतु, चरण शरण में आया जी।। म्हारे नेमिनाथ... ।।7 ।।

## श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ।
प्रभु कर दो भव से पार आज थारी...टेक

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आखों के तारे।
जन्मे है काशीराज- आज थारी..... ।।1।।



बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्नविनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज- आज थारी आरती..... ।।2।।

नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार- आज थारी आरती..... ।।3 ।।

दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी, भव दुःख हर्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार- आज थारी..... ।।4 ।।

''विशद'' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन-जन के सुखकार- आज थारी आरती..... ।।5 ।।

## श्री 1008 महावीर भगवान की आरती

(तर्ज : तुमसे लागी लगन...)

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण ज्ञानधारी, हम तो आरती उतारें तुम्हारी।
भाव भक्ति करें, कष्ट सारे हरें - धर्मधारी, पार नैया लगाओ हमारी।। टेक।।

कुण्डलपुर में प्रभु जन्म पाये, तीनों लोकों में शुभ हर्ष छाये।
इन्द्र आये तभी, दर्श कीने सभी मंगलकारी।। हम तो आरती।।1 ।।

भोग जग के नहीं जिनको भाए, योग धारण में मन को लगाए।
आप त्यागी बने, वीतरागी बने, ब्रह्मचारी।।हम तो आरती.... ।।2 ।।

कर्म घाती सभी तुम नशाए, ज्ञान केवल प्रभुजी जगाए।
आए पावापुरी, पाए मुक्तिश्री, निर्विकारी।। हम तो आरती.... ।।3 ।।

भक्त आये हैं चरणों तुम्हारे, आशा लेकर के आये हैं द्वारे।
आशा पूरी करो, कर्म सारे हरो, संकटहारी।। हम तो आरती.... ।।4 ।।

शीश चरणों में सेवक झुकाए, 'विशद' आशीष पाने को आए।
वीर बन जाये हम, कोई होवे न गम, उम्र सारी।। हम तो आरती.... ।।5 ।।

# बाहुबली स्वामी की आरती

ॐ जय बाहुबली स्वामी, प्रभु बाहुबली स्वामी।
रत्नत्रय को पाने वाले, बने मोक्षगामी।। ॐ जय ..... ।। टेक

तीर्थंकर के पुत्र कहाए, चक्री के भाई।
कामदेव पद तुमने पाया, शुभ मंगलदायी।। ॐ जय ..... ।।1 ।।

भ्रात भरत से युद्ध हुआ तब, विजय प्राप्त कीन्हें।
छह खण्डों का राज्य भरत को, आप सौप दीन्हें।। ॐ जय .....।।2 ।।

एक वर्ष तक खड्गासन में, तुमने ध्यान किया।
निराहार हो निजानन्द का, शुभ आनन्द लिया।। ॐ जय .....।।3 ।।

चक्रवर्ती ने चरणों आकर, संदेशा दीन्हा।
वसुधा काहू की न स्वामी, क्यों विकल्प कीन्हा।। ॐ जय .....।।4 ।।

निर्विकल्प हो तुमने स्वामी, अतिशय ध्यान किया।
विशद ज्ञान को पाया क्षण में, शिवपुर वास किया।। ॐ जय .....।।5 ।।

# जिनवर की आरती

*(तर्ज- धन्य-धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है..)*

धन्य-धन्य आज घड़ी कैसी मंगलकार है।
जिन चरणों की आरती करके, होती जय-जयकार है।

भक्ति से भक्त सभी, नृत्यगान कर रहे।
दौलत से पुण्य की, झोलियाँ जो भर रहे।
जय-जय की चारों ओर, गूँजती झंकार है।। जिन... ।।1 ।।

गीत वाद्य की ध्वनि, से गूँजे आकाश है।
चरणों में आए जो, बन जाते दास है।
जागे सौभाग्य परम, होता उद्धार है।। जिन... ।।2 ।।



जिनवर के चरणों में, करते जो आरती।
करती कृपा उन पर, पूजनीय भारती।
महिमा का जिनवर की, दिखता न पार है।। जिन... ।।3 ।।

जिनवर की वाणी में, जीवन का सार है।
महिमा जिनेन्द्र की, जग में अपार है।
जिनवर की भक्ति से, आती बहार है।। जिन... ।।4 ।।

अनुपम खुशी आज, मंदिर में छाई है।
करके 'विशद' भक्ति, जनता हर्षाई है।
भक्ति का चारों ओर, दिखता संचार है।। जिन... ।।5 ।।

# निर्वाण क्षेत्र की आरती

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की।। करूँ आरती ..

भव-भव के दु:ख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।। करूँ आरती ..

अष्टापद में आदि नाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की।। करूँ आरती ..

ज्ञान कूट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूट पर अरहनाथ की, संवर कूट पर मल्लिनाथ की।। करूँ आरती ..

संकुल कूट पर श्री श्रेयांस की, सुप्रभ कूट पर पुष्पदंत की।
मोहन कूट पर पद्मप्रभु की, निर्जर कूट पर मुनिसुव्रत की।। करूँ आरती ..

ललित कूट पर चन्द्र प्रभु की, विद्युत कूट पर शीतल जिन की।
कूट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूट पर संभव जिन की।। करूँ आरती ..

कूट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूट पर अभिनंदन की।
अविचल कूट पर सुमतिनाथ की, शांति कूट पर शांतिनाथ की।। करूँ आरती ..

कूट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरु सुवीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की।। करूँ आरती ..

चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की।। करूँ आरती ..

## पञ्चमेरु की आरती

*(तर्ज–...)*

पञ्च मेरु की करते हैं हम, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए अनुपम, जिनवर के दरबार।।
हो जिनवर.....

प्रथम सुदर्शन मेरु में शुभ, चैत्यालय शुभकारी।
चार-चार हैं चतुर्दिशा में, अनुपम मंगलकारी।।
हो जिनवर.....

पूर्व धातकी खण्ड में मेरु, विजय नाम शुभ गाया।
लाख चौरासी योजन ऊँचा, आगम में बतलाया।।
हो जिनवर.....

अचल मेरु है खण्ड धातकी, पश्चिम में शुभकारी।
स्वर्ण कांति कि आभा वाला, पूजें सब नर-नारी।।
हो जिनवर.....

पुष्करार्द्ध पूरब में मेरु, मन्दर नाम बताया।
जिनबिम्बों से युक्त जिनालय, कि है अनुपम माया।।
हो जिनवर.....



पश्चिम पुष्करार्द्ध में मेरु, विद्युन्माली जानो।
रत्नमयी हैं 'विशद' जिनालय, धर्म के आलय मानो।।
हो जिनवर.....

## नन्दीश्वर की आरती

*(तर्ज : शांति अपरम्पार है ..)*

नन्दीश्वर अविराम है, बावन शुभ जिन धाम हैं,
जिन चरणों की आरति करके, करते विशद प्रणाम हैं।

प्रथम आरती अंजनगिरि की, चतुर्दिशा में सोहें जी-2
जिन चैत्यालय चैत्य हैं उन पर, सबके मन को मोहें जी-2
नन्दीश्वर.....

अंजनगिरि के चतुर्दिशा में, बावड़िया शुभ जानो जी-2
स्वच्छ नीर से भरी हुई हैं, अतिशय कारी मानो जी।
नन्दीश्वर.....

मध्य बावड़ी के हैं दधिमुख, अतिशय मंगलकारी जी-2
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी-2
नन्दीश्वर.....

बावड़ियों के बाह्य कोण पर, रतिकर विस्यमकारी जी-2
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी-2
नन्दीश्वर.....

शाश्वत जिनगृह जिनबिम्बों की, आरती करने आये हैं-2
'विशद' अर्चना के परोक्ष ही, हमने भाव बनाएँ हैं।
नन्दीश्वर.....

# आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

*(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)*

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

*रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर*



# णमोकार चालीसा

महामंत्र- णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उव्वज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

दोहा- तीन लोक से पूज्य हैं अर्हतादि नव देव।
मन वच तन से पूजते उनको विनत सदैव।।
णमोकार महामंत्र है काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ति जाप से, बने जीव अर्हन्त।।

*चौपाई*

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया।
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी।।
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो।
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे।।
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी।
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।
दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए।
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए।।
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए।
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्दरों से पूजे जाते।।
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले।
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते।
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए।।
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की प्रभु भाई।
आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।।
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए।
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते।।
पञ्चाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले।।

आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित्त दे दोष नशाते।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी।।
द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
ज्ञानाभ्यास करें जो भाई, संतों को शिक्षा दें भाई।।
द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो।
रत्नत्रयधारी कहलाए, मुक्ति पथ के नेता गाए।।
दर्शन-ज्ञान-चारित के धारी, साधु होते हैं अनगारी।
विषयासा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो।।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते।
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी।।
पञ्चमहाव्रत धारी जानो, पञ्चसमिति पाले मानो।
पञ्चेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले।।
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई।
महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया।।
अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई।
सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया।।
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी।
श्वानादि पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए।।
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए।
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए।।
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
विशद गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ।।
धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप।।

जापब्रह्म ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।



# आदिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।

दोहा- वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

*चौपाई*

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।
चिह्न बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।

छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।।
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।
प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।।
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्।।



# सम्भवनाथ चालीसा

दोहा- पञ्च परमेष्ठी लोक में, अतिशय रहे महान।
सम्भव जिन तीर्थेश का, करते हम गुणगान।।

*(चौपाई)*

सम्भव जिन शुभ करने वाले, भविजन का दुःख हरने वाले।
जो अनुपम महिमा धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
गुण गाने के भाव बनाए, जिन चरणों से प्रीति लगाए।
देवों के भी देव कहाए, शत इन्द्रों से पूज्य बताए।।
श्रेष्ठ दिगम्बर मुद्रा धारे, कर्म शत्रु प्रभु सभी निवारे।
मोह विजय तुमने प्रभु कीन्हा, उत्तम संयम मन से लीन्हा।।
जम्बू द्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र पावन शुभकारी।
आर्य खण्ड जिसमें बतलाया, भारत देश श्रेष्ठ शुभ गाया।।
श्रावस्ती नगरी है प्यारी, सुखी सभी थी जनता सारी।
भूप जितारी जी कहलाए, रानी आप सुसीमा पाए।।
स्वर्गों से चयकर प्रभु आए, सारे जग के भाग्य जगाये।
फाल्गुन सुदी अष्टमी जानो, मंगलमय ये तिथि पहचानो।।
सम्भव जिनवर गर्भ में आए, रत्नदेव तब कई वर्षाये।
छह महिने पहले से भाई, हुई रत्नवृष्टि सुखदायी।।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा गाई, पावन हुई जन्म से भाई।
इन्द्र कई स्वर्गों से आए, बालक का अभिषेक कराए।।
पग में अश्व चिह्न शुभ पाया, इन्द्र ने प्रभु पद शीश झुकाया।
सम्भवनाथ नाम बतलाया, जिन गुण गाकर के हर्षाया।।
जन्म से तीन ज्ञान प्रभु पाए, अतः त्रिलोकीनाथ कहाए।
साठ लाख पूरब की भाई, आयु जिनवर की बतलाई।।
धनुष चार सौ थी ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई।
अश्विन सुदी पूनम दिन आया, प्रभु ने संयम को अपनाया।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, महाव्रती बन के अविकारी।

देव कई लौकान्तिक आए, श्रेष्ठ प्रशंसा कर हर्षाए।।
देवों ने तब हर्ष मनाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पूजा करके प्रभु गुण गाए, जयकारों से गगन गुँजाए।।
स्वर्ण पेटिका दिव्य मँगाई, उसमें केश रखे शुभ भाई।
देव पेटिका हाथ सम्हाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डाले।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, निज स्वभाव में निज को पाया।
कार्तिक वदी चौथ प्रभु पाए, अनुपम केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाए, गंधकुटी अतिशय बनवाए।
प्रातिहार्य जिसमें प्रगटाए, कमलासन अतिशय बनवाए।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, गणधर आदि चरण में आए।
बारह सभा लगी मनहारी, दिव्य ध्वनि पाई शुभकारी।।
श्रावक कई चरणों में आए, भिन्न-भिन्न वह पूज रचाए।
मनवांछित फल वह सब पाए, अपने जो सौभाग्य जगाए।।
प्रभु सम्मेदशिखर पर आए, शाश्वत तीर्थराज कहलाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि कीन्हें, निज स्वभाव में दृष्टि दीन्हें।।
धवल कूट है मंगलकारी, ध्यान किए जाके त्रिपुरारी।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, एक माह निज में चित्त दीन्हें।।
चैत्र सुदी षष्टी को स्वामी, बने कर्म नश शिवपथ गामी।
एक समय में शिवपद पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।
हम यह नित्य भावना भाते, प्रभु पद अपने हृदय सजाते।
जिस पद को प्रभुजी तुम पाए, वह पद पाने पद में आए।
इच्छा पूर्ण करो हे स्वामी, तव चरणों में विशद नमामि।।
जागें अब सौभाग्य हमारे, कट जाएँ भव-बन्धन सारे।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, प्रतिदिन चालीस बार।
पढ़ने से शांति मिले, मन में अपरम्पार।।
स्वजन मित्र मिलकर सभी, करते हैं सहयोग।
इस भव में शांति 'विशद', परभव शिव का योग।।



# सुमतिनाथ चालीसा

दोहा- नव देवों को पूजते, पाने को शिव धाम।
सुमतिनाथ के पद युगल, करते विशद प्रणाम।।

*चौपाई*

सुमतिनाथ के पद में जावे, उसकी मति सुमति हो जावे।
प्रभु कहे त्रिभुवन के स्वामी, जन-जन के हैं अन्तर्यामी।।
अनुपम भेष दिगम्बर धारी, जिन की महिमा जग से न्यारी।
वीतराग मुद्रा है प्यारी, सारे जग की तारण हारी।।
नगर अयोध्या मंगलकारी, जन्मे सुमतिनाथ त्रिपुरारी।
पिता मेघरथजी कहलाए, मात मंगला जिनकी गाए।।
वंश रहा इक्ष्वाकु भाई, महिमा जिसकी जग में गाई।
वैजयन्त से चयकर आये, श्रावण शुक्ल दोज शुभ पाए।।
मघा नक्षत्र रहा मनहारी, ब्रह्ममुर्हूर्त पाए शुभकारी।
चैत्र शुक्ल ग्यारस दिन आया, जन्म प्रभुजी ने शुभ पाया।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाए, जा सुमेरु पर न्हवन कराए।
चकवा चिह्न पैर में पाया, सुमतिनाथ शुभ नाम बताया।।
स्वर्ण रंग तन का शुभ जानो, धनुष तीन सौ ऊँचे मानो।
जाति स्मरण देखकर स्वामी, बने आप मुक्तिपथ गामी।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी गाई, मघा नक्षत्र पाए सुखदायी।
तेला का व्रत धारण कीन्हे, सहस्र भूप संग दीक्षा लीन्हे।।
गये सहेतुक वन में स्वामी, तरुवर रहा प्रियंगु नामी।
पौष शुक्ल पूनम शुभकारी, हस्त नक्षत्र रहा मनहारी।।
नगर अयोध्या में फिर आए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।
समवशरण तव देव बनाए, दश योजन विस्तार बताए।।

गणधर एक सौ सोलह गाए, गणधर प्रथम वज्र कहलाए।
मुनिवर तीन लाख कहलाए, बीस हजार अधिक बतलाए।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, कर्म नाश कर मुक्ति पाए।
कृपा करो भक्तों पर स्वामी, बनें सभी मुक्ति पथगामी।।
इस जग के सारे दुःख पाए, अन्त में भव से मोक्ष सिधाए।
विनती चरणों विशद हमारी, बनो सभी के प्रभु हितकारी।।
चालिस लाख पूर्व की स्वामी, आयु पाए शिवपद गामी।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अन्तर्यामी।
चैत्र शुक्ल दशमी शुभ गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ति पाई।।
सहस्र मुनि सह मुक्ति पाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अविचल कूट रहा शुभकारी, तीर्थ क्षेत्र पर मंगलकारी।।
तीर्थ वन्दना करने आते, प्राणी अपने भाग्य सजाते।
सीकर जिला रहा शुभकारी, रैंवासा में अतिशयकारी।।
प्रतिमा प्रगट हुई मनहारी, सुमतिनाथ की मंगलकारी।
दर्शन प्रभु का है सुखदायी, शांतिदायक है अति भाई।।
जसों का खेड़ा ग्राम बताया, जिला भीलवाड़ा कहलाया।
मूलनायक जिन प्रतिमा सोहे, भव्यों के मन को जो मोहे।।
कई ग्रामों में प्रतिमा प्यारी, शोभित होती है मनहारी।
दर्शन पाते हैं नर-नारी, श्री जिनवर का मंगलकारी।।
जो भी प्रभु का दर्शन पाए, बार-बार दर्शन को आए।
हम भी प्रभु का ध्यान लगाएँ, निज आतम की शांति पाएँ।।

दोहा- चालीसा चालिस दिन, सद् श्रद्धा के साथ।
शांति मन में हो विशद, बने श्री का नाथ।।

* * *



# पदमप्रभु चालीसा

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, करते बारम्बार।
चालीसा जिन पदम का, गाते अपरम्पार।।

*चौपाई*

जय-जय पद्म प्रभु जिन स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।
भेष दिगम्बर तुमने पाया, सारे जग का मोह नशाया।।
शांति छवि मुद्रा अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अस्त्र-शस्त्र त्यागे तुम सारे, रहे न कोई शत्रु तुम्हारे।।
उपरिम ग्रैवयक से चय कीन्हे, स्वर्ग संपदा छोड़ जो दीन्हे।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, चयकर आये प्रभु अवतारी।।
धरणराज के लाल कहाए, मात सुसीमा के उर आए।
वंश इक्ष्वाकु तुमने पाया, इस जग में अनुपम कहलाया।।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभकारी, चित्रा नक्षत्र रहा मनहारी।
प्रातःकाल गर्भ में आये, मात-पिता के भाग्य जगाये।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि जानो, शुभ नक्षत्र चित्रा पहचानो।
इन्द्र करें जिनकी पदसेवा, जन्मे पद्म प्रभ जिनदेवा।।
कौशाम्बी में मंगल छाया, जन्मोत्सव तव वहाँ मनाया।
इन्द्र मेरु पर न्हवन कराए, कमल चिह्न प्रभु के पद पाए।।
धनुष ढाई सौ उच्च कहाए, लाल रंग तन का प्रभु पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, प्रभु के मन वैराग्य समाया।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस तिथि जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।
तृतिय भक्त प्रभु जी पाए, सहस्र भूप सह दीक्षा पाए।।
समवशरण आ देव बनाए, साढ़े नौ योजन का गाए।
बाड़ा गाँव एक बतलाया, मूला जाट वहाँ का गाया।।

उसको तुमने स्वप्न दिखाया, मन ही मन मूला हर्षाया।
उसने गृह की नींव खुदायी, उसमें मूर्ति निकली भाई।।
आस-पास के लोग बुलाए, सबको वह मूर्ति दिखलाए।
कमल चिह्न था उसमें भाई, जय बोले सब मिलके भाई।।
दर्शन करने श्रावक आए, बाधा प्रेत की दूर भगाए।
मनोकामना पूरी करते, दुःखियों के सारे दुःख हरते।।
पद्म प्रभु के गुण हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
यही भावना रही हमारी, सुखी रहे प्रभु जनता सारी।।
धर्मी हों इस जग के प्राणी, पढ़ें-सुनें हर दिन जिनवाणी।
नर जीवन को सफल बनावें, सम्यक् श्रद्धा संयम पावें।।
निज आतम का ध्यान लगावें, कर्म नाशकर शिवपुर जावें।
मुनिवर तीन सौ चौबिस भाई, साथ में प्रभु के मुक्ति पाई।।
बारह सभा जुड़ी वहाँ भाई, दिव्य देशना श्रेष्ठ सुनाई।
गणधर एक सौ ग्यारह गाए, प्रथम चमर गणधर कहलाए।।
तीस लाख पूरब की स्वामी, आयु पाये हैं प्रभु नामी।
छदमस्थ काल छह माह का पाए, ज्ञानी बनकर शिवसुख पाए।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, योग निरोध महिने का पाए।
फाल्गुन शुक्ल चौथ शुभकारी, मुक्ति पाए प्रभु अविकारी।।
मोहन कूट से मोक्ष सिधाए, अग्निदेव भक्ति से आए।
नख केशों को तभी जलाए, प्रभु पद भक्ति कर हर्षाए।।
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुख अनन्त अविनाशी पाए।

दोहा- चालीसा प्रभु पद्म का, दिन में चालिस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़े, पावें शांति अपार।।

* * *



# चन्द्रप्रभु चालीसा

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हाल।
चन्द्र प्रभु के चरण में, वन्दन है नत भाल।।

*(शम्भू -छन्द) तर्ज- आल्हा*

भव दुःख से संतप्त मरुस्थल, में यह भटक रहा संसार।
चन्द्र प्रभु की छत्र छाँव में, आश्रय मिलता है शुभकार।।
जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्रपुरी है मंगलकार।
यहाँ सुखी थी जनता सारी, महासेन नृप का दरबार।।1।।
महिषी जिनकी वही सुलक्षणा, शुभ लक्षण से युक्त महान।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ में आये थे भगवान।।
इक्ष्वाकु वंश आपका, सारे जग में अपरम्पार।
चैत कृष्ण पाँचे को प्रभु ने, भारत भू पर ले अवतार।।2।।
शुभ नक्षत्र विशाखा पावन, अन्तिम रात्रि थी मनहार।
देव-देवियों ने हर्षित हो, आके किया मंगलाचार।।
पौष कृष्ण ग्यारस को जन्में, हर्षित हुआ राज परिवार।
इन्द्रों ने जाकर सुमेरु पर, न्हवन कराया बारम्बार।।3।।
दाँये पग में अर्द्ध चन्द्रमा, देखके इन्द्र बोला नाम।
चन्द्र प्रभु की जय बोली फिर, चरणों में कीन्हा विशद प्रणाम।।
बढ़ने लगे प्रभु नित प्रतिदिन, गुण के सागर महति महान।
आयु लाख पूर्व दश की शुभ, पाए चन्द्र प्रभु भगवान।।4।।
धनुष डेढ़ सौ थी ऊँचाई, धवल रंग स्फटिक के समान।
तड़ित चमकता देख गगन में, हुआ प्रभु को निज का भान।।
मार्ग शीर्ष शुक्ला सातें को, धारण कीन्हें प्रभु वैराग्य।
अनुराधा नक्षत्र में भाई, सहस्र भूप के जागे भाग्य।।5।।
वन सर्वार्थ नाग तरु तल में, प्रभु ने कीन्हा आतम ध्यान।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी को प्रभु, पाए अनुपम केवलज्ञान।।
समवशरण की रचना आकर, देवों ने की मंगलकार।

साढ़े आठ योजन का भाई, समवशरण का था विस्तार।।6।।
गणधर रहे तिरानवे प्रभु के, उनमें रहे वैदर्भ प्रधान।
गिरि सम्मेद शिखर पर प्रभु जी, ललित कूट पर किये प्रयाण।।
योग निरोध किया था प्रभु ने, एक माह तक करके ध्यान।
भादों शुक्ल सप्तमी को शुभ प्रभु, ने पाया पद निर्वाण।।7।।
ज्येष्ठा शुभ नक्षत्र बताया, काल बताया है पौवाह्ण।
एक हजार साथ में मुनियों, ने भी पाया पद निर्वाण।।
वीतराग मुद्रा को लखकर, बने देव चरणों के भक्त।
मनोयोग से जिन चरणों की, भक्ति में रहते अनुरक्त।।8।।
समन्तभद्र मुनिवर को भाई, भस्म व्याधि जब हुई महान।
शिव को भोग खिलाऊँगा मैं, राजा से वह बोले आन।।
छुपकर उत्तम भोजन खाया, हुआ व्याधि का पूर्ण विनाश।
पता चला राजा को जब तो, राजा मन में हुआ उदास।।9।।
राजा समन्तभद्र से बोले, शिव पिण्डी को करो नमन।
पिण्डी नमन झेल न पाए, कर दो सांकल से बन्धन।।
आप स्वयंभू पाठ बनाए, शीश झुकाकर किए नमन।
पिण्डी फटी चन्द्र प्रभु स्वामी, के सबने पाए दर्शन।।10।।
प्रगट हुए देहरा में प्रभु जी, लोग किए तब जय-जयकार।
सोनागिर में आप विराजे, समवशरण ले सोलह बार।।
टोंक जिला के मैंदवास में, प्रकट हुए भूमि से नाथ।
जयपुर में बैनाड़ क्षेत्र पर, भक्त झुकाते चरणों माथ।।11।।
नगर-नगर के मंदिर में प्रभु, शोभित होते हैं अविकार।
पूजा आरति वन्दन करते, भक्त चरण में बारम्बार।।
सब जीवों में मैत्री जागे, सुख-शांतिमय हो संसार।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवे भव से बेड़ा पार।।12।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, होय श्री का नाथ।।



# पुष्पदन्त चालीसा

दोहा- अर्हत् सिद्धागम धरम, आचार्योपाध्याय संत।
जिन मंदिर जिनबिम्ब को, नमन अनन्तानंत।।
कुन्द पुष्प सम रूप शुभ, पुष्पदन्त है नाम।
चरण-कमल द्वय में विशद, बारम्बार प्रणाम।।

*चौपाई*

जय-जय पुष्पदन्त जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
तुम हो सब देवों के देवा, इन्द्र करें तव पद की सेवा।।
महिमा है इस जग से न्यारी, सारी जगती बनी पुजारी।
महिमा सारा जग ये गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आए, काकन्दी नगरी कहलाए।
पिताश्री सुग्रीव कहाए, माताश्री जयरामा पाए।।
फाल्गुन कृष्ण नौमी कहलाए, मूल नक्षत्र गर्भ में आए।
प्रातःकाल का समय बताए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।।
मगसिर शुक्ला एकम जानो, प्रभु ने जन्म लिया यह मानो।
मगर चिह्न प्रभु का बतलाया, इन्द्रों ने पद शीश झुकाया।।
धवल रंग प्रभु जी शुभ पाए, धनुष एक सौ ऊँचे गाए।
उल्कापात देख के स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।।
मगसिर कृष्णा एकम पाए, अनुराधा नक्षत्र कहाए।
अपराह्न काल दीक्षा का गाया, तृतिय भक्त प्रभु ने पाया।।
दीक्षा वृक्ष पुष्प शुभ गाया, शाल वृक्ष तल ध्यान लगाया।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
कार्तिक शुक्ला तीज बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।
काकन्दी नगरी फिर आए, अक्ष तरु वन पुष्प कहाए।।

समवशरण वसु योजन पाए, सुन्दर आके देव रचाए।
एक माह पूर्व से स्वामी, योग निरोध किए जगनामी।।
यक्ष आपका ब्रह्म कहाए, काली श्रेष्ठ यक्षणी पाए।
गणधर आप अठ्यासी पाए, उनमें नाग प्रथम कहलाए।।
आयु लाख पूर्व दो पाए, चार वर्ष छद्मस्थ बिताए।
सर्व ऋषि दो लाख बताए, समवशरण में प्रभु के गाए।।
घोषा प्रथम आर्यिका जानो, छियालीस गुण के धारी मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, एक हजार मुनि संग मानो।
मूल नक्षत्र प्रभु जी पाए, अपराह्न काल में मोक्ष सिधाए।।
शुक्रारिष्ट ग्रह जिन्हें सताए, पुष्पदंत प्रभु को वह ध्याये।
पूजा और विधान रचाए, भावसहित चालीसा गाए।।
करे आरती मंगलकारी, शुक्रवार के दिन मनहारी।
जीवन में सुख-शांति पावे, भक्त भाव से जो गुण गावे।।
प्रभु की महिमा रही निराली, है सौभाग्य जगाने वाली।
महिमा सुनकर के हम आए, भाव सुमन अपने उर लाए।।
मम जीवन हो मंगलकारी, विघ्न व्याधि नश जाए हमारी।
तव प्रतिमा के दर्शन पाएँ, हर्ष-हर्ष करके गुण गाएँ।।
पद में सादर शीश झुकाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।
भव सिन्धु से मुक्ति पाएँ, हम भी अब शिव पदवीं पाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री के नाथ।।
विधि सहित पूजा करें, करके 'विशद' विधान।
पाते हैं सौभाग्य वह, अन्त में हो निर्वाण।।



# शीतलनाथ चालीसा

दोहा- नमन करें अरहंत को, करें सिद्ध का ध्यान।
आचार्योपाध्याय साधु का, करें विशद गुणगान।।
जैनागम जिनधर्म शुभ, जिन मंदिर नवदेव।
शीतलनाथ जिनेन्द्र को, वन्दूँ विनत सदैव।।

*(चौपाई)*

आरण स्वर्ग से चय कर आये, माहिलपुर को धन्य बनाए।
जय-जय शीतल नाथ हमारे, भव-भव के दुःख नाशन हारे।।
तुमने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।
दृढ़रथ नृप के पुत्र कहाए, मात सुनन्दा प्रभु की गाए।।
गर्भोत्सव तव इन्द्र मनाए, रत्न वृष्टि करके हर्षाए।।
क्षीर सिन्धु से जल भर लाए, जन्मोत्सव पर न्हवन कराए।।
आयु लाख पूर्व की जानो, कल्प वृक्ष लक्षण पहिचानो।
नब्बे धनुष रही ऊँचाई, महिमा जिनकी कही न जाई।।
पद युवराज आपने पाया, कई वर्षों तक राज्य चलाया।
हिम का नाश देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।।
केशलोंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर प्रभु अविकारी।
पंच महाव्रत प्रभु ने पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
संयम तप धारण कर लीन्हें, संवर और निर्जरा कीन्हें।
कर्म घातिया प्रभु जी नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।।
इन्द्र अनेकों चरणों आये, भक्ति भाव से शीश झुकाए।
पूजा कीन्हीं मंगलकारी, अतिशय हुए वहाँ पर भारी।।
समवशरण तव देव बनाए, प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए।

गणधर रहे सतासी भाई, जिनकी महिमा है अधिकाई।।
कुन्थु गणधर प्रथम कहाए, चार ज्ञान के धारी गाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्य जीव सुनने को आए।।
गणधर झेले जिसको भाई, सब भाषा मय सरल बनाई।
सम्यक् दर्शन पाए प्राणी, सुनकर श्री जिनवर की वाणी।।
कुछ लोगों ने संयम पाया, मोक्ष मार्ग उनने अपनाया।
गगन गमन करते थे स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।।
स्वर्ण कमल पग तल में जानो, देव श्रेष्ठ रचते थे मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आये, योग रोधकर ध्यान लगाए।।
विद्युतवर शुभ कूट कहाए, जिसकी महिमा कही न जाए।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र पिछानो।।
इक साधु के संग में भाई, शीतल जिन ने मुक्ति पाई।
विशद भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जिस पथ को तुमने अपनाया, मेरे मन में पथ वह भाया।
इसी राह पर हम बढ़ जाएँ, उसमें कोई विघ्न न आएँ।।
साहस बढ़े हमारा स्वामी, बने मोक्ष के हम अनुगामी।
शिव पदवी को हम भी पाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़े, होवे भव से पार।।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, होवे बहु गुणवान।
कर्म नाशकर शीघ्र ही, उसका हो निर्वाण।।

* * *



# वासुपूज्य चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम् शीश।।

*(चौपाई)*

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अनुपम केवलज्ञान जगाए, अविनाशी अनुपम पद पाए।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए।।
आषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्ष्वाकु शुभ वंश उपाए।
गर्भ नक्षत्र शतभिषा गाए, प्रातःकाल का समय बिताए।।
फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।
शुभ नक्षत्र विशाका गया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिह्न पैर में पाया।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया।।
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।
माघ शुक्ल की चौथ बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए।।
अपराह्न काल का समय बताया, एक उपवास प्रभु ने पाया।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए।।
प्रभु मनोहर वन में आए, तरु पाटला का तल पाए।
राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।
आयु लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।
मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढ़ोक लगाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए।।

गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सन्मुख यक्ष प्रभु का मानो।
एक माह पूर्व से भाई, योग निरोध किए सुखदायी।।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ति पाई।
शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराह्न काल का समय बताया।।
मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
छियासठ प्रभु के गणधर गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए।।
बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।
शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए।।
छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।
दश हजार विक्रियाधारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी।।
चौवन सौ अवधिज्ञानी पाए, सहस्र बहत्तर सब ऋषि गाए।
आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आईं, एक लाख छह सहस्र बताईं।।
वरसेना गणिनी कहलाई, आयु लाख बहत्तर पाई।
एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ति पाए।।
पाँचो कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर में प्रभु के मानो।
ग्रहारिष्ट मंगल के स्वामी, वासुपूज्य जिन अन्तर्यामी।।
मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।
आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए।।
सुख-शांति वह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।
रत्नत्रय पा कर्म नशाए, शीघ्र विभव से मुक्ति पाए।।
यही भावना 'विशद' हमारी, मुक्ति दो हमको त्रिपुरारी।
भव सागर में नहीं भ्रमाएँ, शिवपद पाके शिवसुख पाएँ।।

दोहा- चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
पाते सुख शांति विशद, बनते शिवपति ईश।।



# शांतिनाथ चालीसा

दोहा- अरहन्तों को नमन कर, सिद्धों को उर धार।
आचार्योपाध्याय साधु को, वन्दन बारम्बार।।
चैत्य-चैत्यालय धर्म जिन, आगम यह नवदेव।
शांतिनाथ के चरण में, वन्दन करूँ सदैव।।

*(तर्ज - नित देव मेरी...)*

शांति जिन की वन्दना जो, जीव करते हैं सभी।
सुख-शांति में रहते मगन, वह खेद न पाते कभी।।
प्रभु हैं दिगम्बर वीतरागी, शुद्ध हैं निर्दोष हैं।
प्रभु ज्ञान दर्शन वीर्य सुखमय, सद्गुणों के कोष हैं।।1।।
चयकर प्रभु सर्वार्थ सिद्धि, से यहाँ पर आए हैं।
विश्वसेन नृप के पुत्र माता, ऐरादेवी पाए हैं।।
जन्में हस्तिनागपुर में, वंश इक्ष्वाकु कहा।
भरणी शुभ नक्षत्र पाए, काल प्रातः का रहा।।2।।
माह भादों कृष्ण सातें, गर्भ में आए प्रभो।
स्वप्न सोलह मात देखे, नृत्य सुर कीन्हें विभो।।
ज्येष्ठ वदि चौदस प्रभु का, जन्म कल्याणक कहा।
इन्द्र ने लक्षण चरण में, हिरण शुभ देखा अहा।।3।।
चक्रवर्ती रहे पञ्चम, मदन बारहवें कहे।
प्रभु सोलहवे कहे जिन, स्वर्ण रंग के जो रहे।।
वर्ष इक लख श्रेष्ठ आयु, प्रभु की उत्तम कही।
धनुष चालिस श्रेष्ठ प्रभु के, तन की ऊँचाई रही।।4।।
जाति स्मरण से प्रभु, वैराग्य धारण कर लिए।
वैशाख शुक्ला तिथि एकम्, भक्त तृतिय जो किए।।
आम्रवन में नन्द तरु तल, में प्रभु दीक्षा धरे।
दीक्षा धरके सहस्र राजा, केश लुन्चन खुद करे।।5।।

गरुड प्रभु का यक्ष मानो, मानसी यक्षी कही।
शुभ हरिषेणा मुख्य प्रभु की, आर्यिका अनुपम रही।।
पौष शुक्ला तिथि दशमी, ज्ञानकेवल पाए हैं।
समवशरण तब देव आके, श्रेष्ठ शुभ बनवाए हैं।।6।।
व्यास साढ़े चार योजन, सभा का शुभ जानिए।
नगर हस्तिनागपुर में, ज्ञान पाए मानिए।।
एक महिने पूर्व से जो, योग का शुभ रोधकर।
ध्यान चेतन का लगाए, आत्मा का बोधकर।।7।।
गिरि सम्मेदाचल से मुक्ति, शांति जिनवर पाए हैं।
ज्येष्ठ कृष्णा तिथि चौदश, शिव गमन बतलाए हैं।।
भूप नौ सौ साथ में, मुक्तिश्री को पाए हैं।
काल प्रातः मोक्ष प्रभु श्री, शांति जिन का गाए हैं।।8।।
गणी छत्तिस शांति जिन के, वीतरागी जानिए।
प्रथम चक्रायुध गणी अति, श्रेष्ठतम शुभ मानिए।।
शांति जिन की अर्चना कर, शांति पाते हैं सभी।
ध्यान जो करते प्रभु का, वे दुःखी न हों कभी।।9।।
शांति जिन के बिम्ब जग में, कष्ट इस जग के हरें।
भक्त के गृह शांति जिनवर, शांति की वर्षा करें।।
शांति जिन के तीर्थ जग में, कई जगह पर छाए हैं।
शांति दाता शांति जिनवर, लोक में कहलाए हैं।।10।।
बानपुर आहार थूवौन, वीना खजुराहो कहा।
हस्तिनागपुर देवगढ़ अरु, रामटेक अतिशय रहा।।
भाव से जिन अर्चना कर, पुण्य का अर्जन करें।
शांति जिन का ध्यान करके, भव जलधि से हम तरें।।11।।

दोहा- चालीसा चालिस दिन, पढ़े जो चालीस बार।
'विशद' शांति सौभाग्य पा, पावे भव से पार।।



# मल्लिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, चौबिस जिन के साथ।
मल्लिनाथ जिनराज पद, विनत झुकाते माथ।।

*चौपाई*

मल्लिनाथ जिनराज कहाए, संयम पाके शिवसुख पाए।
प्रभु है वीतरागता धारी, सारे जग में मंगलकारी।।
अपराजित से चय कर आये, चैत्र शुक्ल एकम तिथि गाए।
मिथला के नृप कुम्भ कहाए, प्रजावति के गर्भ में आए।।
इक्ष्वाकु नन्दन कहलाए, कलश चिह्न पहिचान बताए।
अश्विनी नक्षत्र श्रेष्ठ बतलाए, प्रातःकाल का समय कहाए।।
मगसिर शुक्ला ग्यारस गाए, जन्म प्रभु मल्लि जिन पाए।
पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का है भाई।।
तड़ित देख वैराग्य समाया, प्रभु ने सद् संयम को पाया।
इन्द्र पालकी लेकर आए, उसमें प्रभु जी को बैठाए।।
इन्द्र पालकी जहाँ उठाते, नरपति तव आगे आ जाते।
मानव लेकर आगे बढ़ते, देव गगन में लेकर उड़ते।।
मगशिर शुक्ला ग्यारस पाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए।
श्रेष्ठ मनोहर वन शुभ पाया, तरु अशोक वन अनुपम गाया।।
समवशरण शुभ देव रचाए, त्रय योजन विस्तार कहाए।
वैशाख कृष्ण दशमी को भाई, प्रभु ने जिनवर दीक्षा पाई।।
पौर्वाह्न का समय बताया, षष्ठम भक्त प्रभु ने पाया।
शालि वन में पहुँचे स्वामी, तरु अशोक तल में शिवगामी।।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।
वरुण यक्ष प्रभु का शुभ गाया, यक्षी पद विजया ने पाया।।
पचपन सहस्र वर्ष की भाई, प्रभु की शुभ आयु बतलाई।

गणधर शुभ अट्ठाइस बताए, गणी विशाख पहले गाए।।
साढ़े पाँच सौ पूरब धारी, उन्तिस सहस्र शिक्षक अविकारी।
बाईस सौ अवधिज्ञानी गाए, चौदह सौ वादी बतलाए।।
उन्तिस सौ विक्रिया के धारी, बाईस सौ केवली मनहारी।
सत्रह सौ पचास मुनि गाए, मनःपर्ययज्ञानी बतलाए।।
पचपन सहस्र आर्यिका भाई, मधुसेना गणिनी बतलाई।
एक लाख श्रावक कहलाए, चालिस सहस्र मुनि सब गाए।।
योग रोधकर ध्यान लगाए, एक माह का समय बिताए।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी जानो, गिरि सम्मेद शिखर पर मानो।।
भरणी शुभ नक्षत्र बताया, प्रभु ने मुक्ति पद शुभ पाया।
सायंकाल रहा शुभकारी, गौधूलि बेला मनहारी।।
तीर्थंकर पद पाके स्वामी, बने मोक्षपद के अनुगामी।
महा मनोहर मुद्राधारी, जिनबिम्बों की शोभा न्यारी।।
भावसहित जो पूजें ध्यावें, वे अपने सौभाग्य बढ़ावें।
यश कीर्ति बल वैभव पावें, ओज तेज कांति उपजावें।।
सर्वमान्य जग पदवी पावें, रण में विजयश्री ले आवें।
हों अनुकूल स्वजन परिवारी, सेवक होंवे आज्ञाकारी।।
अर्चा के शुभ भाव बनाएँ, चरण-शरण में हम भी आएँ।
शांतिमय हो जगती सारी, यही भावना रही हमारी।।
जब तक हम शिवपद न पाएँ, चरण आपके हृदय सजाएँ।
'विशद' भाव से तव गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
पढ़े सुने जो भाव से, तीनों योग सम्हार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, बढ़े पुण्य का कोष।
अन्तिम शिव पदवी मिले, जीवन हो निर्दोष।।



# मुनिसुव्रतनाथ चालीसा

अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।
प्रभु हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीष झुकाते।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।
प्रभु तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।
प्रभु की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमीं नाशा पर।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन शुदि पाए।
वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तव मन हर्षाया।
पग में कछुआ चिह्न दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।

बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।
उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभु के मन वैराग्य जगाए।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभु जी को पधराए।
भूपति कई प्रभु को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभु ने सार्थक नाम बनाया।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।
वेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।
गणधर प्रभु अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आईं।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।
फाल्गुन वदी वारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पा जाएँ।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।



# नेमीनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, करते विशद प्रणाम।
नेमिनाथ का भाव से, ले सुखकारी नाम।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान ! उजागर।
प्रभु हैं जन-जन के हितकारी, ज्ञानी ध्यानी जग उपकारी।।
तीन काल तिय जग के ज्ञाता, जन-जन का प्रभु तुमसे नाता।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, नर जीवन का सार बताया।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुःख हरते।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शैरीपुर में जन्में भाई।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर-नर पशु मन में हर्षाए।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, सची ने प्रभु को गोद बिठाया।।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालीस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।।
कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।
कोई शम्भू नाम पुकारें, कोइ अनिरुद्ध के देते नारे।।
नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।

ऊँगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।।
सब अपनी शक्ति अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।।
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।
रोम-रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैया नाग की प्रभु बनाई।
पैर की ऊँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुंचे फिर भाई।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी।
कृष्ण ने तब की मायाचारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।।
नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलबाया।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।।



प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया ! वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
सवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
सौख्य अनन्त प्रभु ने पाया, नर जीवन का सार बताया।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।

*सोरठा-* चालीसा चालीस दिन में, जो पढ़ता 'विशद'।
चरण झुकाए शीश, विनय भाव के साथ जो।।

*सोरठा-* शांति मिले विशेष, रोग शोक चिंता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

* * *

# पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- अर्हत् सिद्धाचार्य शुभ, उपाध्याय जिन संत।
पार्श्व प्रभु के चरण में, नमन अनंतानंत।।

*(तर्ज- नित देव मेरी आत्मा...)*

जिनराज पारसनाथ स्वामी, लोक में पावन रहे।
संसार में जो भव्य जीवों, के तरण-तारण कहे।।
कर ध्यान आतम का प्रभु जी, नाश कर अज्ञान का।
अनुपम अलौकिक आपने, दीपक जलाया ज्ञान का।।1।।

अश्वसेन के कुँवर है जो, मात वामा जानिए।
नगर काशी के अधिपति, आप को पहिचानिए।।
शुभ दोज वदि वैशाख तिथि को, गर्भ में आये प्रभो !।
छह माह पहले से नगर में, हर्ष छाये थे विभो !।।2।।

तब रत्न वृष्टि दिव्य करके, देव हर्षाए अहा।
शुभ पोष कृष्ण एकादशी को, जन्म का उत्सव रहा।।
तब इन्द्र ऐरावत पे आके, प्रभो को भी ले गया।
शुभ न्हवन मेरु पर कराया, हुआ तव उत्सव नया।।3।।

शुभ नाग लक्षण दाएँ पद में, इन्द्र ने देखा तभी।
तब नाम पारस बोलकर, जयकार शुभ कीन्हे सभी।।
युवराज पारस सैर करने को, सघन वन में गये।
जाके वहाँ देखे प्रभु में, विशद कई अचरज नये।।4।।

पञ्चाग्नि तप में जीव जलते, देखकर प्रभु ने कहा।
रे तापसी ! जीवों को अग्नि, में जलता जा रहा।।
लेकर कुल्हाड़ी तापसी ने, लक्कड़े फाड़े सभी।
अध जले तब नाग निकले, लक्कड़ों से वह सभी।।5।।

नवकार नागों को सुनाया, प्रभु ने यह जानिए।
धरणेन्द्र व पद्मावति हुए, आप यह सच मानिए।।
संसार की यह दशा लखकर, प्रभु संयम धर लिए।
तब पौष एकादशी कृष्णा, सब परिग्रह तज दिए।।6।।

धनदत्त के गृह क्षीर का, आहार प्रभु पारस लिये।
देवों ने आकर पञ्च आश्चर्य, उस समय आकर किये।।
जब सघन वन में ध्यान करते, थे प्रभु यह मानिए।
तब धूमकेतु देव ने, उपसर्ग कीन्हा मानिए।।7।।



की धूल अग्नि पत्थरों की, वृष्टि आके देव ने।।
तब ध्यान आतम का किया था, पार्श्व प्रभु जिनदेव ने।।
अहिक्षेत्र में यह हुई घटना, आप यह सुन लीजिए।
जिन पार्श्व प्रभु का वहाँ जाकर, आप दर्शन कीजिए।।8।।
उपसर्ग वह धरणेन्द्र, पद्मावति ने टाला तभी।
जयकार करने लगे सुर-नर, प्रभु की आके सभी।।
शुभ चैत कृष्णा चौथ प्रभु जी, ज्ञान केवल पा लिए।
तव इन्द्र आये सौ वहाँ पर, ढ़ोक चरणों में दिए।।9।।
कर समवशरण रचना निराली, महत् उत्सव भी किया।
ॐकार ध्वनि में पार्श्व ने, संदेश मुक्ति का दिया।।
सम्मेदगिरि पहुँचे वहाँ से, मोक्ष पाए जिन प्रभो !।
श्रावण सुदी साते को जिनवर, पा गये शिवपद विभो !।।10।।
है प्रार्थना इतनी प्रभु, अब शरण हमको दीजिए।
हे नाथ ! अपने भक्त को भी, आप सा कर लीजिए।।
विश्वास है इतना प्रभु न, भक्त को ठुकराओगे।
अतिशीघ्र मुक्तिपथ दिखाकर, सिद्धि तुम दिलवाओगे।।11।।
जिनबिम्ब जग में पार्श्व प्रभु के, छाए हैं कई श्रेष्ठतम।
शुभ दर्श करके पार्श्व जिन का, नाश होता मोहतम।।
हम भावना भाते स्वयं, जिनदेव का दर्शन मिले।
मेरे हृदय में पुष्प श्रद्धा, का विशद अनुपम खिले।।12।।

दोहा- चालीसा जिन पार्श्व का, पढ़े जो चालिस बार।
सुख शांति सौभाग्य पा, होय विशद भव पार।।

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

# महावीर चालीसा

दोहा- सिद्ध और अरिहंत का, है सुखकारी नाम।
आचार्योपाध्याय साधु के, करते चरण प्रणाम।।
वर्धमान सन्मति तथा, वीर और अतिवीर।
महावीर की वन्दना, से बदले तकदीर।।

*चौपाई*

जय-जय वर्धमान जिन स्वामी, शांति मनोहर छवि है नामी।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।
पुरुषोत्तम विमान से आए, माँ को सोलह स्वप्न दिखाए।
राजा सिद्धारथ कहलाए, कुण्डलपुर के भूप कहाए।।
माता त्रिशला के उर आए, नाथ वंश के सूर्य कहलाए।
षष्ठी शुक्ल आषाढ़ कहाए, गर्भ में चयकर के प्रभु आए।।
चैत शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभु ने जिस दिन पाया।
नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, पग में चिह्न शेर का पाया।।
वर्द्धमान तब नाम बताया, जयकारे से गगन गुँजाया।
पलना प्रभु का मात झुलाये, ऋद्धिधारी मुनिवर आए।।
मन में प्रश्न मुनि के आया, जिसका समाधान न पाया।
देख प्रभु को हल कर लीन्हा, सन्मति नाम प्रभु का दीन्हा।।
मित्रों संग क्रीड़ा को आए, सभी वीरता लख हर्षाए।
देव परीक्षा लेने आया, नाग का उसने रूप बनाया।।
भागे मित्र सभी भय खाये, किन्तु प्रभु नहीं घबराए।
पैर की ठोकर सिर में मारी, देव तभी चीखा अति भारी।।
उसने चरणों ढ़ोक लगाया, वीर नाम प्रभु का बतलाया।
युवा अवस्था प्रभु जी पाए, करके सैर नगर में आए।।
हाथी ने उत्पात मचाए, मद उसका प्रभु पूर्ण नशाए।
प्रभु अतिवीर नाम को पाए, सभी प्रशंसा कर हर्षाए।।



बाल ब्रह्मचारी कहलाए, तीस वर्ष में दीक्षा पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, तब मन में वैराग्य समाया।।
माघ कृष्ण दशमी दिन पाया, नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन गाया।
तृतीय भक्त प्रभुजी पाए, दीक्षा धर एकाकी आए।।
स्वर्ण रंग प्रभु का शुभ पाया, सप्त हाथ अवगाहन पाया।
प्रभु नाथ वन में फिर आए, साल तरु तल ध्यान लगाए।।
कामदेव रति वन में आए, जग को जीता ऐसा गाए।
रति ने प्रभु का दर्शन पाया, कामदेव से वचन सुनाया।।
इन्हें जीत पाए क्या स्वामी, नग्न खड़े जो शिवपथ गामी।
प्रभु को ध्यान से खूब डिगाया, किन्तु उन्हें डिगा न पाए।।
कामदेव पद शीश झुकाया, महावीर तव नाम बताया।
दशें शुक्ल वैसाख बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।।
ऋजुकूला का वीर बताया, शाल वृक्ष वन खण्ड कहाया।
समवशरण इक योजन जानो, योग निवृत्ति अनुपम मानो।।
कार्तिक कृष्ण अमावस पाए, महावीर जिन मोक्ष सिधाए।
प्रातःकाल रहा शुभकारी, ग्यारह गणधर थे मनहारी।।
गौतम गणधर प्रथम कहाए, नाम इन्द्रभूति शुभ पाए।
गणधरजी ने ध्यान लगाया, सायं केवलज्ञान जगाया।।
प्रभु शासन नायक कहलाए, श्रेष्ठ सिद्धान्त लोक में छाए।
प्रतिमाएँ हैं अतिशयकारी, वीतरागमय मंगलकारी।।
चाँदनपुर महिमा दिखलाए, टीले में गौ दूध झराए।
ग्वाले के मन अचरज आया, उसने टीले को खुदवाया।।
वीर प्रभु के दर्शन पाए, लोग सभी मन में हर्षाए।
पावागिरि ऊन कहलाए, वहाँ भी कई अतिशय दिखलाए।।
यही भावना रही हमारी, जनता सुखमय होवे सारी।।
चरण कमल में हम सिरनाते, 'विशद' भाव से शीश झुकाते।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़ने से सुख-शांति हो, मिले मोक्ष का द्वार।।

# सहस्रनाम-चालीसा

दोहा- अर्हंत्सिद्धाचार्य पद, उपाध्याय जिन संत।
सहस्रनाम जिनराज के, नमूँ अनन्तानन्त।।

*(चौपाई छन्द)*

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका नहीं है कोई अंत।
जिसके मध्य है लोकाकाश, भरा है छह द्रव्यों से खास।।
ऊर्ध्व अधो अरु मध्य प्रधान, तीन लोक कहते भगवान।
मध्य लोक में जम्बू द्वीप, मेरु जम्बू वृक्ष समीप।।
जम्बू द्वीप घातकी खण्ड, पुष्करार्द्ध भी रहा अखण्ड।
भरतैरावत और विदेह, क्षेत्र कर्म भूमि हैं ऐह।
आर्य खण्ड में रहते आर्य, ऐसा कहते जैनाचार्य।।
उत्सर्पण अवसर्पण काल, भरतैरावत रहे त्रिकाल।
दुषमा सुषमा काल विशेष, जिसमें चौबीस बनें जिनेश।
जिन विदेह में रहे त्रिकाल, विद्यमान रहते हर हाल।।
जो भी पुण्य कमाय अतीव, उसका फल वह पावे जीव।
भव्य भावना सोलह भाय, जीव वही यह पदवी पाय।।
तीर्थंकर प्रकृति का बंध, जो कषाय करते हैं मंद।
सम्यक् दृष्टि जीव महान, केवली द्विक के पद में आन।।
मिलता है जब कोई निमित्त, भोगों से उठ जाता चित्त।
भव भोगों से होय विरक्त, शुभ भोगों में हो अनुरक्त।।
सत् संयम पाते शुभकार, लेते महाव्रतों को धार।
कर्म निर्जरा करें महान, निज आतम का करके ध्यान।।
क्षायक श्रेणी को फिर पाय, अपना केवलज्ञान जगाय।
त्रिभुवन चूड़ामणि बन जाय, तीर्थंकर के गुण प्रगटाय।।
क्षायिक नव लब्धि कर प्राप्त, बनते जिन तीर्थंकर आप्त।



चिन्तित चिंतामणि कहलाय, कल्पतरू फल वांछित दाय।।
बनते समवशरण के ईश, इन्द्र झुकाते पद में शीश।
अनन्त चतुष्टय पाते नाथ, पञ्च कल्याणक भी हों साथ।।
तीन गति से आते जीव, पुण्य कमाते वहा अतीव।
दिव्य देशना सुनके लोग, मुक्ति पथ का पाते योग।।
भक्ति को आते शत् इन्द्र, सुर-नर-पशु आते अहमिन्द्र।
परम पिता जगती पति ईश, ऋद्धिधर हे नाथ ! ऋशीष।।
युग दृष्टा प्रभु रहे महान, तीर्थोन्नायक हैं भगवान।
वाणी में जैनागम सार, अमृत रस की बहती धार।।
भक्त आपके आते द्वार, करते हैं निशदिन जयकार।
करने से प्रभु का गुणगान, होती है कर्मों की हान।।
महिमा गाकर के सब देव, हर्षित होते सभी सदैव।
हम भी महिमा गाते नाथ, चरणों झुका रहे हैं माथ।।
विविध नाम से है गुणगान, सहस्रनाम स्त्रोत महान।
सार्थक नाम मयी पाठ, पढ़ने से हों ऊँचे ठाठ।।
सुख-शांति का है आधार, प्राणी पाते जग उद्धार।
सहस्रनाम कहलाए स्त्रोत, विशद धर्म का है जो स्रोत।।
श्रीमान् आदि सहस्र नाम, को करते हम सतत् प्रणाम।
पाठ किए हो ज्ञान प्रकाश, विशद गुणों का होय विकास।।
वन्दन करते हम शत् बार, पाने भवोदधि से पार।
मेरा हो आतम कल्याण, पावें हम भी पद निर्वाण।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, सहस्रनाम का पाठ।
पढ़ते हैं जो भाव से, होते ऊँचे ठाठ।।
ऋद्धि-सिद्धि आनन्द हो, शांति मिले अपार।
'विशद' ज्ञान पाके मिले, मुक्ति वधू का पार।।

# महामृत्युञ्जय चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
मृत्युञ्जय हम पूजते, चरणों में धर शीश।।

*चौपाई*

कर्म घातिया चार नशाए, अतः आप अर्हत् कहलाए।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, दर्शन ज्ञान-वीर्य सुख पाए।।
दोष अठारह पूर्ण नशाए, छियालिस गुणधारी कहलाए।
चौतिस अतिशय जिनने पाए, प्रातिहार्य आठों प्रगटाए।।
समवशरण शुभ देव रचाए, खुश हो जय-जयकार लगाए।
समवशरण की शोभा न्यारी, उससे भी रहते अविकारी।।
देव शरण में प्रभु के आते, चरण-कमल तल कमल रचाते।
सौ योजन सुभिक्षता होवे, सब प्रकार की आपद खोवे।।
भक्त शरण में जो भी आते, चतुर्दिशा से दर्शन पाते।
गगन गमन प्रभु जी शुभ पाते, प्राणी मैत्री भाव जगाते।।
प्रभो ! ज्ञान के ईश कहाए, अनिमिष दृग प्रभु के बतलाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाते, सुर-नर-पशु सुनकर हर्षाते।।
मृत्युञ्जय जिन प्रभु कहाते, जीत मृत्यु को शिव पद पाते।
ज्ञान अनन्त दर्श सुख पाते, वीर्य अनन्त प्रभु प्रगटाते।।
सिद्ध सनातन आप कहाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
अनुपम शिवसुख पाने वाले, ज्ञान शरीरी रहे निराले।।
नित्य निरंजन जो अविनाशी, गुण अनन्त की हैं प्रभु राशि।
तुमने उत्तम संयम पाया, जिसका फल यह अनुपम गाया।।
रत्नत्रय पा ध्यान लगाया, तप से निज को स्वयं तपाया।
कई ऋद्धियाँ तुमने पाईं, किन्तु वह तुमको न भाईं।।
उनसे भी अपना मुख मोड़ा, मुक्ति वधू से नाता जोड़ा।



सहस्र आठ लक्षण के धारी, आप बने प्रभु मंगलकारी।।
सहस्र आठ शुभ नाम उपाए, सार्थक सारे नाम बताए।
नाम सभी शुभ मंत्र कहाए, जो भी इन मंत्रों को ध्याए।।
सुख-शांति सौभाग्य जगाए, अपने सारे कर्म नशाए।
विषय भोग में नहीं रमाए, रत्नत्रय पा संयम पाए।।
तीन योग से ध्यान लगाए, निज स्वरूप में वह रम जाए।
संवर करे निर्जरा पावे, अनुक्रम से वह कर्म नशावे।।
बीजाक्षर भी पूजें ध्यावें, जिनपद में नित प्रीति बढ़ावें।
कभी मंत्र जपने लग जाए, कभी प्रभु को हृदय बसाए।।
स्वर व्यंजन आदि भी ध्याए, अतिशय कर्म निर्जरा पाए।
पुण्य प्राप्त करता शुभकारी, शिवपथ का कारण मनहारी।।
इस भव का सब वैभव पाए, उसके मन को वह न भाए।
तजकर जग का वैभव सारा, जिनने भेष दिगम्बर धारा।।
वह बनते त्रिभुवन के स्वामी, हम भी बने प्रभु अनुगामी।
यही भावना रही हमारी, कृपा करो हम पर त्रिपुरारी।।
मृत्युञ्जय हम भी हो जाएँ, इस जग में अब नहीं भ्रमाएँ।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का नाथ सहारा।।
शिव पद जब तक ना पा जाएँ, तब तक तुमको हृदय सजाए।
नित-प्रति हम तुमरे गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
सुत सम्पत्ति सुगुण पा, होवे इन्द्र समान।
मृत्युञ्जय होके 'विशद', पावे पद निर्वाण।।

* * *

# श्रावक प्रतिक्रमण

**प्रतिक्रमण करता प्रभु, पाप पंक हो नाश।**
**विशद ज्ञान मैं पा सकूँ, मम् हो मुक्ति वास।।**

हे जिनेन्द्र ! हे देवाधिदेव ! हे वीतरागी सर्वज्ञ ! हितोपदेशी ! हे अरिहन्त प्रभु ! मैं प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ। पापों के प्रक्षालन के लिए, पापों से मुक्त होने के लिए, आत्म उत्थान के लिए, आत्म जागरण के लिए अब मैं प्रतिक्रमण करूँगा। (इस प्रकार प्रतिज्ञा करके एक आसन पर बैठकर प्रतिक्रमण प्रारम्भ करें।)

हे जिनेन्द्र ! हे परमेश्वर ! हे परमात्मा ! मैं पापी हूँ, पामर हूँ, दुष्ट हूँ, दुराचारी हूँ, मायावी हूँ, लोभी हूँ, मूढ़ हूँ, सर्व दुर्गुणों से सम्पन्न हूँ। मैंने मन, वचन, काय की दुष्टता से न जाने कितने पाप किये, कितने अपराध किये? आह-आह ! आप तो केवलज्ञानी हैं, घट-घट अन्तर्यामी हैं। यदि मैं आपसे अपने पापों को छुपाना चाहूँ तो क्या छुपा सकता हूँ? नहीं, नहीं....। कदापि नहीं। आपसे अपने पापों को छुपाना तो वैसे ही है जैसे कपास के ढेर में अंगार को छुपाना। हे प्रभु ! जन्म-जन्मान्तरों से संग्राहित इन पापों के प्रक्षालन के लिए मैं प्रतिक्रमण करता हूँ। आलोचना करता हूँ। स्वयं की निन्दा और गर्हा करता हूँ।

मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूँ। सभी जीव मुझे क्षमा प्रदान करें। सभी जीवों से मेरी मित्रता है। किसी भी जीव से मेरी शत्रुता नहीं है। मैं बार-बार सभी जीवों से हाथ जोड़कर क्षमा चाहता हूँ और सभी जीवों को हृदय से क्षमा करता हूँ। हे भगवन् ! यदि मेरे द्वारा राग और द्वेष से, हर्ष और विषाद से, भय और जुगुप्सा से, रति और अरति से कोई पाप हुआ हो, तो मेरे वे सभी पाप कर्म मिथ्या होवे।

हाय-हाय ! मैंने दुष्ट कर्म किये। हाय-हाय ! मैंने पाप कर्मों का हमेशा चिन्तवन किया। हाय-हाय ! मैंने दुष्ट मर्म भेदक कुत्सित वचन कहे। इस प्रकार मन, वचन, काय की दुष्टता से जाने कितने पाप किये, कितने अपराध किये !

हे प्रभु ! हे विभु ! यदि मुझ छद्मस्थ के द्वारा कषाय के वशीभूत होकर प्रमाद से, अज्ञान से, उठने से, बैठने से, बोलने से, खाने से, खांसने से, छींकने से, जम्हाई लेने से, श्वासोच्छवास से, अंगोपांग से, हलन-चलन से, एकेन्द्रिय, दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवों को मैंने कष्ट दिया हो, अन्य से दिलाया हो, देने वालों को अच्छा कहा हो तो वे मेरे सारे दुष्कर्म मिथ्या होवें।



हे प्रभु ! हे विभु ! यदि मेरे द्वारा ग्रहण किये हुये व्रतों में दोष लगे हों। जिनेन्द्र भगवान की अवहेलना हुई हो। सम्यक्दर्शन की असादना हुई हो। रात्रि भोजन त्याग व्रत में दूषण लगा हो। मैंने पानी छानकर ना पिया हो। जाने-अनजाने में जीवों की हिंसा की हो। हँसी-हँसी में झूठ बोला हो। जिसके कारण किसी जीव को पीड़ा हुई हो, किसी की गिरी हुई, भूली हुई, रखी हुई वस्तुओं की चोरी की हो। दूसरों की माता-बहनों को बुरी दृष्टि से देखा हो, पर पुरुष की ओर बुरी निगाह से निहारा हो। जरूरत से ज्यादा वस्तुओं को संग्रहित किया हो या करने की इच्छा की हो तो मेरे वे सारे पाप कर्म मिथ्या होवें। हे परमात्मा ! मैं अपने पापों का प्रायश्चित्त करता हूँ। अपने अपराधों को स्वीकार करता हूँ। अपने पापों से मुक्त होने के लिए पंच परमेष्ठी भगवान के श्री चरणों में बारम्बार नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार। ..... नौ बार णमोकार मंत्र।

(इसके बाद कुछ क्षणों तक ॐकार की ध्वनि के माध्यम से मन वीणा को झंकृत करें।

## णमो अरिहंताणं

अरिहन्तों को नमस्कार हो। जो पंच कल्याणकों सहित हैं। चौंतीस अतिशयों से युक्त हैं, अनन्त चतुष्टय के धनी हैं, जो वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी, रत्नत्रय से मण्डित तथा चार घातिया कर्मों के नाशक हैं। ज्ञानी, भेदज्ञानी, परमज्ञानी, लोकोद्धारक भी तो आप ही हैं। कहाँ तक कहूँ आपकी महिमा? ये तो कथन से परे हैं। मैं तो क्या? स्वर्ग के देव भी साक्षात् बृहस्पति भी आपकी सम्पूर्ण महिमा को न गा सका।

हे प्रभु ! हे विभु ! राजा, महाराजा, अधिराजा, नारायण, प्रतिनारायण, बलभद्र, चक्रवर्ती, इन्द्र, ऋषि, मुनि, यति, अनगार आदि सौ इन्द्रों से वन्दित लोकाधिनायक वृषभादि महावीर पर्यन्त समस्त भूत-भविष्यत्-वर्तमानकाल सम्बन्धित अरिहंतों को, बारम्बार नमस्कार, नमस्कार..... नौ बार णमोकार।

## णमो सिद्धाणं

सिद्धों को नमस्कार हो, कैसे हैं वे सिद्ध? क्या है उनका स्वरूप? जो अनन्त स्वरूपी हैं, अतिन्द्रिय हैं, अनुपम हैं, आत्मस्थ हैं, अनबद्ध हैं, तिष्ठित हैं, कृतकृत्य हैं, सिद्धि साध्य हैं, लोकाग्रस्थित हैं, तप से सिद्ध हैं, नय से सिद्ध हैं, संयम से सिद्ध हैं, चारित्र से सिद्ध हैं, ज्ञान से सिद्ध हैं और दर्शन से सिद्ध हैं ऐसे सिद्धालय में स्थित अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठियों को सिर झुकाकर बारम्बार नमस्कार नमस्कार ..... नौ बार णमोकार।

## णमो आइरियाणं

आचार्यों को नमस्कार हो। कैसे हैं वे आचार्य? क्या है उनका स्वरूप? दो द्वादशांगमय सूत्र रूपी समुद्र के पारगामी, ज्ञान-ध्यान और तप में लवलीन, बाह्याभ्यन्तर परिग्रह से रहित, जितेन्द्रिय, शुद्ध चारित्र व छत्तीस गुणों से युक्त, पंचाचार को स्वयं पालने वाले व शिष्यों से उनका आचरण कराने वाले, स्वसमय और परसमय में पारंगत, मेरु के समान निश्चल, पृथ्वी के समान सहनशील, समुद्र के समान गम्भीर, निर्मल बुद्धि वाले, निर्दोष षट् आवश्यकों को पालने वाले, सिंह के समान पराक्रमी, गज के समान स्वाभिमानी, आकाश के समान निर्लेप, सौम्यमूर्ति, देश-कुल जाति से शुद्ध, संघ में शिक्षा दीक्षा व प्रायश्चित्त देने में कुशल ऐसे आचार्यों के चरणों में बारम्बार नमस्कार, नमस्कार..... नौ बार णमोकार।

## णमो उवज्झायाणं

उपाध्यायों को नमस्कार हो। कैसे हैं वे उपाध्याय? क्या है उनका स्वरूप? जो पच्चीस मूलगुणों से युक्त हैं, मोक्ष मार्ग में स्थित हैं। मोक्ष के इच्छुक मुनीश्वरों को उपदेश देने में प्रवीण, व्रतों की रक्षा करने में तत्पर, द्वादशांगरूपी समुद्र में अवगाहन करने वाले, सम्पूर्ण शास्त्रों के पाठी, ज्ञानदाता परम आराध्य, उपाध्याय परमेष्ठी के चरणों में बारंबार नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार..... नौ बार णमोकार।

## णमो लोए सव्व साहूणं

लोक के समस्त समकित साधुओं को नमस्कार हो। कैसे हैं वे साधु? क्या है उनका स्वरूप? जो विषय आशाओं से रहित, आरम्भ और परिग्रह से दूर, ज्ञान-ध्यान में लीन, व्रत व ध्यान रूपी अग्नि में कर्मों को नाश करने में प्रवीण, षट् आवश्यक कर्मों में सावधान, शुद्ध आत्मा के स्वरूप की साधना करने वाले, मन को जीतने वाले, गुणरूपी कवच को धारण करने वाले, सूर्य के समान तेजस्वी, चन्द्रमा के समान शीतल, आकाश के समान निर्लेप, परिषह और उपसर्गों को सहन करने वाले, अट्ठाईस मूलगुणों का निरतिचार पालन करने वाले, मोक्ष के साधक, पूज्य मुनीश्वरों के चरणों में मनसा-वाचा-कर्मणा बारंबार नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार..... नौ बार णमोकार।

(अब आत्मचिन्तन करते हुए आत्मालोचन करें।)

प्रिय आत्मन् ! अनादिकाल से इस संसार में रहते हुए तुमने विगत में क्या लिया? कितने-कितने जन्मों को धारण किया? कैसे-कैसे कष्टों को सहन किया? कौन-कौन से कुकर्म किये? सोचो.....



...सोचो क्या कभी इन कष्टों से मुक्त होने की कोशिश की? नहीं.....। क्या कभी अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने की कोशिश की? नहीं..... क्या कभी शरीर के देवालय में कैद परमात्मा को मुक्त कराना चाहा? नहीं..... नहीं..... कदापि नहीं.....। तो फिर कब तक भटकते रहोगे इस संसार अंधकार में, कब तक सहते रहोगे इस संसार की पीड़ाएँ? उठो, चलो और कर लो अपने पापों को स्वीकार। क्योंकि पापों की स्वीकृति ही प्रतिक्रमण है और प्रतिक्रमण से ही कटता है संसार।

बस-बस जरूरत है, पापों की स्वीकृति। इसलिए कर लो स्वीकार और सुना दो परमात्मा को अपनी व्यथायें/कथायें।

हे पतित पावन ! हे पतितोद्धारक ! मैंने अनंतकाल तक निगोद पर्याय में जन्म-मरण के दुःखों को सहन किया। वहाँ की पीड़ाओं को तड़प-तड़पकर सहन किया। तत्पश्चात् मैंने पृथ्वीकायिक पर्याय में जन्म लेकर हजारों वर्षों तक दुःखों का सामना किया। कई वर्षों के बाद मैंने जलकायिक पर्याय धारण की। इस योनि में भी मुझे विविध प्रकार की पीड़ाओं को सहना पड़ा। वहाँ के कष्टों को भोगना पड़ा। क्रमशः सीढ़ी-दर-सीढ़ी मैं आगे बढ़ता गया। इसी क्रम से मुझे अग्निकायिक पर्याय मिली। जिस पर्याय में मैं स्वयं जलता रहा और दूसरों को जलाता रहा, वायुकायिक जीव की पर्याय में मैं स्वयं चलता रहा और दूसरों को थपेड़ों से कष्ट पहुँचाता रहा। सतत् चलता रहा। तत्पश्चात् स्थावर काय की अन्तिम पर्याय के रूप में वनस्पतिकायिक का दामन सम्हाला। मैंने वनस्पतिकायिक में जन्म लिया। जहाँ पर मुझे सर्दी-गर्मी और वर्षा की पीड़ाओं को एक ही स्थान पर खड़े-खड़े सहना पड़ा। हे प्रभु ! न जाने इस स्थावर काय की पर्याय में मैंने कितने-कितने कष्ट सहे? कैसे-कैसे दुःखों को सहन किया?

हे नाथ ! इस अनाथ ने स्थावर काय से मुक्त होने के बाद त्रसकाय की पर्याय को प्राप्त किया। जहाँ पर मैंने द्वीन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चौइन्द्रिय की काय को धारण कर अनेकानेक कष्ट उठाये। जिन कष्टों के भार से पीड़ित हो, मेरी आत्मा सदा दुःखों को सहती रही।

हे देवाधिदेव ! पापों से पीड़ित होते हुए मैंने फिर असैनी पंचेन्द्रिय तिर्यंच की पर्याय को ग्रहण किया। जहाँ पर इन्द्रियाँ तो मिली, पर मन न मिला। जिसके बिना मैं हेय-उपादेय का ज्ञान न कर सका। इसी कारण से मुझे इस पर्याय में सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की पहचान न हो सकी और मैं संसार में भटकता रहा। **'जीवों- जीवस्य भोजनं'** का सूत्र रटता रहा। इस पर्याय से मुक्त होने के बाद भी मैंने मनन न किया। नमन न किया। बस अपने से शक्तिशाली सिंहादिक क्रूर प्राणियों का शिकार हुआ। कभी लोगों के द्वारा छेदा गया, भेदा गया, अनंत शक्तिसाली होने के बावजूद भी मैं अपनी शक्ति से विस्मृत रहा। जिसके कारण मुझे सदियों-सदियों तक परतंत्र रहना पड़ा। इसी तरह से मैंने इस तिर्यंच की पर्याय में नाना प्रकार के कष्टों को सहन किया।

हे परम पिता ! हे परमात्मा ! मैंने न जाने किस पुण्य कर्म के उदय से अत्यन्त दुःखदायी नरक से निकल कर मनुष्य की पर्याय को प्राप्त किया। जहाँ पर मुझे प्रारम्भ से ही नौ माह तक गर्भ की पीड़ाओं को सहन करना पड़ा। जन्म समय की पीड़ाओं का वर्णन करना तो मेरे द्वारा शक्य ही नहीं है। इतनी पीड़ाओं को सहने के बाद भी मेरी पीड़ाओं का अन्त न हो सका। सच है परमात्मा, मैंने अपनी बाल्यावस्था यूँ ही अज्ञानता में व्यतीत कर दी और धीरे-धीरे चलते हुए यौवन की दहलीज पर पैर रखा। यौवन, आह यौवन ! यौवन आते ही मैं भोगाकांक्षा की पूर्ति के लिए उन्मत हो दौड़ पड़ा और अपने हीरे से भी बहुमूल्य यौवन को नष्ट कर दिया। धीरे-धीरे काल-कराल को साथ ले जीवन के द्वार पर बुढ़ापे ने दस्तक दी। बुढ़ापा, हाय, हाय, बुढ़ापा। नहीं, नहीं ये बुढ़ापा नहीं, बुलावा है। मौत का निमंत्रण है। मेरे गमन का और मौत के आगमन का समय है। बस, बस मुझे अब मेरा काल दिखाई दे रहा है। हे परमात्मा ! ये बुढ़ापा अत्यन्त दुःखदायी है। हे प्रभु ! ऐसा दुःखदायी बुढ़ापा किसी को न देना; क्योंकि मैंने अपनी इन चर्म चक्षुओं से बुढ़ापे के दुःखों को देखा है। इस प्रकार के बचपन, यौवन और वृद्धापन इन तीनों अवस्थाओं में मैंने अनेक कष्ट उठाये। इस संसार में सुखाभास की मृग-मरीचिका में भटक कर मैंने अपने दुर्लभ मनुष्य जन्म को यूं ही व्यर्थ गवाँ डाला।

हे प्रभु ! मैंने मनुष्य जन्म में ही हुई अकाम निर्जरा के बलबूते देव गति में जन्म लिया। जहाँ पर कर्मों के विपाकानुसार ज्योतिष्क, व्यन्तर और भवनवासी देवों की पर्याय धारण की। जहाँ पर मिथ्यात्व से ग्रसित होने के कारण मैंने वीतरागी अरिहन्त देव की वन्दना नहीं की, और की तो कुलदेवता मानकर। मैं वहाँ के भोग में, इन्द्रिय सुखों में आपाद कण्ठ डूबा रहा। विषयों की अग्नि में जलता रहा और मेरा काल भी मुझे भोगों की मदिरा पिला-पिलाकर छलता रहा और जब मेरे मरण का काल करीब आया तो मैं रोया-चीखा-चिल्लाया। परन्तु काल के गाल से मुझे कोई बचा न सका। मैंने इस भवनत्रिक की पर्याय में भोगों में आसक्त हो, न जाने कितने पाप किये। जिनके कारण मैंने कर्मों का आस्रव किया और सम्यक्दर्शन के बिना दुःखी रहा। अपने से श्रेष्ठ सम्यक्दृष्टि देवों की विभूति, ऋद्धि-सिद्धियों को देखकर मानसिक वेदना से प्रतिपल घायल रहा और पूर्व में किए हुए निदानबंध के कारण मैं मरकर पुनः एकेन्द्रिय वृक्षादि की पर्याय में उत्पन्न हुआ। इस तरह से मैंने कई कल्प काल तक संसार में पंच परावर्तन करते हुए अनेकानेक दुःख उठाए।

हे प्रभु ! विभु ! हे करुणा के सागर ! बस-बस अब मैंने देख लिए इस चतुर्गति संसार के दुःख, सुना दी मैंने अपनी काली-कलुषित कहानी। हे प्रभु! अब मुझसे ये



पीड़ाएँ सही नहीं जाती। अब मुझसे यह कर्मों का बोझ ढोया नहीं जाता। अब मुझसे ये पापों का नर्तन देखा नहीं जाता। हे प्रभु ! रक्षा करो, रक्षा करो। अब मैं आपकी शरण हूँ नाथ। मानता हूँ, मानता हूँ, मैंने पाप किये। मैंने अपराध किये। मैंने स्वयं की बजाय दूसरों की आलोचना की। आपकी अवहेलना की। व्रत-नियम-संयम को जड़ की क्रिया माना। पुण्य को संसार का कारण कहकर उसे हेय बताया और अहर्निश पाप क्रियाओं से ही रत रहा। मैं ऐसा मानकर अपने संसार को बढ़ाता रहा। पर अब मैं इस दुःखमयी संसार से मुक्त होना चाहता हूँ। आपकी तरह शुद्ध बुद्ध बनना चाहता हूँ। इसलिए अब अशरण संसार की शरण छोड़कर आपकी शरण में आया हूँ। प्रभु ! मुझे अपनी मौन करुणा का सहारा दो नाथ। मुझे मुक्ति की युक्ति का इशारा दो ईश्वर। मुझे इसके अलावा और कुछ नहीं चाहिए, मैंने आपको पा लिया अर्थात् सब कुछ पा लिया प्रभु।

हे दया के सागर ! ये तन-मन यौवन और जीवन की हर एक आती-जाती श्वांस आपको समर्पित है। मेरे शरीर का रोम-रोम आपके गुणानुवाद के लिए आतुर है, पुलकित है, प्रफुल्लित है। हे करुणानिधान ! अब तो करुणा करो। इस दुखिया के दुःखों को दूर करो नाथ ! इतने कठोर न बनों प्रभु ! थोड़े नरमाओं मेरे स्वामी। नहीं तो मैं कैसे मानूँगा कि भक्त की भक्ति से पाषाण पिघल जाता है। आप पाषाण तो नहीं हैं आप तो हमारे इष्ट आराध्य परमदेव परमात्मा हैं। बस अब मेरी आत्मा को परमात्मा बना दो नाथ, नहीं तो मैं कैसे मानूँगा कि आप करुणासागर हैं, करुणानिधान हैं, करुणाकर हैं। मुझ पर करुणा करो करुणाकर। मुझ पर दया करो दया के सागर। हम पतितों का उद्धार करो। हे पतितोद्धारक ! हमें इस संसार से पार करो। परमात्मा हमें कर्मों के बन्धन से मुक्त करो। हे दीनबन्धु ! इस तरह अपनी निन्दा, गर्हा और आत्मावलोचन करते हुए परम आराध्य देव-शास्त्र-गुरु के श्री चरणों में सम्यक् रूपेण नमस्कार-नमस्कार-नमस्कार ..... नौ बार णमोकार।

(अब प्रतिक्रमण में लगे हुए दोषों की क्षमायाचना करो)

हे प्रभु ! हे विभु ! यदि मुझ छद्मस्थ के द्वारा इस प्रतिक्रमण में, अज्ञानतावश, प्रमाद से, प्रतिक्रमण के उच्चारण से, मन की चंचलता से, इधर-उधर देखने से, शरीर के हलन-चलन से, श्वासोच्छवास से, छींकने से, खांसने से, जम्हाई लेने से कोई अपराध हुआ हो, कुछ त्रुटि हो गई हो, तो आप मुझे अबोध, अज्ञानी समझकर क्षमा करना-क्षमा करना-क्षमा करना। आपके श्री चरणों में पुनः-पुनः नमस्कार-नमस्कार-नमस्कार..... नौ बार णमोकार।

●●●

# सामायिक करने की प्रारंभिक विधि

दिग्वंदना

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करके नीचे लिखा हुआ पढ़कर प्रतिदिशा में तीन आवर्त व एक शिरोनति करना चाहिये।)

1. ।। पूर्व की ओर मुख करके पढ़ें।।

पूर्व दिशा विदिशा में अरहंत, सिद्ध, साधु, केवलि, कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय जहाँ-जहाँ हों उनको मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार होवे।

2. ।। दक्षिण की ओर मुख करके पढ़ें।।

दक्षिण दिशा विदिशा में अरहंत सिद्ध साधु, केवलि, कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय जहाँ-जहाँ हो उनको मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार होवे।

3. ।। पश्चिम की ओर मुख करके पढ़े।।

पश्चिम दिशा विदिशा में अरहंत, सिद्ध, साधु, केवलि, कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय जहाँ-जहाँ हो उनको मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार होवे।

4. ।। उत्तर की ओर मुख करके पढ़ें।।

उत्तरदिशा विदिशा में अरहंत, सिद्ध, साधु, केवलि, कृत्रिमा-कृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय जहाँ-जहाँ हो उनको मेरा मन से, वचन से, काय से बारम्बार नमस्कार होवे।

**सामायिक करने की दृढ़ प्रतिज्ञा**

हे भगवान ! मैं आपको नमस्कार करता हुआ संध्याकाल की देव वंदना में सामायिक स्वीकार करता हूँ। अर्थात् सामायिक काल पर्यन्त* (इस समय तक) किसी प्रकार का आरम्भ नहीं करूँगा और न इस स्थान को छोड़कर स्थानांतर गमन करूँगा तथा जो मेरे शरीर पर परिग्रह है, उससे निर्ममत्व होता हुआ, अन्य सब परिग्रहों को छोड़ता हूँ।

* (यहाँ समय की मर्यादा कर लेना चाहिये।)



# सामायिक पाठ

*-आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज*

**तीन लोक के सब जीवों से, मेरा मैत्री भाव रहे।**
**गुणी जनों को देख हृदय में, प्रेम की सरिता नित्य बहे॥**
**दुःखी प्राणियों को लखकर के, उर में करुणा भाव जगे।**
**हो माध्यस्थ भाव उनके प्रति, अविनय में जो जीव लगे॥1॥**
**हे जिनेन्द्र! तव कृपा प्राप्त कर, मुझमें ऐसी शक्ति जगे।**
**ज्यों तलवार म्यान से होती, भिन्न आत्मा मुझे लगे॥**
**है अनन्त शक्तिशाली जो, सर्व दोष से हैं निर्मूल।**
**तन से चेतन भिन्न करूँ मैं, क्षमता यह जागे अनुकूल॥2॥**
**हे जिनेन्द्र! मेरे मन में शुभ, समता का संचार बहे।**
**पर पदार्थ में न ममत्व हो, निर्ममत्व का भाव रहे॥**
**वन में और भवन सुख दुःख में, शत्रु मित्र का हो संयोग।**
**या वियोग हो जाए स्वजन का, धारें समता का ही योग॥3॥**
**हे मुनीश! तम के नाशक हो, दीपक सम तव दोय चरण।**
**लीन हुए सम या कीलित सम, अविचल मैं कर सकूँ वरण॥**
**स्थिर रहें उकेरे जैसे, मंगलमय शुभ मूर्ति समान।**
**हों आसीन हृदय में मेरे, नित्य करूँ मैं जिन का ध्यान॥4॥**
**हे जिनेन्द्र! मैंने प्रमाद से, इधर उधर कीन्हा संचार।**
**एकेन्द्रिय आदि जीवों का, यदि हुआ होवे संहार॥**
**मले गये या चोट खाये हों, अलग-अलग जो हुए कहीं।**
**दुराचरण वह मिथ्या हो मम्, मैंने जाना उसे नहीं॥5॥**
**हे जिनेन्द्र! मुक्ति मारग के, किया आचरण जो प्रतिकूल।**
**वह कषाय इन्द्रिय विषयों के, वशीभूत हो हुई ये भूल॥**
**लोप हुआ चारित्र शुद्धि का, मुझ दुर्बुद्धि के द्वारा।**
**वह दुष्कृत मिथ्या हो जाए, हे स्वामी! मेरा सारा॥6॥**

हे जिनेन्द्र! मैंने कषाय या, मन वच तन से कीन्हा पाप।
मैं निन्दा आलोचन द्वारा, करता उसका पश्चातापङ्क
ज्यों मंत्रों की शक्ति द्वारा, विष का करता वैद्य विनाश।
भव दुःख के कारण पापों का, त्यों मेरे हो जाए नाशङ्क7ङ्क
हे जिनेन्द्र! चारित्र क्रिया में, अतिक्रम हुआ रहा अज्ञान।
या प्रमाद से हुआ व्यतिक्रम, जिसमें हुई व्रतों की हानङ्क
अतिचार या अनाचार जो, मुझसे हुआ है हे भगवान!
उसकी शुद्धि हेतु करता, प्रतिक्रमण मैं करके ध्यानङ्क8ङ्क
हे जिनेन्द्र! ज्ञानी जन मन की, शुद्धि में क्षति को अतिक्रम।
शीलव्रतों के उल्लंघन को, कहते हैं वह तो व्यतिक्रमङ्क
विषयों में यदि होय प्रवर्तन, उसको कहते हैं अतिचार।
अनाचार अत्याशक्ति को, कहते आगम के अनुसारङ्क 9ङ्क
हे देवी! जिन सरस्वती यदि, मेरे द्वारा हुआ प्रमाद।
वाक्य अर्थ पद मात्रा का जो, किंचित् हीन हुआ उत्पादङ्क
वह अपराध क्षमा हो मेरा, देना हमको करुणा दान।
केवल ज्ञान रूप लब्धि अब, माता हमको करो प्रदान ङ्क 1ङ्क
हे देवी ! जिन सरस्वति तव, मन वाञ्छित फल की दाता।
चिंतामणि सम तुम को वन्दन, तव चरणों में सिर नाताङ्क
बोधि समाधि मुझे प्राप्त हो, परिणामों की हो शुद्धि।
निज स्वरूप की प्राप्ति हो अरु, मोक्ष सौख्य की हो सिद्धिङ्क 11ङ्क
मुनि नायक के वृंदों से जो, नित्य स्मरण योग्य कहे।
सुरपति नरपति जिनकी स्तुति, करने में तल्लीन रहेङ्क
वेद पुराण शास्त्र में गाए, वह मेरे देवाधिदेव।
हृदय कमल पर करुणा करके, आन विराजें श्री जिनदेव ङ्क12ङ्क
दर्श अनन्त ज्ञान को पाए, सुख स्वभाव में रहते लीन।
इस संसार के सभी विकारों, से जो रहते पूर्ण विहीनङ्क
जोसमाधि के गम्य रहे हैं , परमातम संज्ञा धारी।
वह देवों के देव हमारे, हृदय बसें मंगलकारीङ्क 13ङ्क



जो भव दुक्खों के समूह का, कर देता है पूर्ण विनाश।
और जगत् के अन्तराल का, ज्ञान में जिसके होय प्रकाशङ्क
योगी जन से प्रेक्षणीय जो, जिनका है लोकाग्र निवास।
वह देवों के देव कृपाकर, मेरे करें हृदय में वासङ्क 14ङ्क
मोक्ष मार्ग के प्रतिपादक हो, जन्म मरण दुःखों से हीन।
तीन लोक अवलोकन करते, जो शरीर से रहे विहीनङ्क
कर्म कलंक हीन होते जो, वह हैं देवों के भी देव।
हृदय कमल पर करुणा करके, आन विराजें श्री जिनदेवङ्क 15ङ्क
तीन लोकवर्ती जीवों को, व्याप्त करें रागादिक दोष।
दोष रहित वह कहे अतीन्द्रिय, ज्ञान मयी होते निर्दोषङ्क
जो अपाय से रहित लोक में, वह हैं देवों के भी देव।
हृदय कमल पर करुणा करके, आन विराजें श्री जिनदेवङ्क 16ङ्क
ज्ञेयापेक्षा व्यापक हैं जो, ज्ञायक स्वभावी हैं जो सिद्ध।
विश्व कल्याण की वृत्ति जिनकी, सर्वलोक में रही प्रसिद्धङ्क
कर्म बन्ध विध्वंसक ध्याता, सकल विकारों के नाशी।
वह देवों के देव हमारे, अन्तःपुर के हों वासीङ्क 17ङ्क
तम समूह ज्यों रवि किरणों को, कर सकता है न स्पर्श।
कर्म कलंक दोष त्यों जिनके, करते नहीं कभी भी दर्शङ्क
नित्य निरंजन जो अनेक इक, वह जिनवर हैं मेरे आप्त।
देवों के जो देव कहे हैं, उनकी शरण हमें हो प्राप्तङ्क 18ङ्क
भुवन भास्कर सूर्य कभी भी, शोभा पाता नहीं वहाँ।
विद्यमान रहते हैं अनुपम, प्रखर प्रकाशी प्रभु जहाँङ्क
निज आतम स्वरूप में स्थित, ज्ञान प्रकाशी रहे सदैव।
शरण प्राप्त करता मैं उनकी, आप्त कहे देवों के देवङ्क 19ङ्क
जिनके अवलोकन करने पर, सारा का सारा संसार।
पृथक-पृथक दिखता है इकदम, कोई किसी का न आधारङ्क

वह शिव शान्त स्वरूप सिद्ध जिन, तो हैं आदि अन्त विहीन।
आप्त देव की शरण प्राप्त कर, भक्ति में हो जाऊँ लीन॥ 20॥
वृक्ष समूह अग्नि के द्वारा, पूर्ण रूप हो जाता क्षय।
भय निद्रा मूर्छा दुख चिन्ता, शोकादि त्यों होय विलय॥
मान और मन्मथ आदि सब, दोषों से जो पूर्ण विहीन।
आप्त देव की शरण प्राप्त कर, भक्ति में हो जाऊँ लीन॥ 21॥
परम समाधि के विधान में, न संस्तर है न पाषाण।
न तृण पुंज और न पृथ्वी, नव निर्मित न फलक महान्॥
क्योंकि बुद्धीमानों द्वारा, विषय कषाय शत्रु से हीन।
निर्मल आतम ही समाधि के, मानी योग्य पूर्ण स्वाधीन॥22॥
हे भद्र! नहीं है संस्तर क्योंकि, नहीं लोक पूजा मनहार।
नहीं संघ सम्मेलन अनुपम, परम समाधि का आधार॥
इसीलिए तुम सब प्रकार से, बाह्य वासना को छोड़ो।
नित्य प्रतिदिन आत्म निरत हो, अध्यातम से नाता जोड़ो॥ 23॥
हे भद्र! नहीं है मेरे कोई, जो भी बाह्य पदार्थ रहे।
नहीं कदापि मैं उनका हूँ, कोई कुछ भी हमें कहे॥
इस प्रकार दृढ़ निश्चय करके, बाह्य की तुम संगति छोड़ो।
नित्य प्रति अब निज आतम से, अपना तुम नाता जोड़ो॥ 24॥
निज आतम को निज आतम से, करना भाई अवलोकन।
निश्चय से सद्ज्ञान युक्त हो, और सहित हो सद्दर्शन॥
जहाँ कभी भी स्थित साधु, मोहादि सब करें समाप्त।
हो विशुद्ध एकाग्र चित्त वह, परम समाधि करते प्राप्त॥ 25॥
मम आतम है एक हमेशा, है अधिगम स्वभाव संयुक्त।
जो शाश्वत है परम सुनिर्मल, अन्य सभी से रहा वियुक्त॥
बाह्य पदार्थ रहे जो कुछ भी, नहीं है अपने शाश्वत रूप।
कर्म जनित होते हैं सब ही, जिनवर कहते वस्तु स्वरूप॥ 26॥



चर्म अलग कर देने पर ज्यों, इस शरीर के मध्य कभी।
रोम छिद्र निश्चय से उसमें, कहाँ रहेंगे कहो सभी॥
इस शरीर के साथ भी जिसका, एक्यपना है नहीं कदा।
स्त्री पुत्र मित्र में उसका, कैसे सम्भव ऐक्य तदा॥ 27॥
भव वन में संसारी प्राणी, क्योंकि पाते हैं संयोग।
इस कारण से कई प्रकार के, पावे दु:खों का वह योग॥
इसीलिए कल्याण कारिणी, मुक्ति के इच्छाकारी।
मन वच तन से वह संयोगों, को छोड़ें हो अविकारी॥ 28॥
भव कान्तार में शीघ्र पतन के, कारण जो भी रहे प्रधान।
उन विकल्प जालों का बन्धु, पूर्ण रूप करके अवसान॥
एक मात्र आतम को भाई, सदा देखते हुए अहो।
निज परमात्म तत्व में बन्धु, सदा स्वयं ही लीन रहो॥ 29॥
स्वयं किए जो कर्म पूर्व में, पहले अपने ही द्वारा।
उनका फल स्पष्ट रूप से, मिले शुभाशुभ ही सारा॥
यदि और का दिया गया फल, सुखमय रूप में होवे प्राप्त।
तो फिर स्वयं किए कर्मों का, हो जाएगा व्यर्थ समाप्त॥ 3॥
स्वयं उपार्जित कर्म छोड़कर, कोई किसी के लिए कभी।
किंचित् भी दे सके कभी न, ऐसा सोचो जीव सभी॥
अहो आत्मन्! पर कोई दाता, ऐसी बुद्धि तुम छोड़ो।
हो एकाग्र चित्त हे बन्धु! निज से अब नाता जोड़ो॥ 31॥
अमित गति से वन्दनीय जो, पुरुष लोक में कर्म विहीन।
अति निर्दोष परम परमातम, मन से ध्याते होकर लीन॥
वैभव वाले परम पुरुष वह, मोक्ष महल को करते प्राप्त।
अष्ट कर्म का नाश करें वह, बनते अल्प समय में आप्त॥ 32॥
जो एकाग्र चित्त होकर इन, बत्तिस पद्यों को सम्प्राप्त।
परमातम को देख रहे वह, अविनाशी पद करते प्राप्त॥ 33॥

# आचार्य वन्दना

## लघु सिद्ध भक्ति

करते हम आचार्य वन्दना, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
सकल कर्म के क्षय हेतु हम, करते हैं गुरु बारंबार॥
भाव पुष्प से पूजा वंदन, स्तव सहित समर्पित अर्घ्य।
श्री सिद्धो की भक्ति संबंधी, करते हैं हम कायोत्सर्ग॥

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, दर्श अनन्त वीर्य सुख ज्ञान।
अवगाहन सूक्ष्मत्व अगुरुलघु, अव्याबाध अनन्त प्रमाण॥
तप से नय संयम चारित्र से, सिद्ध हुए हैं दर्शन ज्ञान।
ऐसे सिद्ध प्रभु के चरणों, करते बारम्बार प्रणाम॥

अञ्चलिका

सिद्ध भक्ति के कायोत्सर्ग में, हुई हो कोई हम से भूल।
हे भगवन! हम इच्छा करते, वह गल्ती होवे निर्मूल॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित मय, अष्ट कर्म से पूर्ण विमुक्त।
उर्ध्व लोक के शीर्ष विराजित, अष्ट गुणों से हैं संयुक्त॥

वर्तमान अरु भूत भविष्यत, तीन काल के जगत प्रसिद्ध।
तप से नय संयम चारित्र से, जो भी जीव हुए हैं सिद्ध।
नित्य अर्चना पूजा वंदन, नमन करें हो सुगति गमन॥
बोधि समाधी जिन गुण पाएँ, कर्म कष्ट का होय शमन॥

●●●



# लघु श्रुत भक्ति

**करते हम आचार्य वन्दना, पूर्वाचार्यों के अनुसार।**
**सकल कर्म के क्षय हेतु हम, करते हैं गुरु बारम्बार॥**
**भाव पुष्प से पूजा वन्दन, स्तव सहित समर्पित अर्घ्य।**
**श्री जिनश्रुत भक्ति सम्बंधी, करते हैं हम कायोत्सर्ग॥1॥**

*(9 बार णमोकार मंत्र पढ़े)*

**एक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख सहस हैं अट्ठावन।**
**पाँच पदों से सहित सुश्रुत को, मेरा है शत्-शत् वन्दन॥**
**अर्हत् कथित सु गणधर गूँथित, महा समुद्र रूप श्रुतज्ञान।**
**भक्ति सहित हम शीष झुकाकर, करते बारम्बार प्रणाम॥1॥**

अञ्चलिका

**हे ! भगवन् हम इच्छा करते, पावन श्री श्रुत भक्ति का।**
**कायोत्सर्ग किया जो हमने, सर्वदोष से मुक्ति का॥**
**अंगोपांग प्रकीर्णक प्राभृत, प्रथमानुयोग तथा परिकर्म।**
**सहित पूर्वगत और चूलिका, स्तुति सूत्र कथा जिनधर्म॥2॥**

**नित्य अर्चना पूजा करते, करते वन्दन सहित नमन।**
**सर्व कर्म का क्षय हो जावे, दुःखों का हो पूर्ण शमन॥**
**बोधी का हो लाभ मुझे अरु, विशद सुगति में करूँ गमन।**
**जिन गुण की सम्पती पाएँ, और समाधि सहित मरण॥3॥**

●●●

# लघु आचार्य भक्ति

करते हम आचार्य वन्दना, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
सकल कर्म के क्षय हेतु हम, करते हैं गुरु बारंबार॥
भाव पुष्प से पूजा वन्दन, स्तव सहित समर्पित अर्घ्य।
श्री आचार्य भक्ति संबंधी, करते हैं हम कायोत्सर्ग॥

*(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)*

जो श्रुत सागर में पारंगत, स्व पर मत में बुद्धि निपुण।
सम्यक् तप चारित्र की निधि हैं गुरु गुण गण को विशद नमन्॥
छत्तिस मूल गुणों के धारी, पालन करते पञ्चाचार।
शिष्यों का जो करें अनुग्रह, वन्दनीय हैं धर्माचार्य॥ 1॥

गुरु भक्ति संयम से तिरते, भव सागर है बड़ा महान।
अष्ट कर्म का छेदन करते, जन्म मरण की करते हान॥
ध्यान रूप अग्नि में प्रतिदिन, व्रत अरु मंत्र होम में लीन।
षट आवश्यक पालन करने, में रहते हरदम लवलीन॥ 2॥

तप रूपी धन जिनका धन है, शील व्रतों के ओढ़ें वस्त्र।
लाख चौरासी गुण के हरदम, साथ में अपने रखते शस्त्र॥
साधु क्रिया का पालन करते, सूर्य चन्द्र से तेज महान।
मोक्ष महल के द्वार खोलने, हेतु योद्धा संत प्रधान॥ 3॥

ऐसे सद् साधु जन मुझ पर, हो प्रसन्न दें करुणादान
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण के, सागर हे गुरुवर! गुणवान॥
मोक्ष मार्ग के उपदेशक गुरु, सारे जग में चरण शरण।
रक्षा करो हमारी गुरुवर, चरण कमल में विशद नमन्॥ 4॥





हे! भगवन् हम इच्छा करते, जैनाचार्य की भक्ति का।
कायोत्सर्ग किया जो हमने, सर्व दोष से मुक्ति का॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण अरु, पञ्चाचार के शुभ साधक।
श्री आचार्य अरु उपाध्याय जी, द्वादशांग के आराधक॥ 5॥

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण जो, रत्नत्रय को पाल रहे।
सर्व साधु जी शुद्ध भाव से, चेतन तत्व सम्भाल रहे॥
कर्म दुःख क्षय करूँ समाधि, बोधि सुगति में जाने को।
नित्य वन्दना पूजा अर्चा, करते जिन गुण पाने को॥ 6॥

# गुरु भक्ति

**हे गुरुवर ! कल्पान्त काल तक, तव वचनामृत अमर रहे।**
**अखिल लोक में परम गुणों की, पावन सरिता नित्य बहे॥**
**तीन योग से शीष झुकाकर, वन्दन करते हे गुणवन्त !**
**विमल सिन्धु आचार्य श्री जो, तीन लोक में हों जयवन्त॥**

**सूर्य समान तेज के धारी, तव चरणों में करूँ नमन्।**
**चन्द्र समान सु उज्ज्वल वैभव, धारी तुमको है वन्दन॥**
**दुरित जाल के नाशी तुमको, मेरा हो सादर वन्दन।**
**मोक्ष प्रदायक गुरु विराग तव, भाव सहित करते अर्चन॥**

**सकल व्रतों के धारी तुमको, करते हम शत्-शत् वन्दन।**
**तत्त्व प्रकाशी परम मुनीश्वर, चरणों में करते अर्चन॥**
**मंगल सुयश बोधकारी तव, चरणों करते विशद नमन्।**
**भरत सिन्धु हे वन्दनीय ! तव, चरणों में करते वन्दन॥**

**धर्म प्रभावक परम पूज्य हे !, तव चरणों में करूँ नमन्।**
**बुद्धि विकाशक प्रबल आपको, करते हम सादर वन्दन॥**
**परम शान्ति देने वाले हे !, गुरुवर करते हम अर्चन।**
**विशद सिन्धु गुण के आर्णव को, करते हम शत्-शत् वन्दन॥**

# क्षमा वंदना

**क्षमा करना करना क्षमा करना, क्षमा शांति का दाता है।**
**क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है।।**
**क्षमा करता सकल जन को, क्षमा करना सभी मुझको।**
**अभी छद्मस्थ हूँ मैं भी, नहीं है ज्ञान कुछ मुझको।।**
**रहे मैत्री सभी जन से, किसी से बैर न मेरा।**
**हृदय में भावना मेरी, किसी से हो नहीं फेरा।।**
**क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा ही जग का त्राता है।**
**क्षमा के भाव से प्राणी, विशद मुक्ति को पाता है।।**
**पाप का कर सके छेदन, रहे यह भाव में वेदन।**
**क्षमा उनसे भी चाहूँगा, मेरे हाथों हुए भेदन।।**
**त्याग दूँ दोष इस जग के, यही है भावना मेरी।**
**पटे खाई हृदय की जो, बनी हो पूर्व से तेरी।।**
**क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा समता को लाता है।**
**क्षमा के भाव से प्राणी, विशद मुक्ति को पाता है।।**
**दयामय भाव हो जावे, हृदय करुणा से भर जावे।**
**रहे भावों में शीतलता, कभी भी क्रोध न आवे।।**
**क्षमा की तरणी बह जावें, सदा मैं भाव करता हूँ।**
**क्षमा भूषण है तन मन का, उसे मैं आप धरता हूँ।।**
**क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा उर में समाता है।**
**क्षमा के भाव से प्राणी, विशद मुक्ति को पाता है।।**
**कभी जाने या अनजाने, हुए हों दोष जो मेरे।**
**क्षमा हमको सभी करना, बड़े उपकार हों तेरे।।**
**वीर का धर्म ये कहता, हृदय में शांति तुम धरना।**
**क्षमा धारो विशद दिल में, कि अर्पण प्राण तुम करना।।**
**क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा को धर्म गाता है।**
**क्षमा के भाव से प्राणी, विशद मुक्ति को पाता है।।**



# दोषों की आलोचना

हे प्रभो ! हे जिनेन्द्र देव ! हे देवाधि देव ! हे वीतराग हितोपदेशी ! हे परम पिता परमात्मा ! मेरे द्वारा मन से, वचन से, काय से, कृतकारिक, अनुमोदना से किसी जीव की हिंसा हो गई हो, मेरे द्वारा झूंठ बोला गया हो, किसी की चोरी की हो, मेरे मन में कुशील का भाव आया हो, परिग्रह संग्रह की इच्छा की हो, मेरा यह दुष्कृत मिथ्या हो।

हे प्रभो ! हे सर्वज्ञ हितोपदेशी भगवन् ! मुझ से क्रोध हो गया हो, मान हो गया हो, मैंने मायाचारी की हो, मैंने शुभ कार्य में लोभ किया हो, मेरे द्वारा कोई व्यसन हो गया हो, अष्ट मूलगुणों के पालन में दोष लगे हों, आवश्यक कर्त्तव्य निर्वहन में प्रमाद किया हो, मेरा यह दुष्कृत मिथ्या हो।

हे त्रिलोकीनाथ ! हे परमेश्वर ! अरिहन्त देव ! हे भगवन् ! मेरे हृदय में प्राणीमात्र के प्रति मैत्री भाव हो, गुणीजनों में प्रमोद भाव हो, दुःखी जीवों के प्रति करुणा भाव हो, विपरीत वृत्ति वालों के प्रति माध्यस्थ भाव रहे।

हे परमात्मा ! मेरे दुःखों का क्षय हो, कर्मों का नाश हो, बोधि की प्राप्ति हो, समाधिसहित मरण हो, जिनगुण सम्पत्ति की प्राप्ति हो।

हे प्रभु ! जब तक मोक्ष की प्राप्ति न हो तब तक आपके चरण-कमल मेरे हृदय में विद्यमान रहें। मेरा हृदय आपके चरणों में सदा लीन रहे।

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सभी दिशाओं एवं विदिशाओं में विराजमान अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिन चैत्यालय, नव देवताओं के लिए मेरा मन, वचन और काय से शत्-शत् नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु !!!

कायोत्सर्ग करना चाहिए।

# दर्शन पाठ

***(तर्ज : दिन रात मेरे स्वामी)***

**यह भावना हमारी, प्रभु दर्श तेरे पाऊँ।**
**पल-पल प्रसन्न मन से, नवकार मंत्र ध्याऊँ।।**
**चउ घातिया करम का, जिसने किया सफाया**
**अपने हृदय कमल पर, अर्हन्त को बसाऊँ।। यह भावना...**

नो कर्म भाव द्रव्य से, जो मुक्त हो गये हैं।
उन शुद्ध सिद्ध जिनको, मैं शीश पर बिठाऊँ।। यह भावना...
आचार पाँच पालें, पालन कराएँ सबको।
आचार्य परम गुरु को, मैं कंठ से सजाऊँ।। यह भावना...
जो अंग पूर्वधारी पढ़ते, मुनि पढ़ाते।
मुख के कमल बिठाकर, उनके गुणों को गाऊँ।। यह भावना...
सद्ज्ञान ध्यान तप में, खोये सदैव रहते।
उन सर्वसाधुओं को, नाभि कमल में ध्याऊँ।। यह भावना...
श्रद्धान, ज्ञान, चारित, सद्धर्म ये रतन हैं।
अहिंसा मयी धरम के, धारण में लो लगाऊँ।। यह भावना...
वाणी जिनेन्द्र की शुभ, हितकारणी कही है।
जिनदेव की सुवाणी, करके श्रवण कराऊँ।। यह भावना...
जिन का स्वरूप जिनके, प्रतिबिम्ब में झलकता।
जिन तीर्थ वंदना कर, नित चैत्य दर्श पाऊँ।। यह भावना...
त्रैलोक्य में विराजित, जिन चैत्य और जिनालय।
तन, मन विशद वचन से, मैं वंदना को जाऊँ।। यह भावना...

# चौबीस तीर्थंकर स्तुति

भव सागर में भटक रहे हैं, मोह-तिमिर ने घेरा।
भव जीवों के तारण हारे, एक सहारा तेरा।।
पुण्य उदय से हमने अनुपम, यह नर का तन पाया।
विशद ज्ञान का धारी भगवन्, मेरे हृदय समाया।।

पहले ऋषभनाथ जिनवर वन्दों, दूसरे अजितनाथ देव जी।
तीसरे संभवनाथ जिनवर वन्दों, चौथे अभिनंदन देव जी।।
पाँचवें सुमतिनाथ जिनवर वन्दों, छठवें पद्मप्रभु देव जी।
सातवें सुपार्श्वनाथ जिनवर वन्दों, आठवें चन्द्रप्रभु देव जी।।
भवसागर में भटक रहे हैं.... एक सहारा तेरा
नौवें पुष्पदंत जिनवर वन्दों, दसवें शीतलनाथ देव जी।
ग्यारहवें श्रेयांशनाथ जिनवर वन्दों, बारहवें वासुपूज्य देव जी।।



तेरहवें विमलनाथ जिनवर वन्दों, चौदहवें अनन्तनाथ देव जी।
पन्द्रहवें धर्मनाथ जिनवर वन्दों, सोलहवें शान्तिनाथ देव जी।।
भवसागर में भटक रहे हैं.... एक सहारा तेरा
सत्रहवें कुन्थुनाथ जिनवर वन्दों, अठारहवें अरहनाथ देव जी।
उन्नीसवें मल्लिनाथ जिनवर वन्दों, बीसवें मुनिसुव्रत देव जी।।
इक्कीसवें नमिनाथ जिनवर वन्दों, बाईसवें नेमिनाथ देव जी।
तेईसवें पार्श्वनाथ जिनवर वन्दों, चौबीसवें महावीर देव जी।।
भवसागर में भटक रहे हैं.... एक सहारा तेरा

* * *

# गुरुवर की आरती

*(तर्ज- मैं तो आरती उतारूँ रे जिनवाणी...)*

हम तो आरती उतारें जी, वीतरागी गुरुवर की।
वीतरागी गुरुवर की, वीतरागी मुनिवर की।। हो-हारे SS...
हम तो आरती उतारें जी, वीतरागी मुनिवर की।
प्यारे-प्यारे गुरुवर की हो-हो SS..... 2
हाथ में पिच्छी लिये, साथ में कमण्डल है।
चरणों में जो आये, मंगल ही मंगल है।।
रहते हैं संसार में हो-हो SS.....
संयम के निर्झर की- हम तो .....
श्रद्धा के आलय विशद, पावन जो तीरथ हैं।
नर-नारी जग के सभी, चरणों में जो नत हैं।।
ज्ञानी और ध्यानी परम हो-हो SS.....
भक्तों के मनहर की- हम तो .....
तारण तरण जग में, मुक्ति के दाता हैं।
भक्तों के हैं भगवान, भाग्य के विधाता हैं।।
जो रागी न द्वेषी हैं, हो-हो SS.....
शास्वत् सु गिरिवर की, हम तो .....

* * *

## *(तर्ज : यह देश है वीर जवानों का)*

जिन धर्म है विशद बहारों का, महावीर की जय जयकारों का।
जिन धर्म का बंधु-3 क्या बोले, महावीर की भक्ति में डोले।। जय हो...

जिन धर्म है काल अनादि का, यह सत्य अहिंसा वादी का।
यह धर्म है श्रद्धाधारी का, यह सम्यक् ज्ञान पुजारी का।।
यह सम्यक् चारित धारी का, यह सागारी अनगारी का।
यह पंचमहाव्रत धारी का, यह आतम ब्रह्म विहारी का।।
जिनधर्म का बंधु 3.....

जिन धर्म है सम्यक् ज्ञानी का, यह वीतराग विज्ञानी का।
जिन धर्म है ज्ञानी ध्यानी का, यह तीर्थंकर की वाणी का।।
यह आठ मूलगुण धारी का, यह निश्चय अरु व्यवहारी का।
यह द्वेषी का न रागी का, यह धर्म है सम्यक् त्यागी का।।
जिनधर्म का बंधु 3.....

जिन धर्म है जिन अरहंतों का, जो मोक्ष पधारे सिद्धों का।
आचार्य उपाध्याय संतों का, ये वीतराग भगवन्तों का।।
यह मंगल है चत्तारि का, यह लोगोत्तम चत्तारि का।
यह प्राणीमात्र उपकारी का, यह शरण कही चत्तारि का।।
जिनधर्म का बंधु 3.....

जिन धर्म बड़ा हितकारी है, चर्या क्रिया कुछ न्यारी है।
पापों का नाशनहारी है, जिन धर्म की वृत्ति प्यारी है।।
यह मोक्ष मार्ग का हेतु है, यह भव सागर का सेतु है।
यह सिद्धशिला का केतु है, यह 'विशद' लोक का जेतु है।।
जिनधर्म का बंधु 3.....

* * *



## *(तर्ज : तेरे नाम हमने किया.....)*

तेरे चरण हमने किया है, जीवन अपना अर्पित SS गुरु SS
शरण में SS आया हूँ तेरे SS करना कृपा मुझ पर ये गुरु SSS

तुमको पूजा हमने, श्रद्धा के फूलों से।
रखना दूर हमें गुरु, कर्मों के सूलों से।।
कर्मों के द्वारा गुरु बहुत सताए हैं।
उनसे बचने चरण शरण में आए हैं।
तेरे सिवा SS तेरे सिवा SS तेरे सिवा SSS
तेरे सिवा न जग में कोई हमारा SS गुरु SSS शरण में.....

सारा जग हमको सपना सा लगता है।
बस तेरा दर हमको अपना सा लगता है।।
तेरे दर्शन करने को मन कहता है।
वाणी सुनने को लालायित रहता है।।
तेरे सिवा SS तेरे सिवा SS तेरे सिवा SSS
तेरे सिवा न जग में कोई हमारा SS गुरु SSS शरण में.....

मेरा जीवन है विशद आपके हाथों में।
नहीं मिला अपना कोई रिश्ते नातों में।।
तूने दिया सहारा जग में लोगों को।
पाया संयम छोड़ के जग के भोगों को।।
तेरे सिवा SS तेरे सिवा SS तेरे सिवा SSS
तेरे सिवा न जग में कोई हमारा SS गुरु SSS शरण में.....

* * *

## उद्धार करो

*(तर्ज : तेरे पाँच हुए कल्याण प्रभु)*

किया तूने जगत उद्धार गुरु, अब मेरा भी तो उद्धार कर दो।
तू सद्ज्ञानी आतमज्ञानी, मुझे भवसागर से पार करो।।

नहीं लोक में तुम सम कोई, औरों का कल्याण करें।
नहीं मिला कोई हमको ऐसा, दूर मेरा अज्ञान करें।।
अब मैं चाहूँ गुरुवर, मैं ज्ञान सहित आचरण करूँ।
वह दान मुझे आचार कर दो।।1।।

भटक रहा अंजान मुसाफिर, मंजिल की शुभ आस लिए।
रफता-रफता बढ़ते आया, दर पे तेरे विश्वास लिए।
अब मैं चाहूँ गुरुवर, तू है दाता ईश्वर सबका।
अब दूर मेरा आगार कर दो।।2।।

तेरी महिमा अगम अगोचर, जग में एक सहारा है।
जग में रहकर जग से न्यारा, सबका तारण हारा है।।
अब मैं चाहूँ, गुरुवर-गुरुवर, जो वीतराग मय रूप तेरा।
उस रूप मेरा आकार कर दो।।3।।

जग को तेरी बहुत जरूरत, तू जग का रखवाला है।
तू है मंदिर तू है मस्जिद, 'विशद' ज्ञान की शाला है।।
अब मैं चाहूँ गुरुवर, जो नित्य निरंजन रूप मेरा।
वह निराकार आकार कर दो।।4।।

* * *



## भजन-संयम

*(तर्ज : हम तुम युग-युग से...)*

संयम को युग-युग से प्राणी पाते रहे हैं, पाते रहेंगे।
रत्नत्रय को पाकर मोक्ष जाते रहे हैं, जाते रहेंगे।।

जब-जब हमने जीवन पाया, तब-तब मोह जगा अपना।
हर बार मिले अपने साथी, यह मात्र रहा कोरा सपना।।
श्रद्धा से हीन रहे जग में, सब व्यर्थ रहा तप से तपना।
श्रद्धा जागे अन्तर्मन में, तब सार्थक हो माला जपना।।
आ....आ.... गुरुवर... प्रभुवर....

जब-जब हमने प्रभु को ध्याया, तब-तब श्रद्धा के फूल खिले।
जब श्रवण किया जिनवाणी का, तब विशद ज्ञान के दीप जले।।
जब अन्तरदृष्टि हुई मेरी, परमात्म स्वयं के हृदय मिले।
जिस राह पे गुरु के कदम बढ़े, उस राह पे हम भी स्वयं चले।।
आ....आ.... गुरुवर... प्रभुवर....

जो संयम के पथ पर चलते, मंगलमय जीवन हो उनका।
समता की धार बहे पावन, स्नेह मिले फिर जन-जन का।।
जो लीन स्वयं में हो जाते, न ध्यान रहे उनको तन का।
गुलशन खिलता है मन मोहक, जीवन में उनके चेतन का।।
आ....आ.... गुरुवर... प्रभुवर....

* * *

*(तर्ज : जिस दिन प्रभु जी तेरा दर्शन होगा....)*

जब से गुरुजी तेरे द्वारे आया।
तब से निजातम का आनन्द पाया।।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, सारे जग में भटक लिया
पूरब पश्चिम ..... हो ऽऽऽऽऽऽ
मंजिर मस्जिद गुरुद्वारे में, दर-दर पे सर पटक लिया
कई बार जग में धोखा खाया..... ।।1।।

मन मंदिर में प्रभु बैठे हैं, उनका दर्शन नहीं किया।
मन मंदिर में.... हो ऽऽऽऽऽऽ
स्वयं आप रसकूप है चेतन, उसका आनन्द नहीं पिया
मोह का अंधेरा मेरे जीवन में छाया..... ।।2।।

विशद गुरु का रूप सलोना, वीतराग दर्शाता है
विशद गुरु का..... हो ऽऽऽऽऽऽ
भव्य भ्रमर जो गुरु चरणों का उनका मन हर्षाता है-2
गुरुवर ने सम्यक् ज्ञान जगाया ..... ।।3।।

मोक्ष मार्ग पर चलने वाले, गुरुवर जग के त्राता हैं
मोक्ष मार्ग पर ..... ऽऽऽऽऽऽ
रत्नत्रय के धारी गुरुवर पंचाचार प्रदाता हैं
गुरुवर को हमने-मन में ध्याया ..... ।।4।।

* * *



*(तर्ज : गा रहा हूँ मैं....)*

पा रहे हैं हम जो कुछ भी, आपकी इनायत है।
आज हम जो कुछ भी हैं, आपकी अमानत है।।

1. आपके सहारे हम जिन्दगी ये जी लेंगे।
घूँट कोई कड़वे मीठे, हँसकर के पी लेंगे।।
आपके हैं सेवक हम, आपकी इनायत है.....

2. आपकी छाँव तले, जिन्दगी बनाई है।
आपकी कृपा से हमने धर्म निधि पाई है।।
आप से ही पाया सब कुछ, आपकी इनायत है.....

3. आपका आशीष पाया, सौभाग्य ये हमारे हैं।
आप गुरु मंजिल के, बहुत ही किनारे हैं।।
'विशद' मोक्ष मंजिल पाएँ, आपकी इनायत है.....

4. राह जो दिखाई है, आगे चलते जाएँगे।
ज्ञान के दीपक उर में, मेरे जलते जाएँगे।
शीश ये झुका पद में, आपकी इनायत है.....

*(तर्ज : गुरुवर तुम्हें नमस्ते हो.....)*

1. गुरुवर तेरी जय जय हो, गुरुवर तुम मंगलमय हो।
गुरुवर ज्ञान के आलय हो, चलते हुए शिवालय हो।।

2. गुरु कर्मों के हर्ता हैं, मुक्ति वधु के भर्ता हैं।
सद्भावों के कर्ता हैं, गुरु में भरी अमरता हैं।।

3. गुरु के गुण को गाना है, भक्ति गीत सुनाना है।
चरणों शीश झुकाना है, गुरु का आशीष पाना है।।

4. जिसने गुरु गुणगान किया, गुरु का सद् सम्मान किया।
सच्चे मन से ध्यान किया, आतम का कल्याण किया।।

5. जग में मंगल करते हैं, जन-जन का दुःख हरते हैं।
ज्ञान सुधामृत भरते हैं, सिद्धशिला को वरते हैं।।

6. हमको ज्ञान सिखाया है, 'विशद' मार्ग दिखलाया है।
शीश पे गुरु की छाया है, भव से पार लगाया है।।

# अरिहंत वंदना

*(तर्ज : राम न मिले हनुमान के बिना...)*

मोक्ष न मिले अरहंत के बिना। अरहंत बने नाहिं संत के बिना।।
कर्मों का जिसने घात किया है, ज्ञान दर्शन सुख प्राप्त किया है।
सिद्ध न बने कर्म अन्त के बिना। अरहंत.....
पंचाचार को पाल रहे हैं, पद आचार्य सम्भाल रहे हैं।
उपाध्याय न हों द्वादशांग के बिना। अरहंत.....
राग द्वेष मोह से हीन कहे हैं, विशद ज्ञान ध्यान में लीन रहे हैं।
साधना न होती है संत के बिना। अरहंत.....
जिनधर्म आगम को आप ध्याइये, चैत्य और मंदिर के दर्श पाइये।
अंत न मिले मोक्ष पंथ के बिना। अरहंत.....
संतों का जिसने दर्श किया है, चरणों को भी स्पर्श किया है।
कोई नहीं मीत महामंत्र के बिना। अरहंत.....

# बाल प्रार्थना

*(तर्ज : भोले भाले भगवन् मेरे....)*

क्षमामूर्ति हे गुरुवर ! मेरे, क्यों तुम हमसे रूठे हो।
बात-बात पर हँसने वाले, क्यों तुम चुप होकर बैठे हो।।
चेहरा ऊपर करके देखो, चरणों शीश झुकाते हैं।
बड़े चाव से आशा लेकर, दर्शन करने आते हैं।। क्षमामूर्ति...
हमने तुमको अपना माना, तुम्हीं हमारे दाता हो।
तुम ही माता-पिता हमारे, गुरुवर आप विधाता हो।। क्षमामूर्ति...
हाथ जोड़कर वंदन करते, शुभाशीष गुरुवर दे दो।
तव चरणों में सेवक गुरुवर, चरण-शरण अपनी ले लो।। क्षमामूर्ति...
मुस्करा दो हे गुरुवर ! मेरे, हम बच्चों को क्षमा करो।
इतनी शक्ति हमें दो गुरुवर, हमको अपने समा करो।। क्षमामूर्ति...
तुम हो तारण-तरण मुनीश्वर, भव सागर से पार करो।
'विशद' ज्ञान संयम के द्वारा, हम सबका उद्धार करो।। क्षमामूर्ति...



# भजन

*(तर्ज : आया कहाँ से कहाँ...)*

नव वर्ष आया खुशियों को लाया, नये गीत गाओ भाई।
नये गीत गाओ, ताली बजाओ भाई-ताली बजाओ....

नये वर्ष में नये फूलों का, हमको बाग लगाना है।
नये गुणों को पाकर अपना, जीवन नया बनाना है।।
नव वर्ष आया, गुरुवर को पाया, नये गीत गाओ भाई....।।

देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति कर, अतिशय पुण्य कमाना है।
मूलगुणों का पालन करके, सत् श्रावक बन जाना है।।
मन में ये आया- गुरु ने बताया, नये गीत गाओ भाई....।।

नये वर्ष पाकर कई हमने, व्यर्थ कार्य में गंवा दिए।
शुभम् सुहित के काम आज तक, हमने शायद नहीं किए।।
नव वर्ष पाया, नव हर्ष छाया- नये गीत गाओ भाई....।।

नये वर्ष की नई खुशी में, दीपक नये जलाना है।
बिछुड़े हुए हमारे बंधु, मंदिर उनको लाना है।।
कभी न आया, उसको बुलाना, नये गीत गाओ भाई....।।

पूजा भक्ति तीर्थ वंदना, करके हर्ष मनाएँगे।
'विशद' गुणों को पाकर जीवन, फूलों सा महकायेंगे।।
मन में ये आया, सब से बताया, नये गीत गाओ भाई....।।

* * *

## *(तुम्हीं हो माता...)*

तुम्हीं हो दाता, तुम्हीं हो त्राता, तुम्हीं विधाता, विभु तुम्हीं हो।
तुम्हीं ने हमको मार्ग दिखाया, तुम्हीं ने मेरा साथ निभाया- आ ऽऽ ओ ऽऽ-2
तुम्हीं ने ज्ञान दिया है हमको-2
तुम्हीं विधाता, विभु तुम्हीं हो- तुम्हीं हो दाता.....
तुम्हीं ने मेरा भाग्य जगाया, चरण शरण की मिली जो छाया- आ ऽऽ ओ ऽऽ-2
तुम्हीं हो अर्हन्, तुम्हीं हो भगवन,
तुम्हीं विधाता, विभु तुम्हीं हो- तुम्हीं हो दाता.....
तुम्हीं हो दर्शन, तुम्हीं जिनालय, तुम अतीत के परम शिवालय-आ ऽऽ ओ ऽऽ-2
तुम्हीं हो वाणी, विशद शरण हो।
तुम्हीं विधाता, विभु तुम्हीं हो- तुम्हीं हो दाता.....

## समर्पण

गुरुवर जी के साथ में चलना प्यारा लगता है।
बिन गुरुवर के वीराना जग सारा लगता है।।
गुरुवर का जयकारा बोलें, जय-जयकार करें।
गुरुवर के चरणों में रहकर, निज उद्धार करें।।
नगर-2 में गुरुवर का ऽऽ जयकारा लगता है।।1।।
नयन कमल पुलकित हो जाते, गुरु के दर्शन पाकर।
मन वीणा झंकृत होती है, गुरु के गुण को गाकर।।
जहाँ सत्य अहिंसा परम धर्म ऽऽ का नारा लगता है।।2।।
प्रबल पुण्य का योग जगे तव, गुरु का दर्शन मिलता।
गुरुवर की वाणी सुन करके, ज्ञान का दीपक जलता।।
मेरे गुरुवर का दरबार जहाँ ऽऽ से न्यारा लगता है।।3।।
भाग्यवान होता है जिसको गुरु आशीष मिले।
भाव सहित भक्ति करने से, श्रद्धा सुमन खिले।।
गुरु भक्तिमय जीवन विशद ऽऽ सितारा लगता है।।4।।



## भजन

कौन सुनेगा किसको सुनायें, इसलिए चुप रहते हैं।
हमसे अपने रूठ न जायें, इसलिए चुप रहते हैं।।

अति संघर्ष भरे जीवन से, दिल मेरा घबराया है।
गैरों की क्या कहें हमें तो, अपनों ने ही भरमाया है।।
राज ये दिल का-2 खुल न जायें- इसलिए.....

हँसता-खिलता जीवन मेरा, जाने कहाँ पर खो गया।
फूल भरी राहों पर मेरी, कौन ये काँटा बो गया।।
पग ये आगे कैसे बढ़ायें- इसलिए.....

मेरे जीवन की वीणा में, तार दुःखों का जोड़ दिया।
आये थे तेरे पास में तुमने, मुख क्यों अपना मोड़ लिया।।
टूटी ये वीणा-2 कैसे गायें.....इसलिए.....

संयम देकर तुमने मुझको, अपने से क्यों दूर किया।
गम में तड़पते रहने को मुझे, तुमने क्यों मजबूर किया।।
दर्द विरह का-2 किसको दिखाये- इसलिए.....

तुमसे दूर होकर गुरुवर, गम में गोते लगाते हैं।
दुनियाँ वाले जान न पायें, अधर मेरे मुस्कराते हैं।।
आँख से आँसू-2, बह न जायें- इसलिए.....

* * *

हजारों महफिले होंगी, हजारों कारवाँ होंगे।
जमाना हमको छोड़ेगा, न जाने हम कहाँ होंगे।।

## भजन

हम भूल जाएँ रे संसार, मगर प्रभु द्वार नहीं भूलें।
इस जीवन का आधार SSS धर्म का सार नहीं भूलें।।

इस भव में जो भी भटक रहे, उनको बस एक सहारा है।
प्रभु की जो भक्ति करते हैं SS मिलता बस उन्हें किनारा है।।
भव से हो जाते पार SSS कभी यह बात नहीं भूलें। इस जीवन...

अज्ञान तिमिर के कारण ही, भव सागर में भटकाते हैं।
सुख-शांति न मिल पाती उनको SSS वह तो दुःख सहते जाते हैं।।
अब करें आत्म उद्धार SSS धर्म आधार नहीं भूलें। इस जीवन...

सद्धर्म के द्वारा इंसां का सौभाग्य बदलता जाता है।
सद्ज्ञान दीप ज्योतिर्मय सा SS तब उर में जलता जाता है।।
पा जाऊँ मुक्ति द्वार SSS नहीं शिव द्वार कभी भूलें। इस जीवन...

प्रभु चरण रहे उर में मेरे, मम हृदय रहे प्रभु के पद में।
हो विनय भाव मन में हरदम SS नहिं भूल जाएँ पर के मद में।।
प्रभु कर दो ये उपकार SSS नहीं उपकार कभी भूलें। इस जीवन...

तुमने प्रभुवर सारे जग को, सच्चा सन्मार्ग दिखाया है।
जो भटके थे राही जग में, उनको भव पार लगाया है।।
हम बने 'विशद' अनगार SSS नहीं यह बात कभी भूलें।। इस जीवन...

* * *

फूल खिलते तो बहुत हैं पर मकरन्द कुछ ही फैलाते।
टूटकर गिर भी जाते वह जो अपनी शान पर इतराते।।



## भजन

प्रभु पारस की बोलो जयकार सभी जय-जय बोलो।
बोलो-बोलो सभी जयकार सभी जय-जय बोलो।
जिसने प्रभु को मन से ध्याया, भक्ति भाव से शीश झुकाया।
हो गया भव से पार, प्रभु की जय बोलो.... प्रभु पारस.... ।।1 ।।
जो भी प्रभु की शरण में आते, पार्श्व प्रभु के गुण को गाते।
पाते सौख्य अपार, प्रभु की जय बोलो.... प्रभु पारस.... ।।2 ।।
दीन दुखी दुःख हरने वाले, जग का मंगल करने वाले।
इस जग के आधार, प्रभु की जय बोलो.... प्रभु पारस.... ।।3 ।।
प्रभु हैं मोक्ष मार्ग के दाता, सर्व चराचर के हैं ज्ञाता।
'विशद' ज्ञान के हार, प्रभु की जय बोलो.... प्रभु पारस.... ।।4 ।।

## भजन

मात-पिता औ गुरु की सेवा करना अपना काम।
कि भैया उनको करो प्रणाम, कि भैया गुरु को करो...
प्रातः उठकर जाप करो और, प्रभु का लेना नाम। कि भैया....
कर स्नान करो नित पूजन, गुरु को देना दान। कि भैया....
देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, रखना सद्श्रद्धान। कि भैया....
तीन काल सामयिक करिए, करिए आतम ध्यान। कि भैया....
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण और, तप का हो सम्मान। कि भैया....
सत्य अहिंसा दया भाव युत, करना अपना काम। कि भैया....
भक्ति मय हो दैनिक चर्या, भक्तिमय हो शाम। कि भैया....
प्रातः जल्दी उठने हेतु, करो शीघ्र विश्राम। कि भैया....
'विशद' भावना भाते हैं हम, पावे मुक्ति धाम। कि भैया....

## भजन

*(तर्ज : ये नर तन मिला मुझे माटी के मोल...)*

अरे ! जाग तू मुसाफिर, आँखें तो खोल।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोल।।

कौन है तू सोच, तेरा क्या है धरम।
किए तूने अब तक, क्या-क्या करम।।
अंदर में झाक तू, अपने को तोल। जय जिनेन्द्र.....

अपने किए का तू फल पाएगा।
लाया था साथ क्या तू ले जाएगा।।
निर्मल हृदय से तू खुद को टटोल। जय जिनेन्द्र.....

अपनों के बीच तूने पाया है क्या ?
जाएगा साथ कोई आया है क्या ?
खोता क्यों नर तन तू माटी के मोल। जय जिनेन्द्र.....

स्वारथ की दुनियाँ में स्वारथ को देख।
आया था एक तू औ जाएगा एक।।
अमृतमय जीवन में विष न तू घोल। जय जिनेन्द्र.....

निज के किए का फल, निज को मिले।
श्रद्धा के फूल 'विशद' उर में खिले।।
अमृतमय जीवन में अमृत बिलोल। जय जिनेन्द्र.....

* * *



## भजन

कभी तो ये गुरुवर, ज्ञाता बन जाते हैं।
सद् ज्ञान के ये गुरुवर, दाता बन जाते हैं।। टेक।।
मुख मोड़ लिया तुमने, हम कहाँ पे जाएँगे।
हर हाल में हे गुरुवर ! गुण तेरे गाएँगे।।
मुक्ति की जो हमको सद् राह दिखाते हैं।
संसार पार करके वह मोक्ष दिलाते हैं।। मुक्ति..... तो बोलो ना.....
सुना है गुरु तुमने, भक्तों को तारा है।
जो आया दर तेरे, भवपार उतारा है।। सुना है..... तो बोलो ना.....
गुरु चरण शरण ले लो, हम भक्त तुम्हारे हैं।
हम भक्तों के भगवान, गुरुदेव हमारे हैं।। गुरुचरण...तो बोलो ना...
गुरुदेव की जय बोलो, गुरु का गुणगान करो।
गुरुदेव 'विशद' अपने, उनका सम्मान करो।। गुरुदेव...तो बोलो ना...

## भजन

गुरु विमल सागर की यादें, नयनों में नीर ले आयें।
उपकार तुम्हारा स्वामी, हम कैसे भुलायें। हो तुम्हें शीश झुकायें...
तेरहवें तीर्थंकर जैसा, गुरुदेव का नाम विमल था-2
गुरु आशीश की छाया से, तीरथ उद्धार अटल था।
श्रमणों के हे ध्वजनायक ! हमको सन्मार्ग दिखायें। उपकार तुम्हारा स्वामी..
वात्सल्य मूर्ति, मूर्तेश्वर, व्यवहार तेरा निश्चल था-2
निर्मल कोमल था मधुर मन, हृदय स्वर्ण कमल था।
तेरे ज्ञान की अमृतवाणी, दुखियों को धीर बँधाये। उपकार तुम्हारा स्वामी..
सम्मेद शिखर सोनागिर, गुरुदेव को याद करेंगे-2
चाहे घूमे समय की छतरी, छतरी पे मेले भरेंगे-
अवशेष जो तेरे दुलारे, स्मृति में दीप जलायें। उपकार तुम्हारा स्वामी...

## *(तर्ज : जीवन है पानी की बूँद)*

जीवन है कागज की नाव, कब गल जाए रे .....ऽऽ
तेरा ही चेतन हो-हो, तुझको कब छल जाए रे...ऽऽ जीवन है कागज...

सोच कहाँ से आया तू, आगे कहाँ पे जाए तू,
कोई रोक न पाएगा..ऽऽ
चतुर्गति में भटक लिया, दर-दर माथा पटक लिया।
जिनवर के चरणों हो-हो, न माथ झुकाए रे...ऽऽ जीवन है कागज...1

जीने का भी ज्ञान नहीं, मरने का भी ध्यान नहीं,
तुझको कौन जगाएगा...ऽऽ
कई जनमों में मरण किया, धर्म कर्म न वरण किया।
अन्तर में अपने हो-हो, न धर्म जगाए रे....ऽऽ जीवन है कागज...2

कभी स्वयं को ध्याया न, सत् श्रद्धान जगाया न,
कैसे शांति पाओगे.....ऽऽ
अब श्रद्धा को पाना है, सम्यक् ज्ञान जगाना है।
संयम से जीवन हो-हो, न स्वयं सजाए-रे.....ऽऽ जीवन है कागज...3

मोह में खुद को भूल गया, मद माया में फूल गया।
धर्म कर्म से दूर रहा.....ऽऽ
कभी गिने संगी साथी, कभी गिने घोड़े हाथी।
इनमें ही खुद को हो-हो, तू क्यों भरमाए रे....ऽऽ जीवन है कागज...4

प्रभु के गुण को गाया न, विशद ज्ञान को पाया न।
कैसे जीवन पावन को.....ऽऽ
इस तन को अपना माना, चेतन को न पहिचाना।
जीवन को पाकर हो-हो, क्यों व्यर्थ गवाए रे...ऽऽ जीवन है कागज...5



## *(तर्ज : मंजिल के राही रे... एक-एक पग रखना)*

आतम के ध्यानी रे ऽऽ, करो ध्यान भाव से।
एक-एक पल ध्याओ, चेतन को चाव से।।

बड़े पुण्य से हमने नर भव ये पाया।
महामोहतम ने जगत में भ्रमाया।
करो पार नैया अब संयम की नाव से।।
एक-एक पल ध्याओ...

जिनवर की वाणी अपने हृदय में बसाओ।
चेतन के चिंतन में चित्त को लगाओ।
अवसर मिला है पावन, चूको नहीं दाव से।।
एक-एक पल ध्याओ...

सुख का खजाना जग में धर्म ही सहारा है।
मुक्ति की मंजिल पाना, लक्ष्य ये हमारा है।
ज्ञानी और ध्यानी होता आतम स्वभाव से।
एक-एक पल ध्याओ...

आतम की सिद्धि हेतु सिद्धों को ध्याना है।
उनके गुणों को अपने हृदय में बसाना है।
पाओ प्रभु के गुण को, कोई भी उपाय से।
एक-एक पल ध्याओ...

गुरुवर के चरणों आये, गुरु गुण को पाने।
भव वन से भटकी नौका, पार अब लगाने।।
करते हैं विनती गुरुवर, 'विशद' हाव-भाव से।
एक-एक पल ध्याओ...

*(तर्ज : बुन्देली गीत...)*

अधूरी अधरों की है प्यास, दर्श को तरस रही हर श्वांस।
आश ले द्वारे आये हैं, परम पूज्य गुरुवर के पद में शीश झुकाए हैं।
कि मोरी सुन लइयो, दर्श मोय दे दइयो।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण अरु, सम्यक् तप को पाते।
वीतरागता को पाने की, सतत भावना भाते।।
आतम शुद्ध करने हेतु, नित प्रति ध्यान लगाते।
शुद्धि बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, निज आतम को ध्याते।।
निरन्तर करते हैं जो ध्यान निराली संतों की है शान।
भावना बारह भाए हैं- परम पूज्य...।।1।।

जहाँ-जहाँ पग पड़ते गुरु के, जन-जन मन हर्षाएँ।
पूजा भक्ति करते गुरु की, भाव सहित गुण गाएँ।।
सुनकर के उपदेश धर्म का, श्रद्धा हृदय जगाते।
व्रत संयम अरु नियम के द्वारा, जीवन स्वयं सजाते।।
करे जो गुरुवर का गुणगान, उन्हीं का होता है कल्याण।
जो भी शरण में आये हैं- परम पूज्य...।।2।।

श्वांस चले जब तक इस तन में, गुरुवर के गुण गाऊँ।
जनम-जनम में श्री गुरुवर को, अपने हृदय बसाऊँ।।
'विशद' भाव से गुरु चरणों में, अपना शीश झुकाऊँ।
गुरुवर के ही चरण शरण में, मरण समाधि पाऊँ।।
कि तुमने किया जगत् उद्धार, आई मेरी भी अब बार।
गुरु हम आश लगाए हैं- परम पूज्य...।।3।।



## भजन

बोलते चलो जय बोलते चलो, गुरुवर की जय-जय बोलते चलो।
ज्ञानी और ध्यानी मेरे गुरु हैं महान, वीतरागी गुरु गुण रत्नों की खान।
करना है हमें गुरु का गुणगान, गुरु बिना होगा नहीं कभी कल्याण।।
आत्मा के गुण को बिलोलते चलो....।।1।।
गुरु के बिना नहीं होता सद्ज्ञान, गुरु भक्ति से बढ़े भक्तों की शान।
बढ़ता है सारे जग में सम्मान, भक्ति से भक्तों का हो निर्वाण।।
चेतन की शक्ति को तोलते चलो.....।।2।।
गुरु भक्ति से जले ज्ञान के चिराग, गुरु भक्ति से रहे मन में विराग।
मोह और माया को अब तो तू त्याग, सो रहा सदियों से भाई अब जाग।।
विशद हृदय के पट खोलते चलो.....।।3।।
गुरु के ज्ञान का कोई पार नहीं है, गुरु बिन जग में आधार नहीं है।
गुरुवर के मन में विकार नहीं है, गुरु गुण सम उपहार नहीं है।।
गुरु गुण अमृत घोलते चलो.....।।4।।

* * *

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी।
तो सूनी पड़ी रहती अदालत तुम्हारी।।
नहीं कोई आता फिर दर पे तुम्हारे, तो सूने पड़े रहते मंदिर ये सारे।।
कृपा करना भक्तों पे विनती हमारी.... तो....।।1।।
दुःखी जब पुकारे तो दुःख हरना आके, जाये न कोई दर से मन को दुखा के।
शुभाशीष देना चाहे नर हो या नारी.... तो....।।2।।
कृपा का ही फल भक्त आते हैं द्वारे, श्रद्धा सहित बोलते जय-जयकारे।
ये जीवन दिया हमको कृपा की है भारी....तो....।।3।।
जीने की हमको कला भी सीखा दो, मुक्ति का हमको शुभ मार्ग दिखा दो।
कर दो कृपा हम पे हे जग के उपकारी ....तो....।।4।।
हम आये चरण में 'विशद' मुक्ति पाने, आतम को आतम में आतम से ध्याने।।
करुणा करो नाथ करुणा के धारी ....तो....।।5।।

## *(तर्ज- कर तू गुणगान...)*

कर तू गुरु गुणगान भाई, कर तू गुरु गुणगान।
हो जाए कल्याण भाई, हो जाए कल्याण।।

गुरु के गुण को गाने वाला, गुरु गुण को पा जाता है।
कर्म करे इंसान शुभाशुभ, उसके फल को पाता है।।
कर ले तू श्रद्धान भाई, कर ले सद् श्रद्धान...।।1।।

धर्म अहिंसा पालन करना, महावीर की वाणी है।
पाप कहा पर को दुख देना, कहती ये जिनवाणी है।।
देना जीवन दान भाई देना, जीवन दान...।।2।।

सत्य वचन औषधि परम है, जख्म हृदय के भरते हैं।
झूठ वचन के कारण प्राणी, दुःख पाकर के मरते हैं।।
रखना तू यह ध्यान भाई, रखना तू यह ध्यान...।।3।।

पर के धन को हरने वाला, पर का जीवन घाती है।
व्रत अचौर्य है चोरी जग में, नहीं किसी को भाती है।।
चोर कहा नादान भाई, चोर कहा नादान...।।4।।

भोगी भोग में रत रहकर के, जग में गोते खाता है।
ब्रह्मचर्य व्रत के पालन से, परम ब्रह्म बन जाता है।।
हो जाता भगवान भाई, हो जाता भगवान...।।5।।

संग्रह वृत्ति से भूखे कई, लोग जहाँ में रहते हैं।
पाप कमाते 'विशद' जहाँ में महावीर ये कहते हैं।।
दान से हो सम्मान भाई, दान से हो सम्मान।।6।।

* * *



## *(तर्ज : एक तू न मिला सारी....)*

मुझे तू मिल गया सारी दुनियाँ मिले न तो क्या ?
मेरा मन खिल गया सारी बगिया खिले न तो क्या ?

मैं तो इंसान हूँ और तू है मेरे भगवन्, पाना मैं चाहूँ तेरे द्वय चरण।
भक्ति दिल में बसे, शक्ति तन में रहे न तो क्या.....।।1।।
तेरे चरणों की मैं चाहता धूल हूँ, रहना चाहूँ सदा तेरे अनुकूल हूँ।
साथ तेरा रहे और दुनियाँ रहे न तो क्या.....।।2।।
चरणों में तेरे जो रह लेते हम, जिन्दगी में कोई फिर न रह जाता गम।
शरण तेरी मिले 'विशद' कोई मिले न तो क्या.....।।3।।
मंजिल दर मंजिलें कई पाते रहे, हम अपना सभी को बनाते रहे।
मोक्ष मंजिल मिले और मंजिल मिले न तो क्या.....।।4।।
देखकर लोग कई हमसे जलते रहे, राह पर फिर भी हम अपनी चलते रहे।
ज्ञान दीपक जले और दीपक जले न तो क्या.....।।5।।

## *(तर्ज : तुझे भूलना तो चाहा...)*

गुरुदेव विशद ज्ञान की गंगा बहा रहे हैं।
सद्भक्त यहाँ आके, उसमें नहा रहे हैं।।
तीर्थंकरों की ध्वनि को, आगम कहा गया है।
महावीर प्रभु की वाणी, जग को सुना रहे हैं।। सद्भक्त...
सदज्ञान आचरण कगो, गुरुदेव धारते हैं।
चर्या के द्वारा आगम, सबको पढ़ा रहे हैं।। सद्भक्त...
अनुयोग चार पावन, जिनधर्म में कहे हैं।
गुरुदेव सार इसका, सबको बता रहे हैं।। सद्भक्त...
गुरुदेव परम आगम, जिनचैत्य हैं जिनालय।
सर्वज्ञ कलिकाल के, गुरुदेव कहा रहे हैं।। सद्भक्त...
आशीष प्राप्त करने, गुरुदेव शरण आएँ।
गुरुदेव तरण-तारण, जग में कहा रहे हैं।। सद्भक्त...

*(तर्ज : अरे द्वारपालों सुदामा से...)*

अरे गाँववालों सभी से ये कह दो,
गुरुजी नगर के करीब आ गये हैं।
जगे हैं सभी के सौभाग्य भाई,
जो हम सब गुरु की शरण पा गये हैं।।

गुरुवर जी आये, मुनिवर भी आए।
क्षुल्लक और ऐलक, संग अपने लाए।।
गमन करते-करते, न जाने कहाँ से,
गुरुवर नगर के समीप आ गये हैं।।1।।

हम सब को जाना, गुरुवर को लाना।
उपदेश गुरुवर का, हमको भी पाना।।
गुरुवर के दर्शन अरु, उपदेश अनुपम मन में।
हमारे भी श्रेष्ठ भा गये हैं।।2।।

आहार कराएँगे, पुण्य कमाएँगे।
गुरुवर की सेवाकर, भाग्य जगाएँगे।।
विशद गुण है गुरुवर के, जीवन भी अनुपम।
उनके चरण की शरण आ गये हैं।।3।।

सत्संग गुरुवर के, आने से मिलता है।
श्रद्धा का उपवन भी, अन्तर में खिलता है।।
गुरुवर के आने से, जन-जन के मन में भी।
अनुपम शुभ हर्ष छा गया है।।4।।

* * *



*(तर्ज : सूरज प्यारा...)*

सूरज प्यारा चंद प्यारा, प्यारे गगन के तारे हैं।
सारे जग से अनुपम मेरे, जिनवर प्यारे-प्यारे हैं।।

गुण अनन्त हैं श्री जिनेन्द्र के, जिनकी महिमा कौन कहे।
कहने वाला थक जाएगा, भावुकता में शीघ्र जीव वहे।।
रहते हैं इस जग में स्वामी, फिर भी जग से न्यारे हैं।।
सारे जग से....

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, हित उपदेशी होते हैं।
भक्त शरण में जो आ जाते, सबके संकट खोते हैं।।
शरणागत यह जग सारा प्रभु, सबके आप सहारे हैं।
सारे जग से....

सेठ सुदर्शन का शूली से, सिंहासन बनवाया था।
सती द्रौपदी का प्रभु तुमने, क्षण में कष्ट मिटाया था।।
हम हैं सेवक प्रभु आपके, भगवन आप हमारे हैं।
सारे जग से....

नाग-नागिनी को प्रभु, तुमने देवगति पहुँचाया था।
श्रीपाल का कुष्ट मिटाकर, सुन्दर रूप दिलाया था।।
बाल्मीकि अरु अन्जन जैसे, पापी तुमने तारे हैं।
सारे जग से....

तुम हो पूज्य हमारे भगवन, हम पूजा को आये हैं।
भाव पुष्प यह विशद श्रेष्ठ शुभ, हाथ में अपने लाए हैं।।
चरण-कमल के अक्स हृदय में, अपने विशद उतारे हैं।
सारे जग से....

* * *

*(तर्ज : जहाँ नेमि के.....)*

जहाँ गुरु के चरण पड़े, वह पावन धरती है।
पल में ही गुरुवाणी, सबके दुःख हरती है।।

गुरु ने जो गुण पाए, हम भी वह पा जाएँ।
गुरु के गुण पाने को, गुरुवर को हम ध्याएँ।।
इस जग में गुरु भक्ति, शुभ मंगल करती हैं।
पल में ही... ।।1 ।।

जो मोह-तिमिर छाया, वह हरती गुरुवाणी।
जिन गुरुवर की पूजा, इस जग में कल्याणी।।
तीर्थंकर की वाणी, गुरु मुख से झरती है।
पल में ही... ।।2 ।।

गुरुवर की महिमा को, तुम नहीं समझ पाए।
बनकर के अज्ञानी, इस जग में भटकाए।।
न सुनी गुरुवाणी, यह बात अखरती है।
पल में ही... ।।3 ।।

गुरु मुक्ति मारग के, अनुपम अभिनेता हैं।
उत्तम जो तप करते, कर्मों के विजेता हैं।।
गुरुवाणी क्यों तुमरे, न हृदय उतरती है।
पल में ही... ।।4 ।।

सदियों की तुम अपनी, यह भूल सुधारों अब।
ध्याओ तुम गुरुवर को, पुण्योदय होगा तब।।
सुनके गुरुवाणी विशद, हम भूल सुधरती है।
पल में ही... ।।5 ।।

* * *



*(तर्ज : चिट्ठी न कोई संदेश...)*

टूटी गई है माला मोती बिखर गये।
चार दिना के बाद न जाने किधर गये।।

ये जीवन जल का बुलबुला, उस पर फिरता फूला-फूला।
सुख में सुखी और दुख में फूला, चतुर्गति का पड़ा है झूला।।
जीवन के दिन व्यर्थ ही मानो गुजर गये।
कर्म किया जैसा फल पाकर उधर गये। चार दिना... ।।1 ।।

तेरा मेरा का यह घेरा, जोड़ रखा बुधजन का डेरा।
नश्वर है जीवन ये तेरा, चार दिना का जग बसेरा।।
नरक गति के फल को सुनकर, सिहर गये। चार दिना... ।।2 ।।

जन्म समय पर खुशियाँ छाई, बहु तक बाध बजे।
मित्र स्वजन मिलकर के, आये सुन्दर सजे-धजे।।
होय प्रसन्न सभी लोगों ने, हाथों हाथ लिये। चार दिना... ।।3 ।।

बाल अवस्था मित्रों के संग, खेल में निकल गई।
तरुण अवस्था तरुणी के संग, मेल में गुजर गई।।
पावन क्षण जीवन के, व्यर्थ ही निकल गये। चार दिना... ।।4 ।।

अर्ध मृतक सम है बूढ़ापन, हाथ-पैर कपते।
पूजा भक्ति न बन पाती, ना माला जपते।।
जो कुछ सीखा था, जीवन में वह विसर गये। चार दिना... ।।5 ।।

काग बली आने से कोई, रोक नहीं पाये।
'विशद' चले ना कोई माया, खाली हाथ जाये।।
धन्य हुए जो जीवन पाकर, सम्हर गये। चार दिना... ।।6 ।।

* * *

*(तर्ज : दुनियाँ में बसने वाले...)*

चरणों में तेरे मेरा गुरुदेव जी बसर है।
हमको न रंजों गम है, जब तक तेरी नजर है।।

कर्मों के हम सताएँ, भटके नहीं कहाँ हैं।
सारे जहाँ में तुझको, खोजा नहीं कहा है।।
तेरा ठिकाना कोई, ना ग्राम है शहर है।
हमको न..... ।।1।।

आँखों के सामने भी, तुझको न देख पाये।
कई बार दर से तेरे, खाली ही लौट आये।।
नजरों के सामने ही, आया नहीं नजर है।
हमको न..... ।।2।।

मेरे जिगर के अन्दर, तू छुपके जा समाया।
सदियों से खोजने पर, तुझको न खोज पाया।।
अपने से विशद क्यों, तू रहता यू बेखबर है।
हमको न..... ।।3।।

जब वीर का सहारा, हमको यूँ मिल गया है।
सौभाग्य का सितारा, अब मेरा खिल गया है।।
जिस राह पर बढ़े तुम, उस पर मेरा सफर है।
हमको न..... ।।4।।

ना मौत की है परवा, ना जिन्दगी का डर है।
मिट्टी में जा समाना, सबका यही हसर है।।
हो हाथ मेरे सर पर, चरणों में ये जिगर है।
हमको न..... ।।5।।

* * *



*(तर्ज : मधुवन के मंदिरों में...)*

तारों की बात क्या है, चंदा भी झूम जाये।
पारस प्रभु के पद में, सूरज भी सर झुकाये।।

बहकर हवायें आती, प्रभु का संदेश लेकर।
करती है वंदना वह, चरणों में ढ़ोक देकर।।
करके चरण का वंदन, आकाश मुस्कराये।
पारस प्रभु..... ।।1।।

मधुवन में धीमा-धीमा, मकरंद झर रहा है।
सौरभ सुगंध द्वारा, मन मोद कर रहा है।।
फूले हुये गुलों पर, भौंरा भी गुनगुनाये।
पारस प्रभु..... ।।2।।

यह तीर्थराज शास्वत, शुभ फूल है चमन है।
नर सुर की बात क्या है, करते पशु नमन है।।
मस्ती में झूमते हैं, कई मेघ औ दिशायें।
पारस प्रभु..... ।।3।।

भक्तों की देखने को, मिलती है कई कतारें।
जो नृत्यगान करते, औ आरती उतारें।
पड़ती है फीकी सारे, संसार की कलायें।
पारस प्रभु..... ।।4।।

पर्वत की वंदना का, सौभाग्य जगमगाये।
छूटे जहान उसका, मंजिल भी अपनी पाये।।
पारस की वंदना कर, पक्षी गीत गायें।
पारस प्रभु..... ।।5।।

* * *

## (तर्ज : भवसागर में...)

भवसागर में दुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों ?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों ?

सच कहता हूँ मेरे भगवन् ! नहीं प्रेम से आया हूँ।
विपदाओं ने हमको भेजा, व्यथा सुनाने आया हूँ।।
गर्मी जिसको नहीं सताती, वृक्ष के नीचे जाता क्यों ?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों ? ।।1।।

तुम तो सुख के सागर भगवन्, दो बूँद मुझे मिल जाएगी।
जाने वाली अंतिम श्वांसे, कुछ पल को रुक जायेगी।।
नदियों में यदि जल न होता, हंस बैठने आता क्यों ?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों ? ।।2।।

जो कुछ तुमको सुना रहा हूँ, वह मेरी मजबूरी है।
जो कुछ करना चाहो भगवन् !, करना बहुत जरूरी है।।
दूध यदि माँ नहीं पिलाये, बच्चा रूदन मचाता क्यों ?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों ? ।।3।।

भीख नहीं मैं माँग रहा हूँ, नाही कोई भिखारी हूँ।
स्वामी सेवक को देता है, मैं तो भक्त पुजारी हूँ।।
जितनी नीर लुटाता बादल, उतने ऊपर जाता क्यों ?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों ? ।।4।।

भवसागर में.....

* * *



## आचार्य दिवस (कविता)

पद आचार्य दिवस हे गुरुवर !, मिलकर यहाँ मनाते हैं।
जिओ हजारों साल गुरु, हम यही भावना भाते हैं।।

कलिकाल के महावीर बन, गुरुवर ने अवतार लिया।
भारत देश की वसुन्धरा को, हे गुरुवर तुमने धन्य किया।।
जिओ और जीने दो सबको, वीर ने यह सन्देश दिया।
उस नारे को गुरुवर तुमने, पूर्ण रूप स्वीकार किया।
गुरु चरणों में जो आते हैं, धन्य भाग्य हो जाते हैं। जिओ हजारो.. ।।1।।

जहाँ चरण गुरु के पड़ जाते, कण-कण पावन हो जाता।
निर्मल नीर चरण में आते, गंधोदक शुभ बन जाता।।
चरण वंदना करने वाला, अपना भाग्य बढ़ाता है।
शरण प्राप्त करने वाला तो, श्रेष्ठ भक्त बन जाता है।।
शिवपथ के राही बनते जो, अनुगामी बन जाते हैं। जिओ हजारो.. ।।2।।

गुरुवर के गुण हम गाए पाएँ, मुझमें वह सामर्थ्य नहीं।
चरण वंदना हम कर पाएँ, मेरे वह सौभाग्य नहीं।।
ब्रह्मा विष्णु शिव तीर्थंकर, गुरु में सभी समाए हैं।
बृहस्पति भी गुरुवर के गुण, पूर्ण नहीं गा पाए हैं।।
विशद गुरु पद विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं। जिओ हजारो.. ।।3।।

शुभ सरिता की धार हो गुरुवर, तुम रोके न जाओगे।
बाहर से तुम जा भी सकते, हृदय से न जा पाओगे।।
गुरुवर के दर्शन करके हम, भक्त सभी हर्षाएँ हैं।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का, शुभ पर्व मनाने आए हैं।।
यहाँ रहो तो दर्श आपके, हम सबको मिल जाते हैं। जिओ हजारो.. ।।4।।

* * *

## मेरे बागवान

गुरुवर क्या मिल गये, दो जहान मिल गये।
उजड़े हुए चमन को, बागवान मिल गये।।

तेरे कदम निशान बने, मंजिलें मेरी।
पा मंजिलों खुद से ही, अंजान हो गये।।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।1।।

मन करता नहीं अब कभी, स्वर्गों की कामना।
मेरे लिए तो आप ही, भगवान हो गये।।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।2।।

बस मेरी जिन्दगी का सफर, अब हुआ खत्म।
तेरे कदम थमे, मेरे मुकाम हो गये।।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।3।।

क्षमामूर्ति कहो या विशदसागर कहो।
ये नाम आपके मेरी पहचान बन गये।।
उजड़े हुये चमन को, बागवान मिल गये।
गुरुवर क्या मिल गये, कि दो जहान मिल गये।।4।।

* * *

## मुक्तक

जीवन के सूने मंदिर में, आशा के पावन शंख बजे।
तुम जाओ तो अँधियारे में, किरणों के स्वर्णिम साज सजे।।



## हकीकत-ए-जिन्दगी (जिन्दगी की सच्चाई)

हर पल सोच को बदलते देखा है हमने।
इन्सान के अरमानों को जलते देखा है हमने।।

सुना है एक खूबसूरत गुलिस्ताँ है जिन्दगी।
पर इसे भी सूर्य सा ढ़लते देखा है मैंने।।

वात्सल्य (प्यार) पाने का अरमान लिए जिन्दगी में।
हर घड़ी तड़पते देखा है मैंने।

कहता है जमाना प्यार से बढ़कर कुछ नहीं।
उसे भी हर चौराहे पर बिकते देखा है मैंने।।

चोट खाए, ठुकराए हुए मन पर।
इन्सान को मलहम लगाते देखा है मैंने।।

टूटे (इटे) हैं दिल जिसके हजार बार।
टुकड़े संजोए आज भी जीते देखा है मैंने।।

जहाँ से बैगाने होने का लिए मलाल।
आँसू के भवसागर में बहते देखा है मैंने।।

कोई फिर बसाएगा आशियाना आकर।
उन्हीं उम्मीदों को जलाते देखा है मैंने।।

किस्मत वालों के नसीब में प्यार होता है जहाँ का।
हर पल किस्मत को बदलते देखा है मैंने।।

जिन्दगी से अब क्या आस लगाऊँ साथ की।
अपनों को (उसे) भी दामन झटकते देखा है मैंने।।

* * *

## आओ महावीर...

आओ तुम महावीर धरा पर, एक बार फिर से आ जाओ।
हिंसा, चोरी, अत्याचारी से, भारत की लाज बचाओ।।
हे वीर ! प्रभु तुमसे रखता यह, भारत देश बहुत कुछ आशा।
नहीं मिले जब तुम हमको, छाई मन में बहुत निराशा।।
कुर्सी पर बैठे गद्दारों ने, लूटा देश का आज खजाना।
शांति दूत बनकर के भगवन्, तुम भारत का ताज बचाना।।
जन-जन के मन में तुम प्रभुजी, देश प्रेम का गीत सुनाओ।
आओ तुम महावीर धरा पर... ।।1।।
कहीं बाढ़, भूचाल कहीं, बस की टक्कर हो जाती है।
चावल, दाल, अरु तेल कहीं, शक्कर भी खो जाती है।।
जो भी बैठा है गद्दी पर, उससे पाई बहुत निराशा।
आन संभालो तुम भारत को, सबकी लगी है तुम पर आशा।।
दीनों के अंतश की चाहत को, सुनकर प्रभुजी आ जाओ।।
आओ तुम महावीर धरा पर... ।।2।।
सोने की चिड़िया भारत को, लूटा आज लुटेरों ने।
शासन करके लूट लिया है, इस भारत को गोरों ने।।
अब भी इस प्राचीन देश को, शस्त्रों का बल पाक दिखाता।
छुप-छुप करके जाने कितने, उल्टे-सीधे जाल बिछाता।।
जाल बिछे हैं जो भी जितने, उनको आकर तुम सुलझाओ।।
आओ तुम महावीर धरा पर... ।।3।।
पुकार कर रहे मूक पशु भी, जिनका आज गला है कटता।
बन बैठे कई देश शिरोमणि, फिर भी करते कितनी शठता।।
अधिक कहें क्या? आकर देखो, कैसी है ये अर्थव्यवस्था।
'विशद' सिंधु वंदन कर कहता, आन दिखा दो फिर से रस्ता।।
त्रिशला के नंदन बन करके, कुण्डलपुर में फिर से आ जाओ।
आओ तुम महावीर धरा पर, एक बार फिर से आ जाओ।
हिंसा, चोरी, अत्याचारी, से भारत की लाज बचाओ।।



## आओ गुरुदेव...

आओ हे गुरुदेव ! यहाँ पर एक बार तुम भी आ जाओ।
धर्म भावना भूल चुके जो उनको आकर धर्म सिखाओ।।
हे गुरुवर ! तुम पर ही टिकी है हम सब भक्तों की आशाएँ।
कैसे समझाना है भव्यों को आप जानते सब भाषाएँ।।
भटक रहे माये के चक्कर में उनको निज का ज्ञान कराना।
रत्नात्रय की ढाल को लेकर शांति देने को आ जाना।।
शक्ति छुपी है इनके अन्दर आकर के गुरु शक्ति जगाओ।। आओ...
हो सकता है आपके आ जाने पर भी कुछ शांति आ जाये।
नया सृजन हो इस समाज में शायद कुछ परिवर्तन आ जाये।।
उलझने में उलजे जो प्राणी उलझन उनकी तुम सुलझना।
धर्म एकता की शक्ति का इन लोगों को भान कराना।।
जहर फूट का भरा जो इनमें आकर के सब जहर नशाओ।। आओ...
कहीं कुँआरी रहन न जाये, दुखियों के अंतस् की चाहें।
आकर ऐसा काम करो कि आपको जनता खूब सराहे।।
मन में बहुत उमंगें उठती सुनकर के गुरुवर का नाम।
दर्शन करने को ललचाते यहाँ भविक जन चारों धाम।।
धर्म की ज्योति जलाकर गुरुवर अपना भी कुछ नाम कमाओ।। आओ...
पर्यूषण का पर्व है आया मुग्ध हुआ मेरे तन-मन।
अन्तर का स्नेह प्रकट कर पुकार रहा गुरु को जन-जन।।
विश्वविभूति हो विरागसिंधु तुम महावीर के लघुनंदन।
आकर कुछ परिवर्तन कर देना करते हम पद में वंदन।।
सुनने ज्ञकरो लालायित श्रावक आकर कुछ उपदेश सुनाओ।। आओ...
हर्षित मन कितना होगा जब संघ सहित तुम आओगे।
देवपुरी सी शोभा होगी जब चर्या को जाओगे।।
अनुपम दृश्य होगा कितना जब संघ गली से गुजरेगा।
इस नगर धर्म और सब समाज का भी भविष्य सुधरेगा।
'विशद हृदय में खुशियाँ देकर मन में हा-हाकार मचाओ।। आओ...

## गजल

मेहनत से कली फूल, उगाता है वागवाँ।
अमृत कली को लेके, पिलाता है वागवाँ।।
करता नहीं है खेद, गुलिस्तान गुलों की।
लेकर कतरनी काट, सजाता है वागवाँ।।
उड़ती थी जहाँ धूल, कटीली थी साड़ियाँ।
वीरान गुलिस्तान, बनाता है वागवाँ।।
सदियों से लगे आये, कचरे के ढ़ेर थे।
उस ढेर को अग्नि से, जलाता है वागवाँ।।
खिलते हैं फूल पाकर, सूरज की रोशनी।
हँसकर गुलों को आप, हँसाता है वागवाँ।।
फूलों में जाके भरता, मकरन्द चाव से।
सारे जहाँ में खुशबू, लुटाता है वागवाँ।।
मंड़राते 'विशद' भौंरे, मकरन्द चुसते।
टूटे हुए दिलों को, मिलता है वागवाँ।।

## है बताओ क्या करें...

आसमां से रक्त झरता, है बताओ क्या करें।
देखकर के दिल दहलता, है बताओ क्या करें।।
भर रही हैं आह अबलाएँ, जहाँ मर्दों के बीच।
जिगर क्या पत्थर पिघलता, है बताओ क्या करें।।
बेरहम इंसान कितना, आज का यूं हो गया।
जख्म खाकर न बदलता, है बताओ क्या करें।।
भोर होते ही हजारों, कत्ल होते भूमि पर।
बाद में सूरज निकलता, है बताओ क्या करें।।
धर्म औ इंसानियत का, उठ रहा देखो धुआँ।
आज इंसा विष उगलता, है बताओ क्या करें।।
हरेक चेहरे पर उदासी, छा रही है ऐ विशद।
हर तरफ तूफान चलता, है बताओ क्या करें।।



## कविता (केशलुंच)

दृश्य देखके केशलुंच का, रोम-रोम थर्राते हैं।
तन-मन कंपित हो जाता है, आँसू भर-भर आते हैं।।

यह संसार असार जानकर, तन को नश्वर जाना है।
तन में रता है जो चेतन, उसको अपना माना है।।
हो विरक्त इन्द्रिय भोगों से, मन को जीता करते हैं।
स्वजन और परिजन जो सारे, उनकी भी ममता हरते हैं।
पञ्च महाव्रत धारण करके, सत्-संयम अपनाते हैं।। तन-मन...

केशलुंच का दृश्य देखने, वाले आँसू बहाते हैं।
किन्तु निःस्पृह वृत्ति वाले, मुनिवर जी मुस्काते हैं।।
कठिन साधना करने वाले, सभी परीषह सहते हैं।
सहते शीत ऊष्ण की बाधा, शांत भाव से रहते हैं।
घोर परीषह आ जाने पर, जरा नहीं घबराते हैं।। तन-मन...

केशलुंच यूँ करते जैसे, घास उखाड़ा करते हैं।
बालतोड़ या घाव कष्ट से, जरा नहीं जो डरते हैं।।
छोटा सा घर नहीं छूटतशा, वर्ष में टप-टप करता।
दो अंगुल भूमि की खातिर, भाई-भाई से लड़ जाता।
महल मकान धनधान्य स्वजन से, मुनि निस्पृह हो जाते हैं।। तन-मन...

कोमल तन सुकुमाल मुनि का, छाले पैरों में आये।
स्थिर ध्यान लगाए बैठे, नोच स्यालनी भी खाए।।
गरम-गरम आभूषण पाण्डव, मुनिवरों को पहनाए थे।
गजकुमार मुनिवर के सिर पर, शत्रु अग्नि जलाए थे।।
कार्तिकेय मुनि के तन से नृप, चमड़ी भी नुचवाते हैं। तन-मन...

## *बात करता हूँ*

हर चमन को गुलजार बनाने की बात करता हूँ।
यदि जागना चाहो तो जगाने की बात करता हूँ।।
तिमिरचाया है मिथ्यात्व, और अज्ञान का सदियों से।
घोर अंधेरे में दीप जलाने की बात करता हूँ।।
लोग भटक रहे हैं अन्जाने राही की तरह।
मैं उनसे स्वयं को मिलाने की बात करता हूँ।।
क्यों दूर भागते हो परमात्मा से इतने बंधु !
परमात्मा को दिल में बसाने की बात करता हूँ।।
बिछे हैं सूल अनगिनत आपकी राहों में।
उन सूलों को हटाने की बात करता हूँ।।
क्यों बना रहे हो जमीं पर ये नश्वर मकान।
मैं शास्वत मकान बनाने की बात करता हूँ।।
लोग इतना जो जिन्दगी से परेशान हैं भारी।
उन्हें सद्राह दिखाने की बात करता हूँ।।
फूल जो खिलने के लिए आतुर है सदियों से।
विशद फूलों में मकरन्द भरने की बात करता हूँ।।
इन्सान की जिन्दगी को किस प्रकार जिया जाता है।
मैं जिन्दगी का चाल-चलन सिखाने की बात करता हूँ।।
लोग किस्मत की दम पर जिन्दगी जीते हैं सारे।
मैं अपने हाथों किस्मत बनाने की बात करता हूँ।।

सारे गमों को नम कर देंगे आप आके तो देखो।
राज जिन्दगी का बता देंगे आप आके तो देखो।।
हर मुसीबतों से बचाना हमारा काम है प्यारे भाई।
अपने आँचल में छुपा लेंगे साथ आके तो देखो।।



## 24 तीर्थंकर स्तवन

श्री आदीश जिनेन्द्र प्रभु, आदि ब्रह्म अवतार।
चरण वन्दना कर मिले, आदि धर्म आधार।।1।।
जीते विषय कषाय अरु, मद को जीता साथ।
अजितनाथ बनने झुका, अजित नाथ पद माथ।।2।।
सम्भव जिन सम्भाव से, पाए आत्म स्वभाव।
निज स्वभाव पा जाऊँ मैं, बने हृदय में भाव।।3।।
अभिनन्दन वन्दन करूँ, हमको करो निहाल।
अभिनन्दन मैं बन सकूँ, शीष झुकाता बाल।।4।।
सुमतिनाथ ने सुमति से, पाई सुमति महान।
सुमति प्राप्त हो सुमति से, दीजे यह वरदान।।5।।
पद्मप्रभु की पद्म सम, शुभ्र सुकोमल देह।
बनू पद्म सम मैं प्रभु, त्यागू गेह सनेह।।6।।
पार्श्व मणि फीकी रहे, जिन सुपार्श्व के पास।
हृदय बसे जिन देव जी, मम हो चरणों वास।।7।।
चन्द्र चरण में चिह्न है, वर्ण सुचन्द्र समान।
चन्द्रप्रभु के ध्यान से, हो आतम कल्याण।।8।।
सुभम् सुकोमल पुष्प सम, पुष्पदंत भगवान।
वर दे कर दो पुष्प सम, बन जाऊँ गुणवान।।9।।
अंतश्तल में तैरकर, शीतल हुए सुदेव।
मम उर भी शीतल बने, पाऊ चरण की सेव।।10।।
जिन श्रेयांस ने श्रेय से, किया कर्म का नाश।
नि:श्रेयस मैं बन सकूँ, रहे चरण में वास।।11।।
तीन लोक में हुए हो, वासुपूज्य तुम पूज्य।
चरण शरण का दास यह, क्यों हो रहा अपूज्य।।12।।
कल मल सारा शांत कर, विमलनाथ जिनराज ।
माथ झुकाता भाव से, पद में सकल समाज।।13।।
गुण अनन्त की खान हैं, श्री अनन्त जिनराज।
हम अनन्त गुण पा सकें, होय सफल यह काज।।14।।

धर्म धुरन्धर धर्मधर, धर्मनाथ भगवान।
धर्म विशद मैं पा सकूँ, दो हमको यह दान।।15।।
क्रान्ति भ्रान्ति को मैटकर, हुए शांति के नाथ।
शान्तिनाथ के चरण में, झुका रहे हम माथ।।16।।
चक्री काम कुमार अरु, हुए तीर्थ के नाथ।
कुंथुनाथ जी शरण दो, कभी न छूटे साथ।।17।।
विरह किया वसु कर्म से, हुए धर्म के ईश।
अरहनाथ के चरण में, झुका रहे हम शीष।।18।।
मोह मल्ल को जीतकर, मल्लिनाथ के साथ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ सकूँ, जोड़ रहा मैं हाथ।।19।।
मुनिसुव्रत जिनवर हुए, मुनिव्रतों को धार।
पूर्ण व्रतों को प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।20।।
नील कमल पर शोभते, नमीनाथ भगवान।
सुगुण बनू तुम सा प्रभु, गुण अनन्त की खान।।21।।
राज्य तजा राजुल तजी, धार लिया वैराग्य।
नेमिनाथ तुम सा बनूँ, जगे सुभम सौभाग्य।।22।।
चिच्चिन्तामणि पार्श्वजिन, विघ्न विनाशक नाथ।
विघ्न हरण हर लो विघन, झुका चरण में माथ।।23।।
वर्धमान सन्मति प्रभु, वीर और अतिवीर।
महावीर करके कृपा, आन बँधाओ धीर।।24।।
मन वच तन से विमल हो, विमल बनू अनगार।
विमल सिन्धु भव सिन्धु में, दो हमको आधार।।25।।
भरत सिन्धु गुरुवर परम, वन्दन करूँ त्रिकाल।
जिन भक्ति युत चरण में, करते हैं नत भाल।।26।।
राग आग को छोड़कर, धरा दिगम्बर रूप।
विराग सिन्धु मैं पा सकूँ, निज आतम स्वरूप।।27।।
'विशद' भाव से किया है, जिन गुरु का गुणगान।
अक्षर पद की भूल को, पढ़ें विशद धीमान।।28।।

* * *



# रत्नत्रय पूजा

*(स्थापना)*

**चतुर्गति का कष्ट निवारक, दुःख अग्नि को शुभ जलधार।**
**शिवसुख का अनुपम है मारग, रत्नत्रय गुण का भण्डार।।**
**तीन लोक में शांति प्रदायक, भवि जीवों को एक शरण।**
**सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय का आह्वानन।।**

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

*(चाल-नन्दीश्वर)*

**ले हेम कलश मनहार, प्रासुक नीर भरा।**
**देते हम जल की धार, नशे मम जन्म-जरा।।**
**रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।**
**करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।1।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चंदन की गंध अपार, शीतल है प्यारा।**
**है भवतप हर मनहार, अनुपम है प्यारा।।**
**रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।**
**करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।2।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत यह धवल अनूप, हम धोकर लाए।**
**अक्षत पाएँ स्वरूप, अर्चा को आए।।**
**रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।**
**करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।3।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**ले भाँति-भाँति के फूल, उत्तम गंध भरे।**
**हों कामबाण निर्मूल, निर्मल चित्त करे।।**
**रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।**
**करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।4।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**नैवेद्य बना रसदार, मीठे मनहारी।**
**जो क्षुधा रोग परिहार, के हों उपकारी।।**
**रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।**
**करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।5।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीपक की ज्योति प्रकाश, तम को दूर करे।**
**हो मोह महातम नाश, मिथ्या मति हरे।।**
**रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।**
**करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।6।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**ताजी ले धूप सुवास, दश दिश महकाए।**
**हों आठों कर्म विनाश, भावना यह भाए।।**
**रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।**
**करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।7।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**ताजे फल ले रसदार, अनुपम थाल भरे।**
**हो मुक्ति फल दातार, भव से मुक्त करे।।**
**रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।**
**करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।8।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।



**आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।**
**पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।।**
**रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।**
**करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।9।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा- थाल भरा वसु द्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।**
**रत्नात्रय शुभ धर्म की, गाते हम जयमाल।।**

**मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, रत्नत्रय शुभ धर्म कहा।**
**जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष अहा।।**
**प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन है, करना तत्त्वों में श्रद्धान।**
**निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान्।।**
**श्रद्धाहीन ज्ञान चारित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।**
**कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता है सभी व्यर्थ।।**
**गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।**
**सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग में जीवों का उपहार।।**
**ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान्।**
**पुद्गल अर्ध परावर्तन में, जीव करे निश्चय कल्याण।।**
**वस्तु तत्त्व का निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का ह्रास।**
**निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।।**
**निजानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान।**
**कर्मों का संवर हो जिससे, आश्रव का हो पूर्ण विनाश।।**
**गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवलज्ञान प्रकाश।**
**रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे प्राप्त।।**
**अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त।**

**अन्तर्मन की यही भावना, रत्नत्रय का होय विकास।।**
**कर्म निर्जरा करें विशद हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास।**

**दोहा- तीनों लोकों में कहा, रत्नत्रय अनमोल।**
**रत्नत्रय शुभ धर्म की, बोल सके जय बोल।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा- जिसने भी इस लोक में, पाया यह उपहार।**
**अनुक्रम से उनको मिला, विशद मोक्ष का द्वार।।**

*।। इत्याशीर्वादः ।।*

# सम्यक् दर्शन पूजा

***(स्थापना)***

**शंकादि वसु दोष हैं, अरु रही मूढ़ता तीन।**
**छह अनायतन आठ मद, पच्चिस दोष विहीन।।**
**देव-शास्त्र-गुरु के प्रति, धारे सद् श्रद्धान्।**
**ज्ञान और चारित्र में, सम्यक् दर्श प्रधान।।**
**सम्यक् दर्शन श्रेष्ठ है, मंगलमयी महान्।**
**विशद हृदय में हम करें, जिसका शुभ आह्वान।।**

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

***(चाल-छन्द)***

**हम भव-भव रहे दुखारी, मिथ्यामति हुई हमारी।**
**यह नीर चढ़ाने लाए, भव रोग नशाने आए।।**
**अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।**
**हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।



**हमने भव रोग बढ़ाया, न सम्यक् दर्शन पाया।**
**हम चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाएँ, भव का सन्ताप नशाएँ।।**
**अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।**
**हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम जग में रहे अकुलाए, न अक्षय पद को पाए।**
**अब अक्षय पद प्रगटाएँ, अक्षत यह धवल चढ़ाएँ।।**
**अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।**
**हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोगों की आश लगाए, तीनों लोकों भटकाए।**
**अब कामबाण नश जाए, हम फूल चढ़ाने लाए।।**
**अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।**
**हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**हमने व्यंजन कई खाए, सन्तुष्ट नहीं हो पाए।**
**अब क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।।**
**अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।**
**हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है मोह की महिमा न्यारी, मोहित करता है भारी।**
**हम दीप जलाकर लाए, यह मोह नशाने आए।।**
**अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।**
**हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम होता अविकारी, कर्मों से बना विकारी।
हम कर्म नशाने आए, अग्नि में धूप जलाए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भटकते आए, न मोक्ष महाफल पाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरणों श्रेष्ठ चढ़ाएँ।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चतुर्गति भटकाए, न पद अनर्घ शुभ पाए।
यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।।
अब सम्यक् श्रद्धा जागे, न विषयों में मन लागे।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

दोहा- श्रेष्ठ कहा त्रय लोक में, सम्यक् दर्श त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, जिसकी हम जयमाल।।

सम्यक्दर्शन रत्न श्रेष्ठ है, मिथ्या मति का करे विनाश।
भेद ज्ञान जागृत करता है, जीव तत्त्व का करे प्रकाश।।1।।
जिन बच में शंका न धारे, लोकाकांक्षा से हो हीन।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति किंचित्, ग्लानि से जो रहे विहीन।।2।।
देव धर्म गुरु के स्वरूप का, निर्णय करते भली प्रकार।
दोष ढाकते गुण प्रगटित कर, हुआ धर्म गुरु के आधार।।3।।
श्रद्धा चारित से डिगते जो, स्थित करते निज स्थान।
संघ चतुर्विध के प्रति मन से, वात्सल्य जो करें महान्।।4।।



धर्म प्रभावना करते नित प्रति, तपकर आगम के अनुसार।
लोक देव पाखंड मूढ़ता, पूर्ण रूप करते परिहार।।5।।
छह अनायतन सहित दोष इन, पच्चिसों से रहे विहीन।
द्रव्य तत्त्व के श्रद्धाधारी, सप्त भयों से रहते हीन।।6।।

दोहा- दर्शन के शुभ आठ गुण, संवेगादि महान।
मैत्री आदि भावना, श्रद्धा के स्थान।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सम्यक् दर्शन लोक में, मंगलमयी महान।
इसके द्वारा भव्य जन, पाते पद निर्वाण।।

*।। इत्याशीर्वादः ।।*

# सम्यक् ज्ञान पूजा

*(स्थापना)*

अन्तर भावों में जगे, जिनके सद् श्रद्धान।
पा लेते हैं जीव वह, अतिशय सम्यक् ज्ञान।।
संशय विभ्रम नाश हो, हो विमोह की हान।
पावन सम्यक् ज्ञान का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

*(तर्ज - सोलह कारण पूजा)*

नीर लिया यह क्षीर समान, करने निज गुण की पहिचान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।
अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।
परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन श्रेष्ठ सुगन्धिवान, करता है जो शांति प्रदान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।**
**अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।2।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षय अक्षत लिए महान, अक्षय पद के हेतु प्रधान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।**
**अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।3।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्प सुगन्धित आभावान, करने कामबाण की हान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।**
**अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।4।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**मिष्ठ सरस लाए पकवान, क्षुधा रोग नाशी हम आन।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।**
**अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।5।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोह अंध का होय विनाश, करते अनुपम दीप प्रकाश।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।**
**अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।6।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।



**खेते धूप अग्नि में आन, कर्म नसे करके निज ध्यान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।**
**अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।7।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रीफल आदि लिए महान, मोक्ष महाफल मिले प्रधान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।**
**अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।8।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अर्घ्य बनाया यह मनहार, पद अनर्घ पाने भव पार।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।**
**अष्ट अंगयुत सम्यक् ज्ञान, प्रगटाएँ हम भी भगवान।**
**परम शुभकार, सारे जग में मंगलकार।।9।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा-** **सर्व सुखों का मूल है, जग में सम्यक् ज्ञान।**
**जयमाला गाते परम, पाने पद निर्वाण।।**

***(चौपाई)***

**सम्यक् ज्ञान रत्न मनहारी, भवि जीवों का है उपकारी।**
**आगम तृतिय नेत्र कहाए, अष्ट अंग जिसके बतलाए।।1।।**
**शब्दाचार प्रथम कहलाया, शुद्ध पठन जिसमें बतलाया।**
**अर्थाचार अर्थ बतलाए, शब्द अर्थमय उभय कहाए।।2।।**
**कालाचार सुकाल बताया, विनयाचार विनय युत पाया।**
**नाम गुरु का नहीं छिपाना, यह अनिह्नवाचार बखाना।।3।।**

**नियम सहित उपधान कहाए, आगम का बहुमान बढ़ाए।**
**द्वादशांग जिनवाणी जानो, जन-जन की कल्याणी मानो।।4।।**

**ॐकारमय जिनवर गाए, झेले गणधर चित्त लगाए।**
**आचार्यों ने उनसे पाया, भव्यों को उपदेश सुनाया।।5।।**

**लेखन किया ग्रन्थमय भाई, वह माँ जिनवाणी कहलाई।**
**वृहस्पति महिमा को गाए, फिर भी पूर्ण नहीं कह पाए।।6।।**

**बालक कितना जोर लगाए, सागर पार नहीं कर पाए।**
**सागर से भी बढ़कर भाई, विशद ज्ञान की महिमा गाई।।7।।**

**दोहा- पञ्च भेद सद्ज्ञान के, मतिश्रुत अवधि महान।**
**मनःपर्यय केवल्य शुभ, बतलाए भगवान।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा- सम्यक् ज्ञान महान है, शिव सुख का आधार।**
**उभय लोक सुखकर विशद, मोक्ष महल का द्वार।।**

*।। इत्याशीर्वादः ।।*

# सम्यक् चारित्र पूजा

***(स्थापना)***

**पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विधि चारित्र गाया।**
**सम्यक् श्रद्धा सहित भाव से, नहीं आज तक अपनाया।।**
**संवर और निर्जरा का शुभ, ये ही है अनुपम साधन।**
**सम्यक्चारित्र का करते हम, विशद हृदय में आह्वानन।।**

ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।



***(तर्ज - नंदीश्वर)***

**जिन वचनामृत सम शीतल जल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।**
**जन्म-जरा-मृत्यु का हम भी, रोग नशाने आये हैं।।**
**सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।**
**काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।1।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रेष्ठ सुगन्धित शीतल चंदन, हम घिसकर के लाए हैं।**
**भव संताप मिटाकर अपना, शिव पद पाने आए हैं।।**
**सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।**
**काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।2।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**उज्ज्वल धवल अखण्डित अक्षय, पद पाने हम आए हैं।**
**मिथ्यामल हो नाश हमारा, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।।**
**सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।**
**काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।3।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्प सुगन्धित निज खुशबू से, चतुर्दिशा महकाए हैं।**
**विषय वासना नाश हेतु हम, अर्पित करने लाए हैं।।**
**सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।**
**काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।4।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**नाश किए जिन क्षुधा रोग का, अर्हत् पदवी पाए हैं।**
**यह नैवेद्य चढ़ाकर हम भी, वह पद पाने आए हैं।।**
**सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।**
**काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।5।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोह अंध का नाश किए जिन, केवल ज्ञान जगाए हैं।**
**अन्तरज्ञान की ज्योति जलाने, दीप जलाकर लाए हैं।।**
**सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।**
**काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।6।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, सिद्ध सुपद को पाए हैं।**
**आठों कर्मनाश हों मेरे, धूप जलाने आए हैं।।**
**सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।**
**काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।7।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोक्ष महाफल अनुपम अक्षय, हम पाने को आए हैं।**
**श्रेष्ठ सरस फल लिए थाल में, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।**
**सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।**
**काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।8।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्टम वसुधा पाने को हम, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।**
**लख चौरासी भ्रमण नाशकर, शिव सुख पाने आए हैं।।**
**सम्यक् चारित्र पाकर हमको, भव का रोग नशाना है।**
**काल अनादि भ्रमण मैटकर, मुक्ति वधू को पाना है।।9।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा- तेरह विध चारित्र है, अतिशय पूज्य त्रिकाल।**
**सम्यक् चारित्र की यहाँ, गाते हम जयमाल।।**

***(चाल-छन्द)***

**शुभ सम्यक्चारित्र जानो, तुम रत्न अनोखा मानो।**
**जो पाँचों पाप नशाए, फिर पंच महाव्रत पाए।।1।।**

**हो पञ्च समीति धारी, त्रय गुप्ति का अधिकारी।**
**जो त्रय हिंसा के त्यागी, हैं देशव्रती बड़ भागी।।2।।**

**मुनि सब हिंसा के त्यागी, विषयों में रहे विरागी।**
**निज आतम ध्यान लगाते, तब निजानन्द सुख पाते।।3।।**

**सामायिक संयम धारी, मुनिवर होते अविकारी।**
**छेदोपस्थापना जानो, व्रत शुद्धि जिससे मानो।।4।।**

**परिहार विशुद्धि भाई, जिसका अतिशय प्रभुताई।**
**जब समवशरण में जावे, आठ वर्ष ज्ञान उपजावे।।5।।**

**मुनिवर फिर संयम पावें, न प्राणी कष्ट उठावें।**
**वादर कषाय जब खोवे, तब सूक्ष्म साम्पराय होवे।।6।।**

**उपशम क्षय जब हो जावे, तब यथाख्यात प्रगटावे।**
**संयम यह पाँचों पाए, वह केवलज्ञान जगाए।।7।।**

**हो सर्व कर्म के नाशी, बन जाते शिवपुर वासी।**
**वे सुख अनन्त को पाते, न लौट यहाँ फिर आते।।8।।**

**दोहा- सम्यक् चारित प्राप्त कर, करें कर्म का अन्त।**
**ज्ञान शरीरी सिद्ध जिन, हुए अनन्तानन्त।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा- भाते हैं यह भावना, पूर्ण करो भगवान।**
**सम्यक्चारित्र प्राप्त हो, सुपद मिले निर्वाण।।**

*।। इत्याशीर्वादः ।।*

## समुच्चय जयमाला

**दोहा- सम्यक् श्रद्धा ज्ञानव्रत, रत्नत्रय शुभकार।**
**गाते हैं जयमालिका, पाने भवोदधि पार।।**

*(बेसरी छन्द)*

**मन में सम्यक् श्रद्धा पावे, सम्यक्ज्ञानी जीव कहावे।**
**पञ्च महाव्रत भी जो धारे, पञ्च समिति हृदय सम्हारे।।1।।**

**होके तीन गुप्ति के धारी, मुनिवर हो जाते अविकारी।**
**स्थिर होके ध्यान लगाते, उनके कर्म बन्ध कट जाते।।2।।**

**संवर सहित निर्जरा पाते, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्याते।**
**सोलह कारण भावना भावें, दशलक्षण शुभ धर्म उपावें।।3।।**

**अतिशयकारी पुण्य कमाते, श्रेष्ठ संहनन वह प्रगटाते।**
**अतिशय केवलज्ञान जगाते, अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाते।।4।।**

**शिव रमणी से प्रीति बढ़ाते, चतुर्गति के दुःख नशाते।**
**वह अष्टादश दोष नशाते, जन्मादि के रोग मिटाते।।5।।**

**रागादि का भाव नशावे, परमानन्द दशा उपजावें।**
**परमातम के पद को पावें, निज की शुद्ध दशा पा जावें।।6।।**

**सुख अनन्त यह प्राणी पावे, नहीं लौट भव में भटकावे।**
**हम भी यही भावना भाये, रत्नत्रय निधि अब मिल जाये।।7।।**

**दोहा- रत्नत्रय शुभ धर्म है, तीनों लोक प्रधान।**
**रत्नत्रय पाने विशद, करते हम गुणगान।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा- सम्यक् श्रद्धा ज्ञान बिन, भ्रमण किया संसार।**
**निधि प्राप्त कर धर्म की, पाना मुक्ति द्वार।।**

*।। इत्याशीर्वादः ।।*

## क्षमावाणी पूजा

*(स्थापना)*

**क्षमा अंग जिन धर्म का मूल कहे तीर्थेश।**
**सम्यक् श्रद्धा ज्ञान युत, ध्याये इसे विशेष।।**
**सहधर्मी से प्रेम हो, हो पापों का नाश।**
**करके जिन आराधना, सम्यक् ज्ञान प्रकाश।।**

ॐ ह्रीं क्षमावाणी ! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

*(छन्द : ताटक)*

**निर्मल नीर चढ़ाने लाए, प्रभु चरणों भरके झारी।**
**जन्म-जरा हो नाश हमारा, आई अब मेरी बारी।।**
**क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।**
**शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।1।।**

ॐ ह्रीं क्षमावाणी जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**परम सुगन्धित चंदन लाए, श्रेष्ठ चढ़ाने मनहारी।**
**भव आताप विनाश हमारा, हो जाए हे त्रिपुरारी।।**
**क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।**
**शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।2।।**

ॐ ह्रीं क्षमावाणी चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षय अक्षत चढ़ा रहे हैं, मंगलमय अतिशयकारी।**
**अक्षय पद हो प्राप्त हमें हम, बने रहे न संसारी।।**
**क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।**
**शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।3।।**

ॐ ह्रीं क्षमावाणी अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्प सुगन्धित लिए मनोहर, हमने यह मंगलकारी।**
**कामबाण विध्वंस करो प्रभु, तुम हो जग संकटहारी।।**
**क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।**
**शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।4।।**

ॐ ह्रीं क्षमावाणी पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**यह नैवेद्य बनाए हमने, शुद्ध सरस विस्मयकारी।**
**क्षुधा रोग हो नाश हमारा, बन जाएँ हम अविकारी।।**
**क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।**
**शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।5।।**

ॐ ह्रीं क्षमावाणी नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रत्नमयी यह दीप जलाकर, लाए हैं हम तमहारी।**
**मोह अंध का नाश करो प्रभु, बन जाओ मम हितकारी।।**
**क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।**
**शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।6।।**

ॐ ह्रीं क्षमावाणी दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**धूप बनाई अष्ट गंध युत, मंगलमय खुशबूकारी।**
**अष्ट कर्म हों नाश हमारे, बन जाएँ शिवपद धारी।।**
**क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।**
**शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।7।।**

ॐ ह्रीं क्षमावाणी धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रेष्ठ सरस फल यहाँ चढ़ाने, लाए हैं, हम शुभकारी।**
**मोक्ष महाफल हमें प्राप्त हो, पावन है जो शिवकारी।।**
**क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।**
**शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।8।।**

ॐ ह्रीं क्षमावाणी फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, लाए हैं हम अघहारी।**
**पद अनर्घ अनुपम है शास्वत, भवि जीवों को सुखकारी।।**
**क्षमावाणी शुभ पर्वोत्तम को, भाव सहित हम करें प्रणाम।**
**शुद्ध दशा को पाकर मेरा, सिद्ध शिला पर हो विश्राम।।9।।**

ॐ ह्रीं क्षमावाणी अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा- पर्व क्षमावाणी विशद, नाशे वैर विरोध।**
**गाते हैं जयमाल अब, पाने आतम बोध।।**

***(शम्भू छन्द)***

**जैनधर्म का मूल कहा है, देव-शास्त्र-गुरु में श्रद्धान।**
**शंका करे नहीं तत्त्वों में, निशंकित गुण कहा प्रधान।।**
**भोगों की वांछा न करता, निकांक्षित गुण कहे जिनेश।**
**रहित ग्लानि से होता है, देव-शास्त्र-गुरु में अवशेष।।1।।**

**जो कुदेव को नहीं मानता, वह अमूढ़ दृष्टि विद्वान।**
**ढ़ाके अवगुण देवादि के, उपगूहन गुणधारी मान।।**
**जैनधर्म से डिगने वाले, को स्थिर जो करे विशेष।**
**साधर्मी से प्रीति करे वह, वात्सल्य गुण कहे जिनेश।।2।।**

**करे प्रकाशन जैनधर्म का, है प्रभावना अंग महान।**
**अष्ट अंग पाले सद्दृष्टि, अष्टांग पावे सम्यक् ज्ञान।।**
**शब्दाचार पठन शब्दों का, अर्थाचार है अर्थ प्रधान।**
**उभयाचार उभय का वाची, है संकल्प सहित उपधान।।3।।**

**कालाचार समय से पढ़ना, विनयाचार विनय युत जान।**
**ज्ञान का हो बहुमान अनिह्नव, गुरु का नहीं छिपाना नाम।।**

छहों काय जीवों की रक्षा, करते व्रती अहिंसा धार।
सत्य महाव्रतधारी हित-मित, वचन बोलते हैं मनहार।।4।।

चोरी रहित अचौर्यव्रती है, ब्रह्मचर्य धर त्यागे काम।
परिग्रह त्यागी मूर्छा त्यागे, अपरिग्रही है प्यारा नाम।।
मन गुप्ति के धारी करते, कायोत्सर्ग सहित विश्राम।
काय गुप्ति के धारी करते, कायोत्सर्ग सहित विश्राम।।5।।

ईर्या समिति धारी चलते, चार अरत्नि भूमि निहार।
मिष्ट वचन बोले मनहारी, भाषा समिति धार शुभकार।।
छियालिस दोष टालकर भोजन, करें एषणा समीतिवान।
देख प्रमार्जित करके वस्तु, निक्षेपण करते आदान।।6।।

मल एकान्त में करें विसर्जन, समीति प्रतिष्ठापन को धार।
दर्शन-ज्ञान आचरण के गुण, बतलायें ये विविध प्रकार।।
रत्नात्रय की विधि बतायी, क्षमा धर्म के लिए महान।
चैत माघ भादो त्रय महीने, क्षमा धर्म के हैं स्थान।।7।।

दोहा- उत्तम क्षमा को आदिकर, बतलाए दश धर्म।
बाद क्षमावाणी करो, विशद श्रेष्ठ यह कर्म।।

ॐ ह्रीं क्षमावाणी जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तन मन वाणी में क्षमा, जागे छाय महान।
क्षमा धर्म को धारकर, पाएँ पद निर्वाण।।

*।। इत्याशीर्वादः ।।*

# भजन

*(तर्ज- मधुवन के मंदिरों...)*

बाड़े में पद्मप्रभुजी, अतिशय दिखा रहे हैं।
अतएव भक्त चरणों, माथा झुका रहे हैं।।

मूला था जाट भोला, सपना उसे दिखाया।
सौभाग्य खोदने का, मूला ने श्रेष्ठ पाया।
हम पुण्य के सुफल से, दर्शन जो पा रहे हैं। अतएव....

भक्ति से भक्त आके, प्रभु को पुकारते हैं।
मुद्रा प्रभु की अनुपम, एकटक निहारते हैं।।
आकर के श्रण श्रावक, गुणगान गा रहे हैं। अतएव....

आते हैं दुःखी प्राणी, दुःखड़ा यहाँ सुनाते।
कर अर्चना प्रभु की, पीड़ा सभी मिटाते।।
कई भूत-प्रेत आकर, महिमा दिखा रहे हैं। अतएव....

दरबार में प्रभु के जाते हैं, रोते-रोते।
आशीष प्राप्त करके, आते हैं हँसते-हँसते।।
चरणों में भक्त आकर, पूजन रचा रहे हैं। अतएव....

है सर्व ऋद्धि सिद्धि दायक, विधान पूजा।
इसके सिवा न कोई है, मंत्र और दूजा।।
यह कृति 'विशद' अनुपम, पद में चढ़ा रहे हैं। अतएव....

* * *

# गुरु वंदना

*(तर्ज : हूँ स्वतंत्र निश्चल....)*

गुरुवर क्यों बैठे चुपचाप, ज्ञान सिखाओ गुरुवर आप।

गलती करो हमारी माफ, राह दिखाओ हमको साफ।।
हम सबका हो पूर्ण विकास, गुरुवर करो दो पूरी आस।
हमको है पूरा विश्वास, चरणों में करते अरदास।। गुरुदेव क्यों...
गुरुवर हो तुम ज्यों आकाश, हम हैं सभी चरण के दास।
चरणों रहे हमारा वास, गुरुवर रहो हमारे पास।। गुरुदेव क्यों...
जग का नहीं है कोई माप, भटक रहे हम करके पाप।
महामंत्र का करना जाप, आँख मींच करके चुपचाप।। गुरुदेव क्यों...
तुम हो गुरु हमारे नाथ, तुम बिन हम हैं सभी अनाथ।
मोक्ष मार्ग में देना साथ, पद में झुका रहे हम माथ।। गुरुदेव क्यों...
करते सभी वार्तालाप, जैन धर्म की छूटे छाप।
मोक्ष महल में होवे वास, मन में लगी हमारे आस।। गुरुदेव क्यों...
मुस्करा करके दो आशीष, चरणों झुका रहे हम शीश।
मोह राग का 'विशद' अलाप, मिट जाए मन का संताप।। गुरुदेव क्यों...

* * *

# श्री जिनवर की आरती

*(तर्ज- प्रभु रथ पर हुए सवार...)*

प्रभु की आरती में आज, नगाड़े बाज रहे।। टेक।।
सब ठुमुक-ठुमुक कर नाच रहे, कई वाद्य ध्वनि में बाज रहे।
श्री नेमिनाथ जिनराज, नगाड़े बाज रहे।।1।।

कई भक्त आरती गाते हैं, ताली कई लोग बजाते हैं।
आते आरती के काज, नगाड़े बाज रहे।।2।।

शुभ घी की ज्योति जलाई है, आरती करने को आई है।
मिलकर के सकल समाज, नगाड़े बाज रहे।।3।।

प्रभु के यह भक्त निराले हैं, प्रभु भक्ति के मतवाले हैं।
प्रभु तारण तरण जहाज, नगाड़े बाज रहे।।4।।

क्या वीतराग छवि प्यारी है, नाशा दृष्टि मनहारी है।
है विशद धर्म के ताज, नगाड़े बाज रहे।।5।।

* * *

# लघु योगि भक्ति

**ईर्यापथ भक्ति शुभ वन्दन, पूर्वाचार्यों के अनुसार।**
**सकल कर्म के क्षय हेतु हम, करते हैं गुरु बारम्बार।।**
**भाव पुष्प से पूजा वन्दन, स्तव सहित समर्पित अर्घ्य।**
**लघु योगी भक्ती सम्बन्धी, करते हैं हम कायोत्सर्ग।।9।।**

*(कायोत्सर्ग करें।)*

वर्षा ऋतु विद्युत हो गर्जन, वृक्ष मूल में हो अधिवास।
शीत ऋतु में निर्भय साधक, व्यक्त देह लकड़ी सम खासङ्क
रवि किरणों से तप्त ग्रीष्म में, गिरि शिखर पर धारें योग।
मुनि श्रेष्ठ जो मोक्ष सिधारे, हमको दें वह धर्म संयोगङ्क 1ङ्क
वर्षा ऋतु में तरु के नीचे, शीत निशा रहते मैदान।
ग्रीष्म ऋतु पर्वत के ऊपर, वन्दूँ मुनि जो करते ध्यानङ्क 11ङ्क
जो निर्ग्रन्थ गिरि कन्दर में, करते हैं दुर्गों में वास।
लें आहार पात्र में कर के, उत्तम गति वह पावें खासङ्क 12ङ्क

## अञ्चलिका

कायोत्सर्ग किया है हमने, योगि भक्ति का हे भगवन्!
उसकेआलोचन की इच्छा, करता हूँ करके वन्दनङ्क
दो समुद्र अरु ढाई द्वीप में, कर्म भूमियाँ हैं पन्द्रह।

**आतापन अभ्रावकाश अरु, वृक्ष मूल वीरासन यहङ्क1ङ्क**
**कुक्कुट आसन एक पार्श्वशुभ, पक्षोपवास आदि युत संत।**
**उनकी नित्य अर्चना पूजा, वन्दन नमन् गुरु मैं अनन्तङ्क**
**दु:खों का क्षय हो कर्मों का, रत्नत्रय हो प्राप्त प्रभो!**
**सुगति गमन हो मरण समाधि, जिन गुण पाऊँ शीघ्र विभोङ्क 2ङ्क**

●●●

# श्रावक प्रतिक्रमण

**समता सर्वभूतेषु, संयमः शुभभावना।**
**आर्तरौद्र परित्यागः, तद्धि प्रतिक्रमणं मतम्।।**

सब जीवों पर साम्यभाव धारण करके शुभ भावनापूर्वक संयम पालते हुए, आर्त–रौद्र का त्याग प्रतिक्रमण कहलाता है।

हे जिनेन्द्र ! हे देवाधिदेव ! हे वीतरागी सर्वज्ञ हितोपदेशी अरिहन्त प्रभु ! मैं पापों के प्रक्षालन के लिए, पापों से मुक्त होने के लिए, आत्म उत्थान के लिए, आत्म जागरण के लिए प्रतिक्रमण करता हूँ। (इस प्रकार प्रतिज्ञा करके एक आसन से बैठकर प्रतिक्रमण प्रारम्भ करें।)

पापी, दुरात्मा, जड़बुद्धि, मायावी, लोभी और राग–द्वेष से मलिन चित्तवाले मैंने जो दुष्कर्म किया है, उसे हे तीन लोक के अधिपति ! हे जिनेन्द्र देव ! निरन्तर समीचीन मार्ग पर चलने की इच्छा करने वाला मैं आज आपके पादमूल में निन्दापूर्वक उसका त्याग करता हूँ।

हाय ! मैंने शरीर से दुष्ट कार्य किया है, हाय ! मैंने मन से दुष्ट विचार किया है, हाय ! मैंने मुख से दुष्ट वचन बोला है। उसके लिए मैं पश्चात्ताप करता हुआ भीतर ही भीतर जल रहा हूँ।

निन्दा और गर्हा से युक्त होकर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावपूर्वक किये गये अपराधों की शुद्धि के लिए मैं मन, वचन और काय से प्रतिक्रमण करता हूँ।

समस्त संसारी जीवों की सर्व योनियाँ (जातियाँ) चौरासी लाख हैं एवं सर्व संसारी जीवों के सर्व कुल एक सौ साढ़े निन्यानवे (199½) लाख करोड़ होते हैं, इनमें उपस्थित जीवों की विराधना की हो एवं इनके प्रति होने वाले राग–द्वेष से जो पाप लगे हों। **तस्स मिच्छा मे दुक्कडं** (तत्सम्बन्धी मेरा दुष्कृत मिथ्या हो)।

जो एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय तथा पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीव हैं, इनका जो उत्तापन, परितापन, विराधन और उपघात किया हो, कराया हो और करने वाले की अनुमोदना की है – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त जीवों में से किसी भी जीव की विराधना की हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

एकांत, विपरीत, संशय, वैनयिक और अज्ञान – इन पांच प्रकार के मिथ्यामार्ग और उनके सेवकों की मन–वचन से प्रशंसा की हो– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जिनदर्शन, जलगालन, रात्रिभोजन त्याग, पाँच उदुम्बर त्याग, मद्य त्याग, मांस त्याग मधु त्याग और जीवदया पालन – इन आठ श्रावक के मूलगुणों में अतिचार के द्वारा जो पाप लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे भगवान ! मूलगुणों के अन्तर्गत जिनदर्शन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अविनय से दर्शन किया हो तथा दर्शन या पूजन करते समय मन, वचन, काय की शुद्धि नहीं रखी हो। जिनदर्शन व्रत पालन करते हुए जिनमार्ग में शंका की हो, शुभाचरण पालन कर संसार–सुख की वाञ्छा की हो, धर्मात्माओं के मलिन शरीर को देखकर ग्लानि की हो मिथ्यामार्ग और

उसके सेवन करने वालों की मन से प्रशंसा की हो तथा मिथ्यामार्ग की वचन से स्तुति की हो, इत्यादि अतिचार अनाचार दोनों लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे नाथ ! मूलगुणों के अन्तर्गत जलगालन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, जल छानने के 48 मिनट बाद उसे फिर नहीं छानकर उसका उपयोग किया हो, प्रमाण से छोटे, इकहरे, मलिन, जीर्ण एवं सछिद्र वस्त्र से जल छाना हो। गर्म पानी की मर्यादा समाप्त हो जाने पर उसका उपयोग किया हो, छानने से शेष बचे जल को और जीवानी को यथास्थान (कड़े वाली बाल्टी से कुओं में) न पहुँचाया हो उसे नाली आदि में डाल दिया हो तथा जीवानी की सुरक्षा में या पानी छानने की विधि में प्रमाद किया हो इत्यादि अनाचार मुझे लगे हों –**तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे देवाधिदेव ! मूलगुणों के अन्तर्गत रात्रि भोजन त्याग व्रत में रात्रि के बने भोजन का, सूर्योदय से 48 मिनट के भीतर या सूर्यास्त के एक मुहूर्त पूर्व तथा औषधि के निमित्त रात्रि को रस, फल आदि का सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे करुणा के सागर ! मूलगुणों के अन्तर्गत पंच–उदुम्बर फल त्याग व्रत में सूखे अथवा औषधि निमित्त उदुम्बर फलों का, सर्व साधारण वनस्पति का, अदरक–मूली आदि अनन्तकायिक वनस्पति का, त्रस जीवों के आश्रयभूत वनस्पति का, बिना फाड़ किये सेमफली आदि एवं अनजाने फलों का सेवन किया हो, कराया हो या करने वालों की अनुमोदना की हो, इत्यादि अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे दया के सागर ! मूलगुणों के अन्तर्गत मद्य त्याग व्रत में मर्यादा के बाहर का अचार, मुरब्बा आदि सर्व प्रकार के सन्धानों का, दो दिन व दो रात्रि व्यतीत हुए दही, छाछ एवं काँजी आदि आसवों एवं अर्कों का तथा भांग, नागफेन, धतूरा, पोस्त का छिलका, चरस और गांजा आदि नशीले पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या सेवन करने वालों की अनुमोदना की हो तथा अन्य और भी जो अतिचार–अनाचार जन्य दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे करुणा के सागर ! मूलगुणों के अन्तर्गत मांस त्याग व्रत में चमड़े के बेल्ट, पर्स, जूता–चप्पल, घड़ी का पट्टा आदि का स्पर्श हो गया हो या चमड़े से आच्छादित अथवा स्पर्शित हींग, घी, तेल एवं जल आदि का, अशोधित भोजन का, जिसमें त्रस जीवों का संदेह हो ऐसे भोजन का, बिना छना हुआ अथवा विधिपूर्वक दुहरे छन्ने (वस्त्र) से नहीं छाना गया घी, दूध, तेल एवं जल आदि का, सड़े और घुने हुए अनाज आदि का, शोधनविधि से अनभिज्ञ साधर्मी या शोधन–विधि से अपरिचित विधर्मी के हाथ से तैयार हुए भोजन का, बासा भोजन का, रात्रि में बने भोजन का, चलित रस पदार्थों का, बिना दो फाड़ किये काजू, पुरानी मूंगफली, सेमफली एवं भिंडी आदि का और अमर्यादित दूध, दही तथा छाछ आदि पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य जो भी अतिचार–अनाचार दोष लगे हों– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे परमपिता परमात्मा ! मूलगुणों के अन्तर्गत मधुत्याग व्रत में औषधि के निमित्त मधु का, फूलों के रसों का एवं गुलकन्द आदि का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार–अनाचार दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे नित्य निरंजन देव ! मूलगुणों के अन्तर्गत जीवदया व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अज्ञान रखा हो, उपेक्षा की हो, बिना प्रयोजन जीवों को सताया हो तथा अंगोपांग छेदन किये हों, कराये हों या अनुमोदना की हो, तज्ञन्य जो भी दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

जुआ, मांस, मदिरा, शिकार, वेश्यागमन, चोरी और परस्त्री सेवन– इन सप्तव्यसन सेवन में जो पाप लगा हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

देव दर्शन–पूजन, साधु उपासना–वैयावृत्ति, स्वाध्याय, संयम पालन, इच्छायें सीमित करना और अर्जित संपत्ति का सदुपयोग (दान देना) इन षडावश्यक पालन में अतिचारपूर्वक जो दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

इष्टवियोग, अनिष्ट संयोग, पीड़ा चिंतन और निदान – ये चार आर्तध्यान। हिंसानंद, मृषानंद, चौर्यानंद और परिग्रहानंद – ये चार रौद्रध्यान द्वारा जो पाप लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

राजकथा, चोरकथा, स्त्रीकथा और भोजनकथा करने से जो पाप लगे हों– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जीवों को सताने वाला दुष्ट मन, दुष्ट वचन और दुष्ट काय – ये तीन दण्ड, माया, मिथ्या और निदान तीन शल्य और शब्द गारव, ऋद्धि गारव और सात गारव द्वारा जो पाप लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग – इन पाँच आस्रवों द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

आहार, भय, मैथुन और परिग्रह – इन चार संज्ञाओं के द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

इहलोकभय, परलोकभय, मरणभय, वेदनाभय, अगुप्तिभय, अरक्षाभय (अत्राणभय) और अकस्मात् सप्त भयों के द्वारा जो पापबन्ध हुआ हो– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।** (नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

स्थूल हिंसा विरति व्रत का पालन करते हुए जीवों को मारा हो, बांधा हो, अंगोपांग छेदे हों, अधिक बोझ लादा हो एवं अन्नपान का निरोध किया हो, इत्यादि अनेक दोष कृत–कारित–अनुमोदना से किये हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल असत्य विरति व्रत का पालन करते हुए मिथ्योपदेश देने से, एकान्त में कही हुई बात को प्रगट कर देने से, झूठा लेख लिखने से तथा किसी भी चेष्टा से अभिप्राय समझ कर भेद प्रकट कर देने से एवं पर का धन अपहरण करने से जो दोष मन–वचन–काय एवं कृत–कारित–अनुमोदना से लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल चौर्य विरति व्रत के पालन करने में चोर द्वारा चुराया हुआ द्रव्य ग्रहण किया हो, राज्य के विरुद्ध कार्य किया हो, धरोहर हरण करने के भाव किये हों, तौलने के बाँट कमती या बढ़ती रखे हों और अधिक कीमती वस्तु में अल्प कीमती वस्तु मिलाकर बेची हो एवं मन, वचन, काय एवं कृत–कारित–अनुमोदना से, चोरी का प्रयोग बतलाने से जो दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल अब्रह्म विरति व्रत पालन करने में व्यभिचारिणी स्त्री के साथ आने–जाने का व्यवहार रखा हो, कुमारी, विधवा एवं सधवा आदि अपरिगृहीत स्त्रियों के साथ आने–जाने या लेन–देन का व्यवहार रखा हो, काम सेवन के अंगों को छोड़कर दूसरे अंगों से कुचेष्टाएँ की हों, काम के तीव्र वेग से वीभत्स विचार बने हों और मन, वचन, काय और कृत–कारित–अनुमोदना से अन्य के पुत्र–पुत्रियों का विवाह किया हो, इस प्रकार जो भी दोष लगे हों– **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल परिग्रह–परिमाण व्रत में मन, वचन, काय एवं कृत–कारित–अनुमोदना से जमीन और मकान आदि के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, गाय, बैल आदि धन, अनाज आदि धान्य, दासी–दास, चांदी–सोना, वस्त्र एवं

बर्तन आदि के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, तज्जन्य जो भी दोष लगे हों – **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्ड विरति व्रत – ये तीन गुणव्रत और भोग परिमाण व्रत,परिभोग परिमाणव्रत, अतिथिसंविभाग व्रत, समाधि मरणव्रत, ये चार शिक्षाव्रत रूप बारह व्रतों में जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

पाँच इन्द्रियों और मन को वश में न करने से जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मोह के वशीभूत होकर अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम् वस्त्र एवं स्त्रियों को आकर्षित करने वाला शरीर का शृंगार किया हो, राग के उद्रेक से युक्त हँसी में अशिष्ट वचनों का प्रयोग किया हो और परस्पर प्रीति से रहने वालों के बीच में द्वेष किया हो, तज्जन्य जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

तप और स्वाध्याय से हीन असम्बद्ध प्रलाप करने में, अन्यथा पढ़ने–पढ़ाने से एवं अन्यथा ग्रहण (सुनने) करने से जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका की किसी भी प्रकार से निन्दा की हो,कराई हो,सुनी हो,सुनाई हो इससे जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

साधुओं वा साधर्मियों से कटु वचन बोला हो एवं आहार दान देने में प्रमाद करने से जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

देव–शास्त्र–गुरु की अविनय एवं आसादना से जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

पाश्चात्य वेशभूषा का उपयोग कर, टी.वी. आदि देखकर एवं उपन्यास आदि पढ़कर शील में जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

उच्च कुलों को गर्हित कुल बनाने में कृत–कारित–अनुमोदना से सहयोग देने में जो पाप लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

चलने–फिरने, शरीर को हिलने–हिलाने, उठने–बैठाने, छींकने–खांसने, सोने, जम्हाई लेने और मार्ग चलने–चलाने में देखे, बिना देखे तथा जाने–अनजाने में जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

किसी भी जीव को मैंने दबा दिया हो, कुचल दिया हो, घुमा दिया हो, भयभीत कर दिया हो, त्रास दिया हो, वेदना पहुँचाई हो, छेदन–भेदन कर दिया हो अथवा अन्य किसी प्रकार से भी कष्ट पहुँचाया हो**–तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जाने–अनजाने में और जो दोष लगे हों **– तस्स मिच्छा मे दुक्कड़।**

**हा दुट्ठकयं हा दुट्ठचिंतियं, भासियं च हा दुट्ठं।**
**अन्तो अन्तो डज्झमि पच्छत्तावेण वेयंतो।।**

हाय–हाय! मैंने दुष्टकर्म किए, मैंने दुष्ट कर्मों का बार–बार चिन्तवन किया, मैंने दुष्ट मर्म–भेदक वचन कहे– इस प्रकार मन, वचन और काय की दुष्टता से मैंने अत्यन्त कुत्सित कर्म किये। उन कर्मों का अब मुझे पश्चात्ताप है।

हे प्रभु ! मेरा किसी भी जीव के प्रति राग नहीं है, द्वेष नहीं है, बैर नहीं है तथा क्रोध, मान, माया, लोभ नहीं है, अपितु सर्व जीवों के प्रति उत्तम क्षमा है।

हे प्रभु ! जब तक मोक्षपद की प्राप्ति न हो तब तक भव–भव में मुझे शास्त्रों के पठन–पाठन का अभ्यास, जिनेन्द्र पूजा, निरन्तर श्रेष्ठ पुरुषों की संगति,सच्चरित्र सम्पन्न पुरुषों के गुणों की चर्चा, दूसरों के दोष कहने में मौन, सभी प्राणियों के प्रति मैत्री और हितकारी वचन एवं आत्मकल्याण की भावना

(प्रतीति) ये सब वस्तुएँ प्राप्त होती रहें।

हे जिनेन्द्र देव ! मुझे जब तक मोक्ष की प्राप्ति न हो, तब तक आपके चरण मेरे हृदय में और मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे।

हे भगवन् ! मेरे दुःखों का क्षय हो, कर्मों का नाश हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो, शुभगति हो, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो, समाधिमरण हो और श्री जिनेन्द्र के गुणों की प्राप्ति हो – ऐसी मेरी भावना है, मेरी भावना है, ऐसी मेरी भावना है।

*इत्याशीर्वादः* (इसके बाद क्षमा वन्दना बोलें)

## आद्य वक्तव्य

इंसान जो कल था आज भी वही रहे तो समझो उसका आज व्यर्थ गया। आज कुछ विकास होना कल के पार जाने का मार्ग है, अतीत का अतिक्रमण करना है।

इंसान का अतीत उसकी पशुता है और भविष्य उसका परमात्म पद है; क्योंकि परमात्म पद के बिना मंदिर में प्रवेश संभव नहीं है, मनुष्य पशु से परमात्म की यात्रा का सेतु है उस पर चलकर संसार सागर पार करना है। इंसान का काम इंसानियत और 'विशद' धर्म है एवं सदाचरण इंसान की पूँजी है।

* * *